घरक खर्च

घरक खर्च

जगदीश प्रसाद मण्डल

पल्लवी प्रकाशन
बेरमा/निर्मली

GHARAK KHARCH (घरक खर्च)
Collection of Maithili Stories by Shri Jagdish Prasad Mandal

ISBN: 978-93-88811-60-6
दाम: 251/- (भा.रु.)

दोसर संस्करण: 2023 (पहिल संस्करण: 2020)

प्रकाशक: पल्लवी प्रकाशन
तुलसी भवन, जे.एल.नेहरू मार्ग, वार्ड नं.: 06, निर्मली
जिला- सुपौल, बिहार: 847452
मुद्रक: पल्लवी प्रकाशन (मानव आर्ट)

वेबसाइट: http://pallavipublication.blogspot.com
ई-मेल: pallavi.publication.nirmali@gmail.com
मोबाइल: 6200635563; 9931654742

फोण्ट सोर्स: https://fonts.google.com/,
https://github.com/virtualvinodh/aksharamukha-fonts
आवरण: श्रीमती पुनम मण्डल, निर्मली (सुपौल), बिहार: 847452
अक्षर संयोजन: डॉ. उमेश मण्डल

समर्पण

मिथिलाक वृन्दावनसँ लऽ कऽ बालुक
ढेरपर बैसल फुलवारी लगौनिहार
संगे नव विहान अननिहारकेँ

अनुक्रम:

नवका लोक

भोरगरे एक गोरे मोटर साइकिलसँ स्पीकर[1]क माध्यमसँ गाममे माने सुन्दरपुर गाममे, चारि फेरा लगा प्रचार केलक जे 'गाममे नवका लोक आएल अछि।'

प्रचार केलाक पछाइत प्रचार केनिहार तेना गुम्म भऽ गेल जे जे सुनलक से देखलक नहि। मुदा गाम तँ गुलगुलाइये गेल।

जहिना पहिनौं कहियो-काल हुराड़ गाममे आबि जाइ छल, जेकरा भगबैले जेरक-जेर बनि लोक ओकरा खेहारै छल तहिना जेरक-जेर धियो-पुतो आ सियानो-चेतन अपन-अपन जेर बना-बना 'नवका लोक'क भाँजक पाछू लगि गेला। अपन-अपन जेरक माने भेल जे जहिना क्रिकेट खेलेनिहारक जेर बनि गेल अछि, ताश खेलेनिहारक जेर बनि गेल अछि तहिना, केते कहब अनेको जेर गाममे बनियेँ गेल अछि।

ओना, जनार्दन काका सेहो आवाज सुनलैन मुदा अपन काजमे लगल रहने आवाजक शब्दकेँ बुझि नहि पेला। मनमे बुझैक तेते जिज्ञासो नहियेँ रहैन। किए तँ सभ दिन देखिये रहल छैथ जे चारि बजे भोरेसँ गामो-परोपट्टोक आ बाहरोक बेपारी सभ नव-नव वस्तु-जात लऽ बेचए गाम पहुँच लॉडस्पीकरसँ प्रचार कइये रहल अछि। अपना धुनिमे जनार्दन काका व्यस्त भेल अपन जीवनानुकूल काजमे लगल छला। साढ़े तीन बजे भोरमे उठि पहिने जेते दूरक

[1] *लॉडस्पीकर*

अपन कर्मक्षेत्र छैन, माने जेते दूरक बीच काज करै छैथ, तेते दूरक बिजली-बौल[2] जरबै छैथ। पछाइत अपन दैनिक नित्य कर्मसँ माने पर-पैखानासँ निवृत भऽ मुँह-हाथ धोइत चाह बना पीब, पान खा अपना मनकेँ अजमा काज दिस बढ़ै छैथ। तीनटा गाए पोसने छैथ, घर-बाहर नादि बनौने छैथ, समयानुकूल घर-बाहर बन्हैक हिसाब रखने छैथ। माने ई जे जहिना अपना ऐठाम तीनटा मौसम- जाड़, गरमी आ बरसात अछि तहिना हिसाब लगौने छैथ। पहिने बहराक नादिमे सानी-कुट्टी लगा, हाथ-पएर धोइ, गाए दूहब शुरू करै छैथ। आगूमे बान्हल गाएकेँ पहिने दूहि बाहर निकालि, दोसर गाएकेँ दूहैत तेसरकेँ दूहै छैथ।

गामक अधिकांश लोक सुनलक जे 'गाममे नवका लोक' आबि गेल अछि। मुदा जेकरा मुहेँ सुनलक, ने ओइ बजनिहारकेँ देखलक आ ने आब बाजिये रहल अछि। सजमनियाँ टोलमे भुल्ली दादीक एकचारीमे अल्लापुरवाली काकी, भौरवाली भौजी आ सिंहेसरी तीनू गोरे गप-सप्प करै छेली। अल्लापुरवाली काकी बजली-

"भोरमे जे 'नवका लोक' कहै छेलै से के छल?"

सोझमतिया अल्लापुरवाली काकी छथिए। भरि दिन धिया-पुताकेँ पुछिते रहै छैथ जे ऐ डिब्बामे आकि पुड़ियामे की छियौ..? सोझमतिया अल्लापुरवालीकेँ बुझि भौरवाली भौजी गप-सप्पक क्रममे अपना पक्षमे सदिकाल रखिते छैथ। तँए अल्लापुरवाली काकीकेँ बुझाएब ओते भारी नहियेँ बुझि रहली अछि मुदा गामक बेटी सिंहेसरीकेँ देखि जवाब दइसँ धखाए लगली। तेकर पछुलका किछु कारण अछि। ओ अछि जे जहिना परजीवीक सोभावसँ ग्रसित

---

[2] *प्रकाश*

भौरवाली भौजी तहिना स्वजीवीसँ गामक बेटी सिंहेसरी। जइसँ केता दिन दुनू गोरेमे रक्का-टोकी भऽ चुकल छेलैन।

आगू भऽ कऽ सिंहेसरी ऐ दुआरे नहि बाजए चाहि रहल छल जे काने तँ लोक बहुत सुनैए, नीको सुनैए, अधलो सुनैए। नीकोमे अधला सुनैए आ अधलोमे नीक सुनिते अछि। तँए अनका मुँहक बात बिनु थाहने अपना मुहेँ नहि बाजी।

बजनमा लोक भौरवाली भौजी छथिए। केतबो मुँहकेँ वर्जन केली मुदा बोल नहि मानलकैन। बजली-

"ललमनियाँ टोलमे सेहो एकटा नवका लोक आएल छै, तेकरे प्रचार भेल अछि।"

ओना, ललमनियाँ टोल सेहो सटले टोल अछि। मुदा सिंहेसरीकेँ से सुनल-बुझल नहि। सिंहेसरी बाजल-

"कहिया आएल?"

अपन मनक गढ़ल विचार भौरवाली भौजीक छेलैन तँए लगले पाछू केना हटितैथ। चीत-सँ-पट आकि पट-सँ-चीत हएब ओते असान सेहो नहियेँ अछि। अनेको खाढ़ी बीचमे सेहो अछिए। जेना चीत-सँ-पट होइक बीच चीतसँ कनी कम होइत पट दिस कनी बढ़ैत लियौन हएब अछि। तइसँ कनी बेसी भेने थोड़े लियौन फेर हएब अछि। जइसँ चीतसँ पट होइमे एक आ साएक बीच जेते दूरी अछि तेते तँ अछिए। कहब से केना? एकसँ लऽ कऽ निनानबे प्रतिशत बनले अछि, तहिना।

सिंहेसरीक प्रश्न सुनिते भौरवाली भौजीक मनक अहंमे चोट बुझि पड़लैन तँए मन तमतमा गेलैन। समूहक झगड़ामे ने कहियो-काल नीक विचार (बात) दबि जाइए आ झौहैर माने 'अधला विचार' अगुआ जाइए, मुदा दू गोरेक झगड़ामे तँ से नहि होइए। जहिना एक

गोरेकेँ एकटा मुँह दूटा हाथ-पएर अछि तहिना तँ दोसरोकेँ अछिए। भलेँ बलमे कनी कम कि बेसी किए ने होउ। एक मुँहक जवाब दोसर मुँहकेँ रोकनिहारो तँ बीचमे नहियेँ अछि। तहिना हाथो-पैरक अजमाइस सेहो अछिए। अपन अहंकेँ कनी संयमित करैत भौरवाली भौजी लचैत बजली-

“दिन पनरहेक सुनना भेल हएत। अपना आँखिये तँ नहि देखलौं, मुदा कानक सुनल तँ अछिए।”

तार्किक बुधि सिंहेसरीक अछिए तँए रंग-बिरंगक तर्क सभ मनमे उठए लगल। पहिल तर्क उठल जे हम कहुना छी तँ गामक बेटी छी, सौंसे गाम बहिन-बेटीक घुमैक अधिकार, माने ओहुना बिनु काजोक टहलै-बुलैक अधिकार हमरा अछिए, आ ई–भौरवाली भौजी–परिवारक सैयो फन्दामे घेराएल छैथ माने गाममे जे कियो बाहरी लोक आएल छैथ तइ बुझैमे कतौ भाइक संग भौजी बनि, केतौ चाचाक संग चाची बनि इत्यादि-इत्यादि घेरा तँ लगले छैन। दोसर तर्क सिंहेसरीक मनमे उठल जे पनरह दिन पहिलुका घटना छी आ अखन तक किए ने अपने सुनलौं?

..सिंहेसरी ई नहि बुझि पेब रहल छल जे सभ तरहक लेन-देनक कारोबारक अपन एजेंसी समाजमे बनले अछि। जइ माध्यमसँ विचारक धारा सेहो बहिते अछि। जहिना नीक काजक नीक विचारक एजेंसी अछि तहिना अधलाक सेहो अछिए। जेकर फलाफल भइये रहल अछि जे एक्के परिवारमे सबहक आँट-पेट एकरंग सेहो नहियेँ रहैए। सिंहेसरी बाजल-

“अहाँ केकरो मुहेँ सुनल बात बजै छी, आँखिक देखल तँ नहि। जेकरा मुहेँ सुनलौं जँ ओ झूठ बाजल हुअए तइ दोखक भागी अहाँ बनबै?”

चोट-पर-चोट पड़ने जहिना साँप उनटए-पुनटए लगैए तहिना भौरवाली भौजीक मन सेहो उनटए-पुनटए लगलैन। ओना, अपन जे दाव-रूआब भौरवाली भौजीक परिवारमे छैन ओ अपन परिवारक छिऐन, तइसँ अनका कोन मतलब अछि। एक तँ पहिनहिसँ भौरवाली भौजीक मनमे विषक निशा चढ़ले रहैन तैपर सिंहेसरी सन अदना लोकक मुँहक बात साधसँ बाहर भऽ गेलैन। बाहर हेबो केना ने करितैन? अखन तक समाजमे यएह ने रहल जे एक पक्षक, माने सत्ताधारी कहियौ कि अगुआएल पक्षक झूठो बोल आ अधलो काज नीक कहि दोसरपर लदले गेल अछि। जइसँ निशामे मतल नशेरी जकाँ समाजक लोक गुम्हराक संग ठकाइतो रहले अछि। जइसँ आँखिक सोझक नीक काज ओझल होइत रहल अछि आ कानक सुनल बात-ले लोक अपन-अपन कान ठाढ़ केनहि रहैए। समाजमे जे एते अन्धविश्वास पसरल अछि, की ओ एक दिनक आ एक समैयक उपज छी आकि परम्परासँ जुड़ैत सभ दिन आगू मुहेँ ससरैत आबि रहल अछि। ..भौरवाली भौजी बजली-

"केकर के दोखक भागी बनैए जे हम भागी बनबै।"

भौरवाली भौजीक बात सुनि सिंहेसरीक मनमे आएल जे ठीके लोक कहै छै जे 'कुत्ता आगिमे नइ पकैए। पकैए सुधवा-बुधवा गाए-महींस.!' अपने मनमे सिंहेसरीकेँ भेल जे अनेरे जे झूठ-फूसमे लागल छी तइसँ नीक जे किए ने ललमनियाँ टोलेपर जा कऽ देखिऐ जे नवका लोक केहेन अछि। सिंहेसरी मनमे विचारिये रहल छल कि जनार्दन काकाकेँ अबैत देखलक। नियमित रूपसँ जनार्दन काका भोर-साँझ, बीच गाममे बनल चौकपर जा गामोक आ परोपट्टोक हाल-चाल बुझिते छैथ। जइसँ बिसवासू समाचार भेटिये जाइ छैन। बिसवासू समाचार भेटैक कारण ई छैन जे गामक समाचार गौंआँक मुहेँ आ आन गामक समाचार ओइ गामक लोकक मुहेँ–माने

अनगौंआँक मुहेँ–सुनिते छैथ। गाड़ी-सवारीक सुविधा भेने एते तँ सुविधा भइये गेल अछि जे दस-गामक लोकक अवरजाही गाम सभमे भइये गेल अछि।

जनार्दन काकाकेँ देखि सिंहेसरी बाजल-

“काका, एकटा समाचार सुनलौं हेन, तेकरे भाँज लगबए हमहूँ ललमनियाँ जाएब। चलू अहींक संग चलै छी।”

सिंहेसरीक बात सुनि जनार्दन कक्काक अपनो मनमे खटकलैन जे जहिना अपने आवाज सुनलौं तहिना ने ते गामोक लोक सुनलक..! फेर अपने मनमे भेलैन जे अपने ने अपन काजक धुनिमे छेलौं तँए नीक जकाँ नहि सुनि पेलौं, मुदा गामक तँ सभ तेहने नहि अछि। कियो चारि बजे भोरेसँ सिपाहीक नोकरी पबै दुआरे सड़कपर दौड़ लगबैत रहैए तँ कियो व्यायाम करैक मादे दौड़ लगबैए, ओहन सभ तँ सुननहि नहि देखनौं हएत। भरिसक सएह छी। फेर अपने मनमे उठलैन जे तइले ललमनियाँ जाइक कोन खगता भेल। जनार्दन काका बजला-

“भोरे-भोर आन टोल जाइक खगता की भेलौ सिंहेसरी?”

जनार्दन कक्काक बात सुनि सिंहेसरीक मनमे भेल जे अपन संगी बुझि जनार्दन काका पुछि रहला अछि। तँए संगपनकेँ निमाहैत सिंहेसरी बाजल-

“काका, गामक लोक अनेरो झूठ-मूठ विचारमे भरि दिन अपनो गमबैए आ अनको परेशान करैए।”

सिंहेसरीक विचार सुनि जनार्दन कक्काक मनमे ठहकलैन जे सिंहेसरी अपन बेकतीगत विचार नहि समूहक विचारक चर्च केलक अछि, अपनो तँ समूहसँ जुड़ले छी, तँए अपनो भार तँ भेबे कएल। मुदा कोनो भार लइ या दइसँ पहिने ओइ बेकतीक विचार बुझब सेहो

आवश्यक अछिए। जँ से नहि हएत तँ होमगार्डक सिपाही जकाँ अपने बन्दूकसँ अपने खून हएत। तइले ते जरूरी अछि किने जे ओहन विचार जे बेकतीसँ ऊपर उठि समूहक अछि ओकरा तह-दर-तह अगर नहि बुझि लेब तँ जहिना भगवान बुद्ध कहने छैथ जे सूइयाक छेदो बरबैर जँ कनियोँ रेह कोनो विचारमे रहि गेल तँ ओइ रेह होइत बड़का-बड़का हाथी सेहो असानीसँ टपि जाइए। समाजोक रेह कि ओइसँ कम अछि..! जनार्दन काका बजला-

"की झूठ-मूठ विचार सिंहेसरी?"

जेना पीच्छर खलीफा अखराहापर अपन जोरक खलीफासँ सलामी लइते बाँहि पकड़ने पेटमे ढूकि धोबिया पाट मारि दइए तेना सिंहेसरी नहि केलकैन। नहि करैक दुनू कारण छेलइ। पहिल अपन जीवनक विचार-बेवहारक संग चालियो-ढालि ओहन नहि छेलइ.! दोसर, जनार्दन काकाकेँ गामक श्रेष्ठ विचारवान सिंहेसरी मानियेँ रहल छैन। सिंहेसरी बाजल-

"काका, अखन अहाँकेँ नहि कहब?"

सिंहेसरीक बात सुनि जनार्दन कक्काक जिज्ञासा आरो तेज भेलैन। जइसँ मनमे दुनू रंगक विचार चलए लगलैन। पहिल ई जे समाजमे एहेन चलैन अखनो अछि जे कोनो दुखद समाचार लोक जल्दवाजीमे नहि बाजए चाहैए। तहिना छोट-बच्चा कहियौ आकि गुरुजन सेहो नीक फल–जीवनक नीक फल–जल्दवाजीमे जीवनदाताकेँ नहि कहए चाहै छैथ। मुदा एते तँ इशारा दइये दइ छैथ जे पहिने मिठाइ खुआउ आकि किछु कबुला करू तखन कहब...। अग-दिगमे जनार्दन काका पड़ि गेला। ओना, मनमे ई खुशी जगिये गेल छेलैन जे जँ अपन समकक्ष परिवार बनि जाए तँ ओइ परिवारकेँ आगू मुहेँ ससरैसँ कियो नहि रोकि सकैए। अगर जँ सामूहिक रूपेँ

परिवार नहियोँ हुअए आ जँ एकोटा समकक्ष समांग भेट जाए तँ केहनो-केहनो वैतरणी लोक टपिये सकैए।

ओना, अपन सभक पूर्वज दार्शनिक–देखनिहार–स्पष्ट शब्दमे लिखितमे कहने छथिए जे एकाग्रताक पाँचम सीढ़ीपर असगरूआ जीवनकेँ आनि आनसँ आनन्दित जीवन-यापन करैक बाट कहबे टा नहि, करि कऽ देखाइयो देनहि छैथ। जेना संयासीक जीवन छैन जे दुनियाँक तड़ी-घटी बुझि-देखि संयास भऽ जाइ छैथ। संयासीक माने एतबे नहि जे घर-परिवार, दुनियाँ-जहान छोड़ि असगरे कोनो पहाड़क कंदरामे जा बसब छी। सन्यासक माने ईहो तँ छीहे जे अपना संग परिवार-समाजकेँ सेहो कन्हापर उठा हनुमानजी जकाँ सुमेर पर्वत कन्हापर उठा दौड़ैत चलला, तहिना दौड़ैत चली...।

जनार्दन काका बजला-

“किछु कबुला करा कऽ मनक बात कहमेँ आकि ओहिना कहमेँ। अखन भलेँ नहियेँ कहमेँ तँ नहि कह मुदा समैयक तँ ठेकान कहि देमेँ किने जे फल्लाँ दिन कि फल्लाँ समय कहब।”

जनार्दन कक्काक विचार सुनि सिंहेसरी अपन मनक मथानमे विचारकेँ मथि-मथि मथन करए लागल। मथन ई करए लागल जे बेकतीगत विचारे वा काजे, बेकतीगत जीवनसँ जुड़ल रहैए तँए आनकेँ बुझबो आवश्यक नहियेँ अछि मुदा जे विचारे वा काजे गाम-समाजसँ जुड़ल अछि माने समूहसँ जुड़ल अछि ओ छिपाएबो तँ उचित नहियेँ अछि। जँ ओ छिपाएल जाएत तँ केतौ-ने-केतौ भूमगोल फुटबे करत। जखने भूमगोल फुटत तखने अपनो मन ने पछताइत कहत जे जँ समयपर विचारकेँ प्रकट कए देतौं तँ एहेन घटना नहि होइत।..सिंहेसरीक मन मानि गेल जे जनार्दन काकाकेँ सभ बात कहि देब बेसी नीक हएत। फेर अपने मन विचार देलकै जे

भौरवाली भौजीक विचार नहि कहबैन। माने जेना-जेना भौरवाली भौजीक संग गप-सप्प भेल छेलइ। सिंहेसरी बाजल-

"काका, अहाँसँ की कबुला कराएब। अहाँ तँ अपने अपन सभ किछु कबुल देने छिऐ। तैबीचमे एकटा छोट-छीन विचार हमरो अछि।"

सिंहेसरीक विचार सुनि जनार्दन कक्काक मनमे तृप्ति भेलैन वा मन तिरपित भेलैन। तृप्ति वा तिरपित होइक कारण भेलैन जे सिंहेसरीक उमेरे की भेल अछि, माने दुनियेँ की देखलक अछि, तखन जँ हमरा देखि लेलक, ईहो तँ साधारण नहियेँ भेल। किए तँ जँ एक्को आदमीकेँ इमानदारीसँ पढ़ि वा देखि वा गुणकेँ गुणि लेब तँ हजारो-लाखो-करोड़ो आदमीक जीवन यात्रा असानीसँ देखि गुणि सकै छी। जनार्दन काका बजला-

"की छोट-छीन विचार सिंहेसरी?"

जेना कोनो विद्यार्थीकेँ, बच्चाकेँ परीक्षाक फार्म भरै-काल वा नाम लिखबै-काल वा किताब कीनै-काल अभिभावकक मन-माफित सहयोग भेटने मनमे खुशी उपकैए तहिना सिंहेसरीकेँ सेहो भेल। हलसैत सिंहेसरी बाजल-

"काका, भोरसँ केता बेर सुनलौं हेन जे गाममे 'एकटा नवका' लोक आएल अछि।"

ओना, अड़ोसिया-पड़ोसियाक गुनगुनाहटसँ जनार्दन काका मने-मन आँकि नेने छला जे गाममे किछु नव जरूर भेल अछि। मुदा अपन असथिर मन विचार दइते छैन जे गामो तँ गाम छी जे समुद्रोसँ बेसी गहींर अछि आ पहाड़ोसँ ऊपर पहाड़ अछिए। मुदा जे अछि जेतए अछि से तेतए रहउ। अखन जैठाम, जइ धरतीपर ठाढ़ छी मात्र तही सीमामे गप-सप्प करब उचित हएत। मुदा अपने मनमे

लगले ईहो उठलैन जे चौहद्दी-सीमा भलेँ ओकर देखार अछि मुदा तर-ऊपरक तँ झँपाइले अछि। तेकरा की करब? असमंजसमे पड़ल जनार्दन काका बजला-

“सिंहेसरी, चारि बजे भोरसँ चारि बजे साँझ धरि तँ अपने गाम टाक नहि आनो-आन गामक संग नव-नव, आन-आन राज्योक आ आन-आन समाजोक लोक, नव-नव वस्तु-जात लऽ कऽ बेचैले अबिते छैथ तखन कोन एहेन बात भेल?”

ओना, जनार्दन कक्काक मनमे ईहो उठले रहैन जे नवपने ने जीवन छी। जँ प्रतिदिन किछु नवपनक दर्शन होइए तँ वएह ने ओइ जीवनक गतिशीलता कहियौ कि सार्थकता भेल। मुदा एहेन विचार बुझै-जोकर सिंहेसरी अखन थोड़े भेल अछि। अखन तँ ओ ओहन अछि जेकरा बहलबैत किछु देखाएब–दर्शन कराएब–अछि। तँए बाहरक बेपारीक चर्च केलैन।

सिंहेसरीक मनमे नवका लोकक प्रति जेते खीस नहि छल तइसँ बेसी भौरवाली भौजीक झूठ बाजबपर छल। भाय, राजा-रजबारक जुग नहि ने छी जे झूठ-फूस बाजि जनता-जनार्दनकेँ ललकारा भरैत रहब आ पाछूसँ खून चुसैत रहब आ हारल-मारल जनार्दन आदेशकेँ शिरोधार्य करैत चलत। तमतमाएल सिंहेसरी बाजल-

“काका, हमहूँ रगड़ी माइक बेटी छी, बिना रगड़ने ने छोड़बैन।”

सिंहेसरीक तमतमाएल मनकेँ एक्केबेर रोकब जनार्दन काका उचित नहि बुझि विचारलैन जे जहिना बच्चा कोनो वस्तुपर जिद्द पकैड़ लइए, तखन तँ माए वएह ने करै छैथ जे रंग-रंगक खिस्सा-पिहानी, रंग-रंगक गीत-नादसँ ओइ बच्चाक मन मोहि अपना जिद्दकेँ

बिसरा दइ छैथ आ नव-नव खेलौनाक संग पुन: ओइ बच्चाकेँ खेलैले छोड़ि दइते छैथ। तहिना सिंहेसरीक विचारकेँ गँचियबैत, माने लचबैत जनार्दन काका बजला-

"सिंहेसरी, रग्गड़ीए ने जीवनक जंजालकेँ रगैड़ कऽ नीक बनौत, आकि सभ बुते हएत।"

ओना, जनार्दन कक्काक मुँहक बात सिंहेसरी नीक जकाँ सुनलक तँ मुदा भौरवाली भौजीक विचारक तमतमाएल मन रहने नीक जकाँ नहि बुझि पौलक। जखन दू गोरेक बीच उतरा-चौरी होइए तखन तँ बातक प्रवाह चलैए नहि कि विचारक। विचारक प्रवाहमे तोड़े-जोड़टा नहि होइए बल्कि उनटो-फेरि प्रत्योत्तर होइते अछि। सिंहेसरी बाजल-

"काका, जहिना माए हमर केतेकोकेँ रग्गड़पन छोड़ौलक तहिना हमहूँ ओकरे बेटी छी।"

सिंहेसरीक बोलीकेँ जनार्दन काका आँकि लेलैन जे अखन सिंहेसरीक मन कोनो मोरचा खोजि रहल अछि। ..एकाएक जनार्दन कक्काक मन ओइठाम पहुँचलैन जैठाम हजारो मोरचा पड़ल अछि। जीवनक जैठाम हजारो समस्या अछि, जइ सबहक अपन-अपन महत्त सेहो छइहे, तैठाम एक बून पानिसँ समुद्र केते भरत। एकर माने ई नहि जे बूनक महत्त नहि अछि। बूने समुद्र आ समुद्रो तँ बुनो ने छी। ..एकाएक जनार्दन कक्काक मनमे एलैन जे एहेन रग्गड़ीकेँ एकाएक, माने आगूमे ठाढ़ भऽ कऽ नहि रोकल जा सकैए मुदा छिन्ना काटि समगम तँ बनौले जा सकैए। तैसंग ईहो विचार मनमे जगलैन जे केहनो भारी काजे वा विचारे किए ने हुअए मुदा जँ ओकरा बारीकीसँ देखि-पकैड़ बारीक बना, माने बारीकीसँ बारीक बना चलबो तँ एकटा रस्ता भेबे कएल। किए ने सिंहेसरीकेँ तही

रस्तापर आनि आगू मुहेँ ठेलि दिऐ..! जनार्दन काका बजला-

“सिंहेसरी, जहिना तूँ हमरा काका बुझै छेँ तहिना ने हमरो बुझि पड़ैए जे सिंहेसरी अपन भतीजी छी। तँए बाल-बोधकेँ एहेन विचार नइ ने दिऐ जे अज्ञानमे हेरा-वौड़ा जाए। तँए पहिने अपन मनक बात कहमेँ तखन ने हमहूँ ओइ अनुकूल तोरा किछु कहबौ।”

जनार्दन कक्काक विचारकेँ सिंहेसरी अकानि लेलक। जइसँ भौरवाली भौजीक विचार मनमे तड़ियाए लगलै आ जनार्दन कक्काक विचार उपरिया गेलइ। बाजल-

“काका, अखन ललमनियाँ जाइ छी, एकटा झूठ बातकेँ नेँगरियाबह।”

सिंहेसरीक बात सुनि जहिना जनार्दन कक्काक एक दिस विचार ठमकलैन तहिना दोसर दिस जिद्दपनोक महत्त मनमे उठलैन। मुदा ओ, माने असीम जिद्द ओहन परिस्थितमे उपयोग होइए, जखन परिस्थिति विषम रहल। अखन तँ से नहि अछि, सिंहेसरी घरसँ निकलबे कएल अछि। ओना, अखन जँ कहबै जे अनेरे झूठ-फूसकेँ नेँगरियाबैक भाँजमे पड़ैक माने भेल अमूल्य काजक समय नष्ट करब। तैठाम अखन अपन-अपन बुधिक अनुकूल सेहो बुधिक सीमा अछिए। जखने कियो सीमा पकड़ने रहैए तखने ने ओकरा मुँहक बोलमे दम अबै छै। भलेँ ओकरा नकारि किए ने कहल जाए जे अपन सीमामे कुत्तो बताह होइए। सिंहेसरीक रस्तामे मोड़ दैत जनार्दन काका बजला-

“ललमनियाँक काज अपनो अछि, मुदा अखन चौक परक नियमित समय अछि, तँए अखन चौकपर जाएब जरूरी भेल। तेकर पछातिक समय भेल ललमनियाँ चलबाक।”

ओना, बेठेकान गोला जनार्दन काका आमक गाछपर फेकने

छला मुदा संजोग बनल जे एकटा पाकल आममे लागि गेल जइसँ ओकरा तोड़ने संगे नेने गोला चलि आएल। जनार्दन कक्काक मनमे अपन विचरण अनुकूल विचार छेलैन आ सिंहेसरीक मनमे अपन अनुकूल विचड़न छल। सिंहेसरीक मन ऐठाम आबि अँटैक गेल जे जहिना मुहाँ-मुहीं रग्गड़ भौरवाली भौजीक संग भेल छल तहिना फेर काल्हियो हएत। किए तँ काल्हियो असगरे रही, आइयो सएह छी। तखन फेर की करब..! तइसँ नीक ने हएत जे भने जनार्दन काका संगमे रहता। जइसँ ओहन पकिया गवाही भइये जेता, जे वकीलक ऐठाम सिखौलसँ बेसी सक्कत हेबे करत। गवाही बुझू कि गामक तेहल्ला, विचारमे भारीपन एबे करत..! यएह सोचि सिंहेसरी बाजल-

"काका, अहाँक विचार कटैबला थोड़े अछि जे काटब। अहीं सबहक ने हमहूँ सभ बेटी छी। जाबे ऐ समाजमे छी ताबे अहाँक बेटी छी आ जखन दोसर समाजमे जाएब तखन 'बेटी' थोड़े रहब, 'पुतोहु' भऽ जाएब किने।"

सिंहेसरीक विचार सुनि जनार्दन काका मने-मन विचारि लेलैन जे अखन चौकपर जाएब आ जखन घर दिस विदा हएब तखन हाटक काजसँ दीप चलि जाएब। दीपक हाट भोरुए पहरमे लगैए, पछाइत बुझल जेतइ। समय घुसकने लोकक बुइधो-विचार ने घुसकै छै। सिंहेसरीक घुसकैत विचारकेँ जनार्दन काका अपना दिस खिंचैत बजला-

"सिंहेसरी, गाम-घरक एकटा बात सुनल-बुझल छौ?"

जीवन-शैलीक परीक्षा हुअए वा जीवन-कर्मक, जेकरा ओ लूरि छै, माने ओइ जीवनक वा ओइ काजक लूरि, जँ हाथमे आबि गेल छै तँ वएह ने अमरफलक गाछ रोपि अमरफल खाइक हकदार भऽ सकैए।

सिंहेसरी मुड़ी डोलबैत बाजल- “नइ नइ काका, नइ-नइ।”

अखन तक जइ रूपेँ जनार्दन काका सिंहेसरीकेँ अँकलैन तइ रूपमे सिंहेसरी सक्षम बुझि पड़लैन। अपन अनुकूलता बनबैत जनार्दन काका बजला-

“जे बात वा वातावरण समाजमे सभ दिनसँ चलैत आबि रहल अछि आ अखनो...।”

‘अखनो’ कहि जनार्दन काका अपन मनक मुँह ऐ दुआरे बन्न कऽ लेलैन जे सिंहेसरीक आँक अँकैक विचार अगुआ कऽ जागि गेलैन। आँक आँकब भेल जे जइ धरतीपर, माने जइ विषयपर गप-सप्प अखन कऽ रहल छी तैपर नजैर अँटकल अछि वा केतौ राग-रागिनीक रागमे रगिया-झगिया गेल अछि। भूखल बटोही वा यात्रीकेँ जहिना खाइक भोज्य पदार्थ देखिते मन लपकए चाहैए तहिना लपकैत सिंहेसरी बाजल-

“अहीं सन-सन बाप-पित्ती ने बेटी-भतीजीकेँ बोधक चहरा मुँहमे देता।”

सिंहेसरीक गम्भीर होइत रूप देखि जनार्दन काका बजला-

“बुच्ची, एकटा कह ते, अन्धबिसवास केकरा कहै छै?”

जनार्दन काका विचारक प्रवाहमे निर्मल-निश्चल सिंहेसरीक बुधि बिचड़ए लगल। बाजल-

“आँखि मुनि बिसवास करब।”

ओना, अपना जनैत सिंहेसरी अपन पूर्ण विचार बाजि गेल मुदा जनार्दन कक्काक मन शंकालु हुअ लगलैन जे अनकर बात तँ छी नहि, अपन बात छी तँए अपने मुहेँ बजै छी, बच्चेसँ सीताराम आ राधेश्याम भजैत एलौं हेन मुदा ने अखन तक सीतारामक भाँज पेलौं

आ ने राधेश्यामक।

अपने मन जनार्दन काकाकेँ गवाही देलकैन जे सिंहेसरी अखन तक अन्धविश्वासक मात्र शब्द-रूपटा कैँ बुझैए। ओकर बेवहारिक पक्षकेँ, माने अन्धविश्वासक चलनसारिक की रूप अछि से सिंहेसरी नहि बुझि रहल अछि। दुनियाँक मंचपर हजारो बेर देव-दानवक बीच लड़ाइ भेल अछि, मुदा ने अखन तक देवे पाछू हटला अछि आ ने दानवे। मुदा जँ से सभ बुझबए लगबै तँ अनेरे प्रह्लाद जकाँ गर्भज्ञाने बुझि जाएत। अखन जइ धरतीपर ठाढ़ छी बस तेतबे टाक ने अपन आँगन भेल। ओहीमे सीमक गाछ रोपी आकि सजमैनिक..। जनार्दन काका बजला-

“बुच्ची, अन्धबिसवास आँखिक खेल छी। जाबे नइ देखब ताबे अन्धबिसवास भेल, जखन ओकरा देखि लेब तखन ओ मेटा गेल।”

जनार्दन कक्काक विचार सिंहेसरीक मनमे नीक जकाँ गड़ल। बाजल-

“हँ काका, बेस बात बुझा देलौं.!”

सिंहेसरीक मनक लबान देखि जनार्दन काका बजला-

“बुच्ची, ऐ सभ भाँजमे नहि पड़ह। शास्त्रे-पुराण दोहरी चालि देने अछि। सत्त कि झूठ, अपना मनसँ आँकह। अपन मन जँ स्थायी कल्याणकारी बुझि पड़ह ते ओकरा सत्त मानि लएह आ जे गप-सप्पक बीचक अछि ओकरा गपे-सप्पमे रहए दहक।”

सिंहेसरी बाजल-

“भने काका अहाँ सभ बात बुझा देलौं। आब एहेन-एहेन पुरबा-पछबाक पाछू नइ पड़ब।”

सिंहेसरीक बात सुनि जनार्दन काका अपन जीवनक बात बुझबैत बजला-

“बुच्ची, अपन बाँहि-बलसँ अपन जीवन समहारैत दोसरोक जीवन समहारब दुनियाँक सभसँ पैघ विचार भेल। जो तोहूँ अपन जिनगीकेँ ताक गे आ हमहूँ गामक हवा-पानि लगौने अबै छी।”

❑

शब्द संख्या : 3215, तिथि : 06 दिसम्बर 2020

काजक उत्तर काज

जेठ मास। दस बजे मधुबनीसँ जनदार काका आएले रहैथ। लोटामे पानि आ ताड़क छाजाक पंखा नेने मनदोदरी काकी दरबज्जापर पहुँचली। अपन आगत-भागत देखि जनदार कक्काक मनमे खुशी एलैन। आँखि उठा जखन पत्नीपर देलखिन तखन बुझि पड़लैन जे अपन जे आगत-भागतक खुशी अछि तइसँ बेसी हुनका, माने पत्नीकेँ अपने मनमे छैन। पत्नीकेँ विशेष खुशी देखि जनदार कक्काक मनमे शंका जगलैन। शंका ई जगलैन जे पति बुझि आगत-भागत कऽ रहली अछि आकि अपना मनमे जे कोनो खुशी छैन ओइ खुशीमे कऽ रहली अछि..? ओना, शंका उठिते अपने मन चनैक उठलैन। चनैकते पत्नीक पैछला दिनक बेवहारपर गेलैन। तइ अनुकूल जनदार काकाकेँ उचित बुझि पड़लैन। ओना, अहूसँ बेसी उचित होइतैन जे जहिना मनदोदरी काकी जनदार काकाकेँ मुँह मिठौलकैन तहिना जनदार काका सेहो मीठा दइतऽथिन..! जनदार काका बजला-

"जइ काजे मधुबनी गेल छेलौं से भऽ गेल।"

मनदोदरी काकी बजली-

"केते आमदनी भेल?"

जनदार काका बजला-

"आमदनी की भेल कपार.! जेतबो अपन डोराडोरि ढील भेल तेकर अदहो ने भेल..!"

पतिकेँ जेना हारल सन मनदोदरी काकीकेँ बुझि पड़लैन। मुदा अदहो आमदनी तँ भेलैन। कमसँ कम एते तँ भेल जे समयपर किछु हाथ आएल। मनदोदरी काकी बजली-

“जखन बेसी नोकसाने[3] भेल तखन ऐ पाछू पड़बे किए केलौं।”

अपन कएल काजकेँ पत्नीक मुहसँ कम आँक देखि जनदार काका बजला-

“कोनो कि अपन नफ्फाक आमदनी दुआरे ऐ काजमे पड़लौं आकि आनो-आनकेँ करि कऽ देखबैक छल जे पतालक पानि अनैमे केते भीर पड़ै छै।”

भागीरथ जकाँ गंगाकेँ धरतीपर उतारब ओते भारी तपस्या नहि अछि जेते भारी तपक तपस्याक जरूरत अछि। जे फरिया सकैथ जे गंगासँ मुइलहाक उद्धार होइए आकि जीतहाक। कहब जे पतालक पानि तँ कूपो खुनि, इनारो खुनि, चापाकलो गाड़ि ऊपर आनि सकै छी, मुदा भागीरथ तँ अकाससँ गंगा अनने छला? तेकरो तँ उत्तर अछिए जे बरखो पानि तँ गंगाजले ने छी। जखन अकास फाटि बरसैए तखन धरतीपर नदी रूपमे प्रवाहित होइए। आ जखन से नहि होइए तखन जलधार रूपमे अकाससँ धरतीपर टिहरी झरनाक जलधार खसैए, तहिना ने भागिरथोकेँ भेल हेतैन...। भरि मन पानि पीब जनदार काका बजला-

“गामक की हाल-चाल अछि?”

फुटल थारी जकाँ मनदोदरी काकी झनैक बजली-

“परसुए तँ अहाँ गामसँ गेलौं आ दुइये दिनमे की भऽ जाएत

---

[3] *आर्थिक*

जे हाल-चाल कहब।”

पत्नीक बात सुनि जनदार कक्काक मनमे दुनू बात उठलैन। पहिल उठलैन ई जे जैठाम क्षणमे तँ क्षणाक होइए तैठाम ‘दू दिन’ तँ बहुत भेल..! दोसर दिस ईहो विचार उठलैन जे समैयक जे प्रवाह अछि, माने चौबीस घन्टाक दिन-रातिक, ओइमे गति पैदा करैत संचालित होइमे दू दिन, माने अड़तालीस घन्टा तँ किछु ने भेल। ऐठाम तँ जुग-जुगक गति अछि..! अपन मनक विचार मनेमे रखि जनदार काका बजला-

“ऐ बेर जहिना आम फड़ल अछि तहिना बिआहक लगनो फड़ल अछि। बुझि पड़ैए जे नेंगरो-लूल्हाक पार-घाट ऐबेर लागि जेतइ।”

‘बिआहक लगन’ सुनिते मनदोदरी काकीकेँ बिसरल बात मोन पड़लैन। चौंकैत बजली-

“नेंगरा-लूल्हाक बिआह तँ मनमे नचैए आ अपन जे भार अछि तैपर धियाने ने जाइए.!”

मनदोदरी काकी ऐ टोनमे बाजल छेली जे नौत-लियौनक जानकारी पतिकेँ पहिनेसँ छैन, हम अखन तगेदा सरूप बाजि रहल छी। तँए मकानक नींव जकाँ फुटल-फाटल वस्तु रखि बुनियाद ठाढ़ करए चाहली मुदा बुझल बात रहितैन तखन ने जनदार काका किछु सोचल-विचारल बात बजितैथ से तँ रहैन नहि, तँए अलाहे-मलाह जकाँ बजला-

“धियान कि अपनेटा पर अछि आकि गामो-समाजपर अछि। जँ लोक अपने टा बेटाक बरियाती पूरत तँ जीवनमे केते पूरत। मुदा समाज तँ ओहन अछिए जे केतबो छँटैया करबै, माने बरियातीक, तैयो दस-बीसटा सालमे पुरइ पड़त।”

पतिक विचार सुनि मनदोदरी काकी अपने सोचली जे भरिसक अपन नौत-लियौनक जानकारी नहि छैन तँए एना बजै छैथ। अपना मनक यादास्तपर जखन जोर दऽ सोचली तखन अपने मन कहलकैन जे ई समाचार तँ काने-कान अछि। पाँचम दिन मोबाइलसँ जानकारी भेल जे अखन तक हिनका लग, माने पति लग तँ बाजल नहि छेलौं। समाजमे अखनो किछु काज एहेन अछि जे बुझल रहलाक बादो निर्धारित समयसँ पहिने नहि बाजल जाइए। बिआह वा आन कोनो एहेन काज जइमे परिवारक संग समाज, माने गामक समाज आ अपन समाजक संग आनो समाजक भागीदारी बनैए, ओहन जे काज अछि, तइमे किछु एहेन अछि जे निर्धारित समयसँ पहिने खुशीसँ बाजल जाइते अछि जे नीक भोज हेबा चाही, तीन दिन पहिनहिसँ जमाइन फाँकि कऽ रहब। इत्यादि...। तँए कहब जे एहेन भोज नहि अछि जेकरा अपन सम्बन्धानुकूल लोक छोड़ितो अछि। सेहो अछिए। खाएर जे अछि, जेतए अछि से तेतए रहअ तइसँ जनदार काकाकेँ कोन मतलब छैन। किए अनेरे मनुक्खक दंडनीति सीखए जेता जे ‘हकार दंडनीति’ केना ‘मकार नीति’ भेल आ ‘मकार नीति’ केना ‘दुतकार नीति’ भेल। अपन जीवन छैन अपन परिवार छैन अपन नून-रोटीमे लगल रहै छैथ आ कबीर बाबाकेँ भजैत रहै छैथ जे पोथी-पतरामे किछु ने जहिना अछि तहिना भक्ति-भजनमे सेहो नहियेँ अछि। तखन अछि केतए तँ ओ अछि अपन रोजी-रोटीमे। न्याय-अन्याय सभ किछु अहीमे अछि।

अपनाकेँ संयमित, संयमितक माने ई जे अपन भूल सुधार, माने बिनु जनकारकेँ जानकार अपना मने मानि लेब, करैत मनदोदरी काकी बजली-

“समधिऔरसँ नौत-लियौन पूरा परिवारकेँ भेल अछि। तहूमे खर्च हेबे करत, तँए औझुका आमदनीकेँ ओही-ले रखि लिअ।”

ओना, जनदार काकाकेँ औझुका आमदनीपर मन जेतेक खुशी नहि छेलैन तइसँ बेसी खुशी अपन संकल्पकेँ पूर भेलासँ छेलैन। पत्नीक बात सुनि जनदार कक्काक मन चौंक उठलैन। चौंक ई उठलैन जे अपना तँ दुइयेटा समैघ छैथ, बेटा-बेटीक ससुर, तइ बीचक तँ कोनो काज-उदम नहियेँ छी, जँ रहैत तँ समधौआ-घानी भेटल रहैत, तखन तेसर कोन समधिऔर भेल..? जनदार काका बजला-

“केहेन समधिऔरसँ नौत-लियौन भेल अछि?”

महजालक पाँचम गीरह खोलैत मनदोदरी काकी बजली-

“अपने, माने हमर पिसियौत बहिनक मसियौतक बेटीक बिआह छिऐ किने, तहीमे नौत-लियौन भेल।”

पत्नीक बात सुनि जनदार कक्काक मनमे झनाक-दे लगलैन। झनाक-दे ई लगलैन जे अपन बाप-माएकेँ बेटा-बेटी अपन बदला नोकर रखि सेवा-टहल कऽ रहल अछि आ अपने अपनो सेवा-टहल छोड़ि जँ पसार पसारब से पार लागत। जेकरा कम घराड़ी छै ओकर कैबलती तँ ओहीमे ने छै जे जेतबे अछि तेतबेमे ठाढ़ भऽ चली। मुदा लगले जनदार काकाकेँ अपने मन रोकैत कहलकैन, परिवारक एते नमहर लत्ती भेल केना जे आइ अपन अनुकूल, माने बराबरी-जोकर भेल..? पत्नीसँ पुछला-

“पिसियौतक मसियौत तँ बहुत दूर भेल, तहूमे बेवहारिक रूपमे अखन तक सम्बन्ध नहि रहल, तैठामसँ केना नौत-लियौन भेल?”

आने स्त्रीगण जकाँ मनदोदरी काकी बजली-

“से नइ बुझलिऐ, सभकियो एकेठाम रहि संगी-साथी बनल अछि।”

मनदोदरी काकीक मुखौटी सम्बन्ध जनदार काकाकेँ आरो बेदम करए लगलैन। सभकियो, के सभ भेला। यएह ने केसब माधव भेला आ माधव गिरिधर। तरे-तर जनदार कक्काक मन घिच्चम-तीर हुअ लगलैन। एक दिस देखैथ जे पाइक तरस अपनो आ समाजोमे एतेक बढ़ि गेल अछि जे जेरक-जेर लोक निहत्था बनि सड़कपर वौआ रहल अछि आ दोसर दिस अपन खर्चक लत्ती दिस तकैथ तँ देखैथ जे हलैस मन बिलैट रहल अछि। वाह रे सोचैक-बुझैक बलिहारी..! मुदा लगले जनदार काका हिम्मत बान्हि निर्णय केलैन जे जखन जेहेन समय औत तखन तेहेन बुझल जेतइ। हनुमानजी अपना कन्हापर पहाड़ो उठबै छला आ अपन समूहक बीच, माने बानरक बीच पठन-पाठन सेहो करिते छला किने। जे पछाइत वीरोमे महावीर भेला। जे अपन एकटा पद्धति, हनुमन पद्धति, समाजकेँ सेहो देलैन। जइसँ जीवनो दर्शन करौलैन आ जीवन दर्शन तँ सहजे देबे केलैन...।

जेही टोनमे मनदोदरी काकी बाजल छेली, माने नइ बुझलिऐ, तेही टोनमे जनदार काका बजला-

“जँ बुझितौं तँ दोहराकऽ बजैक खगता होइत। ओ तँ छोटका रोग जकाँ एक्के खोराक दबाइमे ठीक भऽ गेल रहैत।”

मनदोदरी काकी बजली-

“जहिना शुरूमे अपना ऐठामक लोक ढाका-बंगाल जाइ छला तहिना मोरंग-असामक पछाइत पंजाब जाए लगला, तेकर पछाइत जहिना दिल्ली भेल तहिना अखन बंगलोर भऽ गेल अछि।”

पत्नीक मुँहक इतिहास सुनि व्यंग्य करैत जनदार काका बजला-

“कोन गुरुजीसँ एहेन इतिहास पढ़ने छी।”

अपन विचारकेँ तर पड़ैत देखि मनदोदरी काकी अपनाकेँ समहारैत बजली-

“इतिहास-पुराण अहिना अबैत जाइत रहत, तइ पाछू पड़ब से पार लागत। अखन जे आगूमे अछि तेतबे देखब ने नीक हएत।”

वैचारिक रास्ता दिस सहटैत पत्नीकेँ देखि जनदार काका बजला-

“सुनू, नव जगहक चर्च अहाँ केलौं हेन, माने पिसियौतक मसियौत, तँए ओइ जगहपर जाइसँ पहिने ओकर रस्तो ने देखि लेब।”

घोड़दौड़ चालि पकैड़ मनदोदरी काकी सोचली जे मनुक्खोकेँ की कोनो आड़ि-धुर अछि, जेतए मन फुरतै तेतए जाए-आबए लगत। मुदा अपना-ले तँ रहै-जोकर समाज अपने स्वयं निरमाबए पड़त। जँ विचारक एकोटा संगी निरैम जाएत तँ ओकर ओते आशा हेबे करत जेते अपनो बेटाक नहि हएत। मनदोदरी काकी बजली-

“अखन धरिक जे परिवारो आ समाजोक सम्बन्ध सूत्र छल ओइमे बहुत पैघ दरारि पड़ि रहल अछि। माने गामक जीवन बजारोन्मुखी भऽ रहल अछि, तइसँ बीचमे बेवधानो आ समाधनो भऽ रहल अछि। जे जगह गामसँ सइयो-हजारो किलोमीटर हटल अछि। राज्य बदलल अछि ओइ ठामक भाषा, बेवहार, जीवन-शैली प्रभावित कइये रहल अछि। तैसंग सभसँ प्रमुख हाथक काज बनि गेल अछि। जे हँसुआ-खुरपी ग्रामीण परिवारक मुख्य औजार (हाथक औजार) छल ओ अखनुका शहरी बच्चा-ले प्रदर्शनीक औजार बनि गेल अछि।”

पत्नीक विचार सुनि जनदार कक्काक अपनो मन घुमलैन। घुमलैन ई जे गाम-समाजक आ बजार-समाजक बीच दूरी अछिए,

तैबीच जँ नव सम्बन्ध स्थापित करब तइले अनुकूल परिस्थितियो तँ चाही। ओना, परिस्थितियो-परिस्थितिमे अन्तर अछिए। परिस्थितिकेँ लोक बहाना बना अपनाकेँ काजसँ देह चोरा लइए, मुदा से तँ अछि नहि। मनुक्खक जीवनमे दू तरहक घटना होइए। जइमे एकक कारण जेकरा उपादान कारण कहै छिऐ से परिस्थिति नहि छी। दोसर जे निमित्त कारण अछि से कारण परिस्थिति छी। उपादान आ निमित्त भेल- कोनो माटिक वर्तनक उपादान भेल- माटि, पानि आ बनौनिहार, चाक इत्यादि भेल निमित्त कारण। मुदा जहिना परिस्थितिकेँ अपन शक्ति अछि तहिना मनुक्खोकेँ अपन शक्ति नहि अछि सेहो नहियेँ कहल जा सकैए। अपन-अपन शक्तिक हकदार दुनू छीहे। मनुक्खक काज एहेन शक्तिशाली होइए जे परिस्थितिकेँ बदैल दइए। खाएर जे अछि, अखन एतबे जे जनदार कक्काक जीवनमे जे समस्या अखन आबि गेलैन अछि मात्र तेतबेक समाधानक विचार ने करता। मनक सभ विचारकेँ समटैत जनदार काका बजला-

"घुमा-फिरीबला बात छोड़ू, सोझ-साझ डारिये पहिने सभ बुझा दिअ, पछाइत जे नीक बुझि पड़त से करब आ जे नीक नहि बुझि पड़त से नइ करब।"

ओना, अखन तकक जे जीवन जनदार कक्काक आ मनदोदरी काकीक रहलैन ओ लचुआ लोहाक पुल जकाँ रहलैन। जेकर फलाफल कखनो जनदार काका अपना काजे अकास दिस उठि जाइ छैथ तँ कखनो मनदोदरी काकी। जइसँ विचारोमे आ काजोमे दूरी बनियेँ जाइ छैन, मुदा जहिना चुनावमे जाति-बेरादर, कुटुम-परिवार घौंदा-घौंदे फड़ि जाइए तहिना पति-पत्नीक रूपमे दुनूक विचारक फल एकरंग सेहो भइये जाइ छैन। मुदा तैयो अही दब-उनारक बीच दुनूक सम्बन्ध पति-पत्नीक रूपमे छैन्हे। मुदा जे

रहअ जेतए रहअ, तेते रहअ तेतए रहअ, तइसँ जनदार काकाकेँ किए मतलब रहतैन। मतलब तँ तखन ने रहितैन जखन जीवनक अपनत्व रहितैन। ओना अपन परिवारक, माने पिताक वंशक काज छी, माने मनदोदरीक वंशक, तँए फीस लेल वकील जकाँ अपनाकेँ एक पक्ष पकड़ै पड़तैन। भेल तँ पक्षक पक्ष पकैड़ पक्षी जकाँ अपन स्वच्छन्द विचारकेँ अकासमे टाँहि मारैत उड़इ। मनदोदरी काकी बजली-

"अपन नैहरक भातीजो आ पिसियौतो भाइक परिवारक आ हुनकर जे मसियौतक परिवार छैन, सबहक धिया-पुता बंगलोरमे एक्के करखन्नामे काजो करैए आ एक्केठाम सबहक डेरो छै, सभ कियो एकठाम खेबो-पीबो करैए। ओकरे बेटाक मूड़न छिऐ, जे वैष्णो देवी सेहो जाएत आ अपन सरो-समाज आ कुटुमो-परिवार लऽ कऽ भोजो-भात करत।"

जनदार काका बजला-

"तखन तँ खरचा खूब करत?"

मलड़ैत मनदोदरी काकी बजली-

"आब की ओ सभ पाइकेँ पाइ बुझैए। साएसँ ऊपरक दारू प्रति दिन पीबैए।"

ओना, मनदोदरी काकीक मुँहक सभ बात जनदार काका गौरसँ सुनलैन मुदा विपरीत भाव बनबैत बजला-

"वाह, वाह, जखन पाइक मुँह आँखि देखलक तखन जँ खाए-पीबए नहि, ओहो तँ नीक नहियेँ भेल। जखन कमाइ-ए तखन अपन सभ मनोरथ पूरा करैत चलह।"

मनदोदरी काकी बुझबे ने केली जे पोखरिक पानि कखनो ऊपरमे ठण्ढा रहल आ जेना-जेना तर होइत गेल तेना-तेना गर्म

होइत गेल। तँए ई कहब जे ऊपरका पानि गर्म आ नीचला पानि ठण्ढा नहि होइए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अछिए। भँसियाइत मनदोदरी काकी बजली-

“अपन जे भगलपुरिया रेशम अछि ओ बंगलौरिया रेशमक कनौसियो बरबैर अछि। जहिना अहाँले पाँचो वस्त्र नेने औत तहिना हमरो-ले आ आनो-आन जे नजदीकी सम्बन्धी छथिन, तिनको सभ-ले नेने आउत। सभकेँ नीक विदाइ करत।”

एक संग तीनटा प्रश्न जनदार कक्काक मनमे उठलैन। पहिल उठलैन, दारू पीआक सम्बन्धी। दोसर उठलैन, गाम-बजारक जीवन आ तेसर उठलैन, वंशगत सम्बन्ध। मने-मन नीक जकाँ तीनू प्रश्नकेँ धुनिया कबीर जकाँ नीक जकाँ धुनैक विचार जनदार काका मनमे कए लेलैन। मुदा सिरपर सवार पत्नीकेँ देखि विचारकेँ मनेमे दाबि रखला। तहूमे ओहन सोभावक पत्नी जे जहिना झूठ-फुइसिक पाछू अमूल्य समय नष्ट करै छैन तहिना अपनाकेँ महथवार जकाँ परिवारक बुझि मनदोदरी काकी कखनो-काल कानमे अंकूश सेहो झोंकबे करै छैन। अपन समैयक महत्वकेँ महत्वपूर्ण बुझि पत्नीकेँ अनुकूल बनबैत आ अपन जान हल्लुक करैक निर्णय लैत जनदार काका बजला-

“बुझि पड़ैए जे तखन भरिसक सात पुरुखाकेँ भागीरथ जकाँ गंगो स्नान करौत आ मुइलहा-जीतहा सभकेँ गंगा जल पीयेबो करत।”

एक तँ लत्तीनुमा सम्बन्धी, माने भाइक बेटाक मूड़न, तैपर वैष्णो देवी स्थानमे हएत, जेतए एक-सँ-एक वैष्णव धर्म भरल अछि। मुदा जे बेटो-बेटी अनकेसँ माँगि आनत ओइ बेटा-बेटीक केते आशा माए-बापकेँ करक चाही। भाय ई नहि कहै छी जे जे मिथिलांचलक

बेटा-पुतोहु अपनाकेँ बेटा-पुतोहु बुझि माता-पिताक सेवा नहि केलैन वा नहि करै छैथ, सेहो छथिए। मुदा एहेन बेटा-पुतोहु नइए जे माता-पिताकेँ खाड़ी तोड़ि निच्चाँ नहि उतारैए। सेहो अछिए। खाएर जे अछि, जहिना हजारो रंगक माटि-पानि, हजारो रंगक गाछ-बिरीछ, फल-फलहरी मिथिलामे अछि तहिना ने हजारो रंगक चिड़ैयो आ जानवारो मिथिलामे अछिए। तइसँ कि कम संख्यामे मनुक्ख अछि। जहिना सबहक बोली-वाणी आ चालि-ढालि अछि तहिना ने मनुक्खोक अछिए।

ओना, जनदार काका पत्नीक सोभावकेँ आँकि नेने छैथ। आँकि ई नेने छैथ जे मनदोदरी सुविधा भोगी सोभावसँ ग्रसित छैथ। जेकर फलाफल देखिये रहल छी जे जीवनक बुनियाद काज छोड़ि अन्धविश्वासमे पड़ि केतौ-सँ-केतौ समुद्रमे नल-नीलक छुबल पाथर जकाँ हेल रहल छैथ। भँसि तँ सकै नहि छैथ, किए तँ धारमे छैथ नहि। छैथ तँ समुद्रमे। समुद्र तँ सहजे वौका पानि छी। जइमे ने धार जकाँ गति-गुदा अछि, आ ने झरना जकाँ झहर-महर बोली-वाणी अछि।

मनदोदरी काकी बजली-

“आइसँ आठेटा दिन अछि, माने आठम दिनक नौत-लियौनक समय अछि। तइ बीचमे ओरियानो-पाती करैमे समय लगबे करत किने।”

‘जोगीकेँ कुत्ता बलए’, अनायास जनदार कक्काक मुहसँ खसलैन। खसिते आगू बजला-

“अखन आठ दिन ने अछि। तीन-दिनमे तँ लोक बेटी बिआहक काज समहारि लइए। आ अहाँ एकटा नौते-लियौनक पाछू परेशान छी। देखै छी जे लोक रस्तो-पेरा नौत-हकार पूरि लइए, अहाँ

तेहीले एते चिन्तित छी। परसू सभ बात कहब।"

अपन मनक बिसवास तेतेक ने मनदोदरी काकीकेँ जोर मारि रहल छेलैन जे मनसँ कखनो पिसियौतक मसियौत बेटाक मूड़न हटिते ने छेलैन। मनमे किए उठितैन जे कोनो काजमे डेग उठबैसँ पहिने डेगकेँ भजारि ली जे केतेटा डेग अछि आ केते डेग उठाएब। मुदा जनदार काका तँ से नहि छैथ। ओ तँ बुझै छथिन जे जहिना छीपा-पनार हरो-करीनोक बिसवास नहि जे कखन टुटत वा खसत, तहिना धारक कातक खेतो आ मुँहगरहाक घर लगक बासोक बिसवास नहियेँ करी, मुदा तैबीच तँ सरो-समाज आ करो-कुटुमो परिवारक अछिए जे केहेन काजक भार उठाएब आ अपन करैक शक्ति केहेन अछि, जँ से अन्दाजे ने रहत तखन केहेन हएत। मुहसँ तँ सभ कहिते अछि जे हमरापर बिसवास करू फलित हेबे करत। मुदा अपन जीवन-लीला ओहन अछि जे घरो-परिवारक लोक अपना ऊपर बिसवास नहि करैए। खाएर जे अछि जेतए अछि से तेतए रहउ, तइसँ जनदार काकाकेँ कोन मतलब छैन। मतलब छैन अपन सम्बन्ध कोन रूपेँ स्थापित करी। पारिवारिक सम्बन्ध, माने सम्बन्धीक बीच सम्बन्ध, बँटाइत-बँटाइत तेना बँटा गेल अछि जे परिवारसँ समाजो आ सरो-सम्बन्धीक पहचाने हेराएल जा रहल अछि। जइसँ परिवारो आ बेकतियोक विघटन भेबे कएल जे तइ संग सरो-समाजक भेबे कएल अछि। मुदा आजुक जे नव परिवेश बनि रहल अछि ओ तँ एहेन बनियेँ रहल अछि जे एक गामक कोन बात जे राज्योक नामपर, भाषोक नामपर घनिष्ठ सम्बन्ध स्थापित भइये रहल अछि। किछु छी तँ मनुक्खक जीवन छी किने..? एकाएक जनदार काकाकेँ निशास छुटलैन।

जीवन तँ जीवन छी। अपनाकेँ अजमा कऽ नइ चलब तँ कखन ठेसिया खसब वा कखन मुड़िया खसब, तेकर ठीक अछि।

आब अपन ओ उम्र रहल जे गाम-गमाइत करैक शक्ति रहत। कनियोँ कुभाँज होइए तँ अनेको रंगक उपद्रव शरीरमे हुअ लगैए। तहिना ने अपन जीवनो वएह किसानी अछि। मिथिलांचलक किसान ओइ स्तरक किसान सभ दिन रहला जे हजारो रंगक फल, हजारो रंगक फूलक संग हजारो रंगक अन्नक उपजौनिहार सेहो छैथ। तेतबे नहि, अनेको रंगक दुधारू पशुक संग अनेको रंगक सवारीक पशुक ओरियान सेहो केने रहला। जेकर जीवनो आ सुखोक अनुभव नइ केने छैथ वा करै छैथ, सेहो बात नहियेँ अछि।

विचरणे-विचरण जनदार कक्काक विचार बढ़ि-बढ़ि बदललैन। बदललैन ई जे एक तँ दुनू गोरेक बीच, माने शहरी भेने, जीवन शैली बदैल गेल अछि, अखन संक्रमणक स्थिति अछि तँए दुनू दिसक सम्बन्ध झूलि रहल अछि। विचारो आ विचारक काजोक अपन धारा अछि। जे अपना धारे प्रवाहित होइए, तइ जीवनक संग कुप्रभावित भइये गेल अछि। ने मनुक्खसँ बेसी प्रियपात दोसर जीव भऽ सकैए आ ने तहिना दुश्मनियोँ नइ भऽ सकैए, सेहो बात नहियेँ कहल जा सकैए। सेहो तँ कहले जा सकैए। नव पीढ़ीक अधिकांश बच्चा दारूक संग उत्तेजित पदार्थक सेवन धड़ल्लेसँ कऽ रहल अछि, जेकर उपयोग लेनिहार लइये रहल अछि, आ ओ अपन जीवनकेँ रोगसँ जड़जड़ित कइये रहल अछि। मुदा केकरा कहबै आ के सुनत.! के सुनत जे भोगवादी जीवन आ जोगवादी जीवनक दू धार छै, दुनूक दू प्रवाह छै? जीवनक सार्थकता कहियौ आकि जीवनक मूल्य, ओ तँ जोगवादी जीवनमे समाएल अछि, जखन कि भोगवादी जीवन कृत्रिमताक बीच पड़ल अछि। कहब जे दुनियाँक सभ किछु उन्नतिक शिखर दिस बढ़ि रहल अछि तखन जँ अपने पछुआ जाए, सेहो तँ नीक नहियेँ हएत? प्रश्न अछि मशीनक विकास मनक उपज छी, ऐसँ पैघ उपलब्धि भइये सकैए आ भोबो कएल अछि आ भइयो

रहले अछि। भरपूर उत्पादन भइये रहल अछि। मुदा प्रश्न अछि मशीने जकाँ जीवनो मनक उपज छी आकि मनो जीवनेक बीच अछि। जखन जीवनक बीच मन अछि तखन जीवनानुकूल ने मशीनक उपयोगो हएत आ जीवनो उपयोगी बनत। तइमे नमहर खाधि नहि अछि सेहो केना नहि कहल जाए..? एकाएक जनदार कक्काक मन आगू बढ़ि देवा-देवीक कबुलासँ सन्तान हएबपर गेलैन। एकाएक मन मूड़नक संग मूड़नक भोज-भात आ सर-सम्बन्धीक विदाइपर सेहो गेलैन। अपने मन मुड़ियाइत जनदार काकाकेँ विचार देलकैन जे जइ अभावक कारणेँ गाम छोड़ि शहर-बजार दिस लोक बढ़ल, तइ हिसाबसँ जे ओकर श्रमक श्रमिक अछि तेकरा संग मजाक भइये रहल अछि। जखन अहाँ जीबैक आशा तोड़ि गाम छोड़ि बाहर गेलौं आ बाहर जा जीबै-जोकर अपनाकेँ बना लेलौं, तखन दुनियाँमे केतौ जीबै-जोकर भऽ गेलौं किने। जखन केतौ जीबैक शक्ति अपनामे आबि गेल अछि तखन अपन मातृभूमि, मातृभाषाक संग अपन जीवनक संस्कार आ संस्कृतिक सर-समाज निरमाएब। एक शब्दमे एतबे जे मिथिलाक गौरव जे पूर्वमे कहियो छल आ अखन जे अछि ओ तँ अहूँक आगूएमे अछि किने। देखिते छी जे एक दिस वैज्ञानिक सोचक संग वैज्ञानिक जीवन बनल जा रहल अछि तँ दोसर दिस जाति-धर्मक महजालमे अन्धविश्वास केना समाजकेँ बिटियाकऽ पकैड़ नेने अछि.! की ऐसँ एकैसमी शदीक जीवन देशक जन-गणकेँ प्राप्त भऽ सकैए? एकाएक जनदार कक्काक अपने मन चेतौलकैन जे सम्बन्ध स्थापित करैक हजारो रूप अछि। जखन ओ, माने दोसर पक्ष, आगू बढ़ि हाथ बढ़ौलैन तँ पाछूसँ अपनो नहि बढ़ाबी सेहो तँ उचित नहियेँ हएत। ओना, अपने नइ जा दोसरेसँ काज समहारी, मुदा सम्बन्ध-सूत्रक मुँह बन्न नहि करब। पत्नीकेँ विशेष जिज्ञासा छैन। जिज्ञासुकेँ जँ जिगेसा पूर्ति

होइत जाए तँ ओकर जिज्ञासा आरो बेसी पसरबे करैए। तहूमे दुनूक बीच बाँटल भाय पड़ोसिया जकाँ तँ नहियेँ छी मुदा अर्द्धांगा रूपमे छीहे।

भोरमे कौआ टाँहि देनौं ने छल कि मनदोदरी काकी जनदार काका लग आबि तगेदा करैत टोकि देलकैन- "परसू तँ आइये छी। की विचार भेल?"

जहिना मनदोदरी काकीक जिज्ञासा तहिना जनदार काकाकेँ हुनका मुँहमे चहरा देब रहबे करैन, बजला- "अहाँक विचारकेँ हम कहिया कटलौं जे आइ काटब।"

अपन बड़प्पन बुझि मनदोदरी काकी बजली- "वेचाराक[4] कुल-खुट सभ दिन अपन कुल-खुटकेँ एक लोटा जल अर्पण करैत अखन तक जीवित रखलक अछि। आइ जँ ओकरा सिनेह भेलै तँ हमहीं किए पाछू हटब।"

अपन विचारकेँ दबने जनदार काका झाँपि-तोपि कऽ बजला-

"अहाँकेँ के कहैए जे पाछू हटि मुँह चुकरिआउ। जहिना अपन मन बिसवासक संग मानलक तहिना सीना तानि आगू बढ़ि करेज[5] देखा दियौ।"

एक तँ मनदोदरी काकीक मन कक्कोक विचार सुनि उजगुजा गेलैन तइपर अपने उत्सुक विचार बुधिकेँ तेना ठेल देलकैन जे बमैक बजली- "जखन दोसर परिवारक बीच जाएब, तखन देखबेटा ले नइ ने जाएब, देखबैयोले जाएब किने? यएह देखब-देखाएब ने दुनियाँक सुरीत रहल अछि।"

---

[4] *जिनका ऐठामसँ नौत-लियौन भेल छेलैन*

[5] *कलेजक शक्ति*

सह दैत जनदार काका बजला- “तइले मनाही के करैए जे अहूँ मानब। जे मन फुरए, जेते मन फुरए से करू।”

परिवार दू भागमे बँटाएल अछिए। घरसँ बाहर आ घरक भीतर। घरक मलिकाना हक रहने मनदोदरी काकी मलिकाइन छथिए, तैसंग मूड़नक सभ विधो-बेवहार बुझले छैन, तँए पतिसँ दोहरा कऽ पुछैक खगते ने भेलैन।

आइ जेबाक दिन छी। माने नौत-लियौनक औझुके दिन छी, पत्नीक पिसियौतक मसियौत भाइक बेटाक मूड़न छी। सुति कऽ उठैसँ पहिने जनदार काका विचारि लेलैन जे जहिना पत्नीक जिज्ञासा बेसी छैन तहिना हुनका पूर्ण स्वतंत्र भार किए ने सुमझा दिऐन। अपने नइ जाइक कारण अपन काज सेहो अछिए। काजे ने अपन सही रूप पकैड़ गलत काजक उत्तर दइए। जे हुनको बुझले छैन, माने अपन जिनगीक हिसाबसँ, तँए बहन्नो करबे ने अछि। ओछाइनपर सँ उठि जनदार काका पत्नी लग पहुँच बजला-

“एक बजे रातिसँ अखन तक एकतीस बेर मोबाइलसँ तगेदा भऽ गेल अछि जे जल्दी आउ। हम अखने निकलब, ओमहरसँ गर अँटत तँ पहुँच जाएब, नहि तँ सोल्होअना भार लऽ कऽ ताबे अहाँ आगू बढ़ब।”

जनदार कक्काक मुँहक भार सुनि मनदोदरी काकी बिहुसए लगली।

❑

शब्द संख्या : 3366, तिथि : 12 दिसम्बर 2020

घरक खर्च

सात-आठ बर्खसँ रतनेसर काकाकेँ दुनू बापूतक बीच गुमा-गुमी चलैत आबि रहल छैन। आने परिवार जकाँ, जेना समाजक बीच परिवारक रूप-रेखा बनलो अछि आ बनियोँ तँ रहले अछि। दुनू बापूतक बीच परिवेशक अनुकूलतो सोभाविके अछि। तही अनुकूल रतनेसर काका आ जुगुतलालक बीच सेहो चलिये आबि रहल छैन। अपन-अपन विचारो आ परिवेशोक प्रभाव पड़ने दुनू बापूतक बीच गुमा-गुमी सोभाविक प्रक्रिया छीहे। कहब जे से केना? परिवारक संचालन कर्ताक रूपमे रतनेसर काका छैथ जखन कि जुगुतलालकेँ सात-आठ बर्ख कौलेजसँ पढ़ाइ समाप्त केला भेल अछि?

जखन जुगुतलाल हाले-सालमे कौलेजसँ आएल छल तखन जएह जीवन कौलेज अवस्थामे छेलै माने परिवारसँ निफिकीर जीवन ओ पढ़ाइ समाप्त केलाक पछातियो जुगुतलालमे ओहिना छल जहिना पढ़ाइक समय छेलइ। रतनेसर काका ऐ ताकमे छला जे नव उमेरक जुगुतलाल अछि तहूमे कौलेजसँ पढ़ि कऽ आएल अछि; ओ तँ अपन जीवन अपने निर्धारित करैत ने जीवन निर्धारण करत आकि हमरा कहलासँ हेतइ। तहूमे देखिते छी जे विचार भेद, सम्बन्धक कमीक स्वर आ अधिकार भेद केते उजागर भऽ गेल अछि। सभ अपनाकेँ अठारह बर्ख पुरिते वा चोरा-नुकाकऽ चौदहो-पनरह बर्खक अवस्थाकेँ अठारह बर्ख बना अपन अधिकारकेँ प्रयोग करैत सोझा-सोझी समाजक बीच बिआहो करए लगल अछि आ भोँटो खसैबते

अछि। शुरूमे, जखन जुगुतलाल कौलेजसँ आएल छल तखन अपन विचार बढ़बैत पिताकेँ कहने रहैन- “बाबू, आमक एकटा तेहेन गाछी लगाउ जे भलेँ ओ रकबा हिसाबसँ छोटे किए ने होइ, मुदा बारहो मास आम हुअए।”

जुगुतलालक विचार सुनि रतनेसर कक्काक अपनो मन डोललैन। डोललैन ई जे बहुत रंगक फल अपना ऐठाम अछिए जे बारहो मास होइए, मुदा आम सन अमृत फल किए ने हएत। ओना, रतनेसर काकाकेँ बुझले छैन जे अपन पूर्वज बरहमसिया आमक गाछ हमरा सभकेँ देने गेल छैथ, मुदा देलाक पछातियो अछि नहि। जँ से रहैत तँ बरहमसिया आमक गाछियो रहैत आ आम खाइक चलैन सेहो रहैत। से तँ जहिना गाछी नहि अछि तहिना खाइक चलैनियोँ तँ नहियेँ अछि। खाएर जे अछि, तइसँ रतनेसर काकाकेँ कोन मतलब छैन। बेटाक विचारकेँ प्रोत्साहित सुझाव बुझि शिरोधार्य केलैन मुदा अपन पसरल जीवनसँ शेष समय बँचल नहि देखि गाछी दिस धियान नहि देलैन। रतनेसर कक्काक अपन जीवन अपना रूटिंगमे बान्हल छैन तँए बेटोकेँ, माने जुगुतलालकेँ किछु ने कहै छैथ। कहबो केना करता, जे सभ तरहेँ समरथ–वयस्क–मानि दुनियाँमे ठाढ़ अछि ओ तँ अपने ने दुनियाँ देखि अपन दुनियाँ गढ़ैक सूत्र-पात करत आकि विधाता आबि मुँह-कान गढ़ि देथिन।

अपन मनक मस्तीमे रतनेसर काकाकेँ तुलसी बाबाक विनय पत्रिकाक पाँती- ‘केसव, कही जाइ का कहिये। देखत जव रचना विचित्र, समुझि मनहि-मन रहिये, केसव कही न जाइ का कहिये..।’ किछु-किछु मोन पड़लैन।

ओना, परिवारमे रतनेसरो काका छैथ आ जुगुतलालो अछि जे आने बाप-बेटा जकाँ सेहो छथिए, मुदा एक परिवार रहितो दुनूक दुनू रूपमे देखि रहला अछि। रतनेसर काका परिवारमे समा समैयक संग

परिवार संचालित करैमे भरि दिन लागल रहै छैथ, मुदा जुगुतलाल नाटकक बनल पात्र जकाँ परिवारकेँ बुझि रहल अछि। ओना, समाजक जे विचारधारा चलि रहल अछि तइमे दुनू विचारधाराक मंत्र सेहो चलिये रहल अछि। किछु गोरेक मंत्र छैन, 'मनुक्खकेँ अपना केलासँ किछु ने होइ छै, भगवानक देलासँ सभकिछु होइ छै।' जँ से नहि होइत तँ जे भरि दिन सड़कपर ईंटा-पाथरक काज करैए ओकरा जेते मजूरी भेटै छै तइसँ हजारो गुणा कमाइ बैसल-बैसल लोककेँ कमीशनसँ नहि भेटै छै सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो तँ अछिए। खाएर जे अछि, मुदा एहेनो मंत्र समाजमे अछिए जे 'जे किछु हएत तँ ओ अपना केलासँ हएत।' भगवान हाथ-पएर बला मनुक्ख जकाँ नेतघटू थोड़े छैथ। जे केकरो गरदैन कटता आकि खून चुसता। ओ सभकेँ एक्के नजैरसँ देखबो करै छैथ आ अपन ऊर्ज शक्तिसँ ऊर्जवानो तँ बनैबते छैथ। तँए ने कखनो काल गीतो गबिते छैथ जे 'जे बगुला जकाँ लटकलहापर लक लगौने रहत ओ लटकलक लटकले रहि जाएत।'

साल भरिक पछाइत जुगुतलाल पुन: पिता लग दोहरबैत बाजल- "बाबू, आमक गाछीपर धियान नइ देलिऐ?"

जुगुतलालक तगेदा सुनि रतनेसर कक्काक मनमे एकसंग अनेको प्रश्न, सौनक मेघ जकाँ टकरा गेलैन। मुदा कोन प्रश्नक उत्तर ऐठाम उपयुक्त हएत.? मने-मन रतनेसर काका सोचलैन- ओना, जुगुतलालक इच्छाकेँ हम कद्र करै छी; जे मास दिनक फल सालो भरि खाइक इच्छा रखैए। यएह ने भेल जीवन जे लूटि आनि कुटि खाइ, भिनसर भने फेर जाइ। आकि टीनक टीन घी घरेमे राखब आ घर-आँगन घीबाएल-महकाएब.! आमक गाछीपर पुन: रतनेसर कक्काक मन घुमिकऽ एलैन। जुगुतलालक इच्छा ठीके साधना पक्षक इच्छा जकाँ अछि, मुदा इच्छा तँ तखन ने इच्छित भेल जखन

इच्छित भेल विचार मनमे रखि इच्छित कर्ममे अपनाकेँ बान्हि इच्छित दिशा दिस बढ़ब। तखन ने साधनाक इच्छा इच्छित फल दइबला इच्छा भेल। नहि तँ अनिच्छा भेल। खाएर जे अछि ओ जुगुतलाल जानए। अपनो चूक तँ जरूर भेले अछि जे तीन किस्मक तीनटा बरहमसिया आमक गाछ गाममे छल, जँ तीनू आमक गाछक जोगार केने रहितौं तँ एकटा गाछी भइये गेल रहैत। भलेँ आजुक जे परिवेश बनि गेल अछि ओ अन्नसँ लऽ कऽ फल आ तीमन-तरकारीक खेतीक उजाड़िक भयावह स्थिति अछि। जे मनुक्खसँ लऽ कऽ चिड़ै-चुनमुनी, कीड़ी-फतिंगी, जन-जानवर तक उपद्रव करिते अछि। ओना, पहिनौं छल मुदा ओ छल दोसर रूपमे...।

लगले रतनेसर कक्काक मन अपने कहलकैन जे जइ दिनक जे भविष्य छल ओ भूत बनि 'भू'मे विलीन भऽ गेल। जँ छोड़ै-जोकर छल तँ नीक भेल आ जँ छुटै-जोकर नहि अछि तखन आइयो तँ ओकर जोगार कएले जा सकैए। ..पोखरिक पानिमे डुमकुनियाँ काटि जहिना कियो भुक-दे पानिक ऊपरमे उठैए तहिना रतनेसर कक्काक मनमे जुगुतलाल उठलैन। बजला- "हौ जुगुत, धियानेपर सँ उतैर गेल। पहिलुका गाछी-कलम तँ आब रहल नहि जइसँ गाछ लगा अखनो रोपि लइतौं। दोसर कोनो रस्ता तेहेन नजैरपर नहि आएल तँए मनसँ सेहो उतैर गेल।"

पिताक विचार सुनि जुगुतलाल बाजल किछु नहि मुदा मनमे कचोट लगबे केलइ। जहिना रतनेसर कक्काक बात सुनि जुगुतलालकेँ कचोट लागल तहिना जुगुतलालक विचारसँ रतनेसर काकाकेँ पहिनहिसँ कचोट लागि चुकल छेलैन। मुदा परिवारक निश्चित समैयक संचालनकर्ताक रूपमे अपनाकेँ देखि मने-मन विचारकेँ मनेमे रखि लेलैन। अपने मनमे उठलैन जे जुगुतलाल पढ़ल-लिखल, माने बी.ए. पास अछि आ परिवारोमे अछि, दूटा

बालो-बच्चा छइहे, मुदा कोन नोकरीक आस लगौने ओहिना अखनो अछि जहिना पढ़ै-लिखैक समय गुजारलक.? ओना तँ एहनो तपस्वी सभ धरतीपर भेबे केलाह जे क्षणे-पलमे अपन तपस्या पुरा लेलैन, मुदा पाँच बर्खसँ चौदह बर्ख धरिक तपस्याक संख्या बेसी अछिए। रामो चौदह बर्ख बनवासमे बितौलैन। तैठाम अट्ठारह बर्खक तपस्याक जीवन–माने पढ़ै-लिखैक समय–जुगुतलालो बितौनहि अछि, तइमे मानवीय जीवनक ओकरा की सूत्र भेटलै.? एकाएक रतनेसर कक्काक मन असथिर भेलैन। किछु बिलमला पछाइत रतनेसर कक्काक मनमे जेना समाजक एकटा दृश्य सामने एलैन। नोकरी तकै पाछू लोक अपन सम्पूर्ण जिनगी बिता रहल अछि, जइमे ने अपन जिनगी बँचै छै आ ने नोकरी भेटै छै। अपन क्रियमान शरीरक शक्तिकेँ ओहिना-क-ओहिना मृत्युक आगिमे भष्म करैए। जुगुतलालो तँ नोकरियेक आसमे बैसल अछि जइसँ गाम-परिवारक काजसँ जे अनुरक्त हेबा चाही से नहि भेने विरक्त अइछे..।

मुदा जे संस्कार समाजक बीच पसैर रहल अछि ओइ अनुकूल अपन रूआबमे जुगुतलाल पिताकेँ कहबो केने छल आ दोहरा कऽ तगेदो केने छेलैन। ऐठाम अनुरक्त आ विरक्तक आध्यात्मिक बात नहि, ऐठाम किसान परिवारक जीवनक विचार मात्र अछि। रतनेसर काका पहिने अपनापर नजैर उठौलैन जे अपन आकर्षण केना परिवार आ समाजपर पड़ल जे ने गाम छोड़ैक मन कहियो भेल आ ने परिवारकेँ कहियो अपनासँ अलग बुझलौं। सभ किछु अप्पन छी, एहेन विचार मनमे शुरूए-सँ रहल। जखन कि जुगुतलाल एकटा साधारण काज, ‘बरहमसिया आमक गाछी; लगबैले बेर-बेर कहलक अछि मुदा अपन इच्छा अपने पुरौत, से पुरै छै कि नहि ओ अखनो धरि नहि बुझि रहल अछि। ओना, इच्छा अनन्त अछि, हेबो चाही।

जुगुतलालक अखन धरिक जे जीवन रहल तइमे समा रतनेसर

काका विचार करए लगला जे जुगुतलालकेँ किछु कहिऐ वा ओहिना छोड़ि दिऐ। अखन ओकर उमेर छबीस-सत्ताइस बर्खक अछि। ओहुना पनरह बर्खक पछाइत जुआनीक रंगो-रूप आ चिष्टोचार शरीरमे अबए लगैए, तैठाम जुगुतलाल छबीस-सत्ताइस बर्खक उमर पार कऽ रहल अछि आ अखनो धरि ओकर चेतना ओहिना-क-ओहिना किए सुतल छै?

..अपन जीवनक जे दायित्व रतनेसर कक्काक छेलैन, माने बच्चा जन्मसँ जीवन धारण करबैत, पढ़बैत-लिखबैत, बिआह-दान करैत परिवार तक पहुँचा दैक, तैठाम एकटा पढ़ल-लिखल बेटा जुगुतलाल सनक, केँ की दायित्व बनैए? मनुक्खक जीवन आ धारक पानि तँ सदैत प्रवाहित होइबला छी, तैठाम जँ जिनगी ठमकैए तँ केतौ-ने-केतौ कर्ताक कर्ममे कमी अछिए। मने-मन रतनेसर काका जुगुतलालक जिनगीकेँ पछुअबैत जखन विचारधारा लग पहुँचला कि एकाएक जुगुतलालक असल चेहरा नजैरिक सोझमे नाचि उठलैन। जइसँ मनमे प्रश्न उठि गेलैन जे जीवनमे विचारधारा की?

विचारक समूहेक प्रवाहक नाम ने भेल विचारधारा। जइसँ जीवनक धारमे मनुक्ख अपन देहसँ लऽ कऽ परिवार-समाज, देश-दुनियाँक बीच प्रवाहित होइत सदैत प्रवाहमान बनल रहैए। जेकरा जीवनधाराक संग विचारधारा सेहो कहै छिऐ। एकाएक रतनेसर कक्काक मन जीवनक ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जैठाम क्रियासँ हटि मात्र ज्ञान दिस बढ़ए लगैए। की ऐठाम शिक्षण-संस्थाकेँ दोष देल जाए वा परिवारकेँ..? किसान परिवारक ब्रह्मचारी–माने विद्यार्थी–जीवन जे ज्ञान-शक्तिसँ लऽ कऽ कर्म-शक्ति धरि अर्जन करैए। तैठाम कोदारि-खुरपीकेँ छुअब लाजक काज बुझब केते उचित हएत। एहेन संस्कार बच्चामे पनैप केना रहल अछि? की माता-पिता चौबीसो घन्टा पठने-पाठन ले बेटा-बेटीकेँ छोड़ि रहला

अछि वा परिवारक आचार-विचार सेहो सिखा रहला अछि? तैठाम ईहो परीक्षा लेब आवश्यक अछिए किने जे बच्चा परिवारसँ जुड़ल केते चलैए आ टुटल केते चलैए। अखन धरिक समाजक बीच जे दीक्षा देबक चलैन अछि ओ अपूर्ण अछिए। शिक्षा भेटला पछाइत दीक्षा भेटब उचित वा पहिने दीक्षा पएब उचित, ई तँ अनिर्णित विचार अछिए। जेना विश्वविद्यालय सभमे पढ़ाइ पूर्ण भेला पछाइत दीक्षान्त समारोह होइए। मुदा समाजक बीच एहेन नहि अछि जे पहिने दीक्षे नहि देल जाइए। पहिने कियो यएह बजैए जे 'हमरापर बिसवास अछि किने?' बिसवास मुँहक मधुर बोल थोड़े छी, ओ तँ आशाक फल छी। जइ परिवारक सदस्य जेते क्रियाशील भऽ अपन परिवारक प्रति कर्तव्यनिष्ट छैथ ओइ परिवारमे ओ ओते विश्वास-पात्र बनले छैथ, जइले हुनका थोड़े कोनो पैरवी-पैगाम परिवारमे करए पड़तैन। भेल तँ एतबे ने जे पियासल छी वा भूखल छी वा बिमार छी तँ एक लोटा पानि वा भोजन वा बिमारीक दबाइ वा सेवा तुकपर, माने उचित समयपर भेट जाइन तँ किए ने लोकक बिसवासो, जिनगियो आ परिवारोसँ विश्वस्त बनल रहता। ओना, ईहो कहले जा सकैए जे तखन लोक अपने परिवारसँ आक्रोशित भऽ आत्महत्या किए करैए? ..आत्महत्याक विचार मनमे अबिते एकाएक रतनेसर कक्काक मनमे विचार ठमकलैन।

किछु समय ठमकला पछाइत रतनेसर कक्काक चेतनशक्ति अपने जगलैन। जगिते दूटा विचार मनमे उठि गेलैन। पहिल उठलैन 'आत्महत्या' आ दोसर उठलैन परिवारक 'विषम स्थिति।' आत्महत्या तँ यएह ने भेल जे आत्माक हत्या। आत्माक हत्या शरीरकेँ फँसरीए लगा मुइने वा पटरीपर गाड़ीसँ कटबक संग जहर-माहूर खेने वा बिजलीमे सटि मरबे तँ नहि छी। ऐठाम आत्माक जे वास्तविक रूपो आ अर्थो अछि ओ सोल्होअना झँपाएल अछि।

प्राणक आत्मा संग आत्मा आचारो-विचार आ जिनगियोसँ जुड़ल अछि, जे शरीरसँ अलग रूपमे बास करैए, तैठाम आत्महत्याक जे रूप लोकक बीच चलनसारि अछि ओ आधाअधुरा भइये जाइए। दोसर, जइ परिवारक गठन हजारो बर्खसँ भेल आबि रहल अछि, जे मनुक्खक जीवनक उच्च कोटिक संस्था सेहो बनले अबैत रहल अछि, अखनो अछि, तइ परिवारमे जीवनसँ एतेक घृणा मनुक्खमे केना पैदा लइए जे अपन शरीरकेँ जघन्य-सँ-जघन्य मृत्युक जगहपर धकेल दइए।

आठ बर्खक पछाइत, माने जुगुतलाल सत्ताइस बर्खमे पहुँच गेल, अखन तक रतनेसर काका गुमे-गुम सभकिछु देखि रहल छला जे एकटा पढ़ल-लिखल नौजवानकेँ जीवनक प्रति की गतिविधि बनि रहल अछि। जुगुतलालक प्रति रतनेसर कक्काक आक्रोश जगलैन। आक्रोश ई जगलैन जे जे नवजुवक सात बर्ख पूर्व कौलेजसँ शिक्षा पेब गामो, परिवारो आ जीवनोमे मरल मुरदा जकाँ बनल अछि, ओकरा मनमे कनियोँ विचार नइ उठै छै जे अधवयसू माता-पिता अछि, पत्नीक संग दूटा बच्चो अछि..!

उत्तेजित मन रतनेसर कक्काक रहबे करैन तँए एहेन विचार मनमे एलैन। मुदा सुचित लोक जकाँ अपनाकेँ सचेत करैत विचारलैन जे परिवारो आ समाजोक बीच जे जीवनक जाल-महजाल जकाँ लागल अछि ओकरो महत्व तँ अछिए। जघन्य-सँ-जघन्य अपराधीकेँ परिवारोमे आ समाजोमे भौजाइ वा मित्रवत सम्बन्धक जे छैथ ओ हँसियो कऽ तँ कहबे करै छैन जे अहाँ एहेन अपराधी छी। भलेँ ओ हासक हँसियापर किएक ने चढ़ल हुअए।

एकाएक रतनेसर कक्काक अपन मन ओइ सीमापर पहुँच गेलैन जेतए अपन चूक बेटाक प्रति देखए लगला। अपन चूक ई

देखए लगला जे अखन तक जुगुतलाल जिनगीक बीस बर्ख स्कूल-कौलेजमे बितौलक। जखन ओ हाइस्कूल टपल, माने हाइस्कूल तक जुगुतलाल घरेपर सँ आबि-जाए पढ़लक, तेकर पछाइत ने परिवारसँ हटि बाहर गेल। मुदा तइसँ पहिने, जखन परिवारक बीच रहि पढ़लक तखन ओकरा परिवारसँ जेहेन साटिकऽ राखबक जरूरत छल से अपने नइ कऽ पेलौं। ओना, तइमे अपन ओते दोख नहि अछि जेते माइक दोख भेल। किए तँ अपने अपन परिवारक पाछू, जीवनक पाछू बेहाल रहलौं जइसँ धिया-पुतापर ओते नजैर नहि पड़ि सकल, जेतेकक खगता छल, तँए अपनो दोखी छीहे। खाएर जे भेल ओ तँ भऽ गेल। भुताएल कहियौ आकि भोथियाएल, ओ तँ बीत गेल। मुदा आइ तँ आइ छी, जँ आबो नहि चेतैत चेतनशील बनब तँ ऐगला जिनगी आरो बेसी गरूगर बनबे करत...। जिनगीक भविष्य देखि रतनेसर काका दरबज्जापर बैस पत्नियोँ आ पुतोहुओकेँ बजबैत जुगुतलालकेँ सेहो बजा पुछलैन- “बौआ, नोकरीक की आशा छह?”

आने-आन नवजुवक जकाँ जुगुतलाल बाजल-

“बाबू, अखन तकक जे आयु नोकरी लेल निर्धारित अछि ओ तँ समाप्त भऽ गेल, मुदा पाँच बर्ख आरो आगू बढ़ैबला अछि।”

जुगुतलालक नोकरीक आशा देखि रतनेसर कक्काक मन भीतरे-भीतर तरैंग गेलैन। तरैंग ई गेलैन जे एकटा पढ़ल-लिखल नौजवानमे ई शक्ति नइ छै जे अपन दुनियाँ गढ़ि बास करत। आ नोकरीक पाछू अपन जिनगी चौपट कऽ लेत.! ..मनक तरंग रतनेसर कक्काक विचारक तरंगकेँ तरंगित केलकैन। ओही तरंगित वेगमे रतनेसर काका बजला-

“आ जँ नोकरीक आयु नहि बढ़त, तखन की करबह?”

पिताक विचार जुगुतलालकेँ बिसाएल तीर जकाँ करेजमे लगल। ओना, ऐठाम सुसाएल तीर जकाँ सेहो लगि सकै छल मुदा ओ तँ जीवनानुकूल बनैए। कहैले तँ सभ मनुक्खे छी, लेकिन मनुक्खक बीच मनुक्खतामे भेद नहि अछि सेहो केना नइ कहल जाएत। कहैले गुरु शब्द एकटा छी, मुदा दुनियाँ तँ गुरुए-सँ भरल अछिए। तइमे अपने ने खोजी बनि खोजब जे कोन गुरुकेँ पकैड़ शिष्य बनी जे जिनगीक धार पार कऽ सकब। गुरुसँ दुनियाँ ई भरल अछि जे जेते रंगक जीवन अछि ओइ जीवनक अनुसंधान नहि भेल अछि सेहो बात नहियेँ अछि। हँ, एते जरूर भऽ रहल अछि जे नव-नव जीवन सेहो उठि-उठि ठाढ़ भऽ रहल अछि। ओ तँ भेले अछि, भलेँ ओ जीवित हुअए आकि हेरा गेल हुअए। जँ जीवित अछि तँ आँखिक सोझमे अछि नहि जँ हेरा गेल अछि तँ ओकरा जीवनक्रियासँ तकले जा सकैए। मुदा से जुगुतलालकेँ नहि भेल, बिसाएल वाण जहिना शरीरक भीतर प्रवेश करैत आरो विष पैदा करैए, तहिना भेल।

अखन तक जे जुगुतलालक जीवन रहल तइ अनुकूल ओकर निर्माण भेबे कएल। सबहक होइ छै। जाबे तक हाइस्कूलमे जुगुतलाल पढ़लक ताबे तक भविष्यक जीवन दिस धियाने ने गेलै आ जखन कौलेजमे आइ.ए.सँ आगू बढ़ि बी.ए.मे गेल तखन जीवन दिस नजैर पड़लै। नजैर पड़ैक कारण भेलै जे अखन तक, माने आइ.ए. तक, आगूमे बी.ए. ठाढ़ रहल अछि, जेकरा प्राप्त भेला पछाइत जिनगीक अनेक नव-नव जगह भेटैक आशा लोकक मनमे रहिते छै, तहिना जुगुतलालक मनमे सेहो बनले छल जे बी.ए. केलाक पछाइत हाइस्कूल तक शिक्षकक रूपमे वा कार्यालयमे चपरासीसँ अफसर बनैक योग्य भइये जाएब, जइसँ केतौ-ने-केतौ ठौर भेटबे करत। जेकर दोसर पक्ष परिवेशक अनुकूल ई भेबे कएल

जे जहिना आन-आन नोकरिहारा अपन परिवारो आ परिवारक संग मातो-पितासँ विमुख भेल जा रहल अछि तहिना जुगुतलालकेँ सेहो मनमे घर केनहि अछि। जइसँ गाम-समाज आ परिवारक किरियो-कलापक दूरी बनिते जा रहल छेलइ। दूरी बनने किसान परिवारक किसानी जीवन गौण भइये रहल अछि। किसानी जीवनक प्रति अरूचि बढ़ने विचार-सँ-बेवहार धरिक दूरी बनियेँ रहल अछि। जे जुगुतलालकेँ सेहो भेल। जँ से नहि भेल रहैत आ माता-पिताक संग परिवारो आ गामो-समाजक जे सम्बन्ध जीवनक लेल अनिवार्य अछि ओ गौण केना भेल.?

रतनेसरो काका आ जुगुतोलालो एक परिवारमे पिता-पुत्रक रूपमे रहितो बेवहारो आ विचारोसँ दूर भइये गेल छैथ। जे सोभाविको अछि। रतनेसर काका जहिना परिवारो आ समाजोक संग संवेदनशील छैथ तहिना जुगुतलाल ओइसँ दूर अछि। जखने विचारमे दूरी बनैए तखने बेवहारोमे दूरी बनिते अछि। तहूमे जुगुतलालक मनमे अखनो यएह गरल छै जे केतौ-ने-केतौ नोकरी हेबे करत आ अपन परिवारक, ऐठाम परिवारक माने अपने, पत्नी आ बाल-बच्चा धरि सीमित अछि, संग नीक जकाँ जीवन-यापन करबे करब...। जुगुतलाल बाजल-

“हमरा आयुसँ अहाँकेँ कोन मतलब अछि।”

बेटाक बात रतनेसर कक्काक मनमे ठाँहि-दे लगलैन। ठाँहि-दे ई लगलैन जे जेकरा सत्ताइस बर्खक जीवनक सोल्होअना भार अपना कन्हापर उठा पार लगेलौं, तेकरा जँ एहेन विचार मनमे पनैप गेल अछि, तखन अपन जीवनक जे अन्तिम अवस्था, वृद्धावस्था औत, शरीरमे अखुनका जकाँ शक्ति नइ रहत, तखन एहेन बेटापर केतेक बिसवासक संग जीब सकै छी। एकाएक रतनेसर कक्काक

मनमे विराग उठलैन। विराग उठिते विचारए लगला जे केकरोपर अपन आशा रखी आ ओ जँ आशाकेँ भग्न कऽ दिअए तखन की करब? तखन तँ यएह ने हएत जे अपटी खेतमे प्राण जाएत। रतनेसर काका अपन मनक प्रश्नकेँ अपने विरागशील मने संतोषजनक उत्तर देलकैन। बुदबुदेला- "दुनियाँमे केकरोपर आशा करब नादानी अछि। किएक तँ जखन दुनियेँ असार अछि माने नाशवान अछि, तखन तँ दुनियाँक सभ किछु ने असारे भेल। तखन असारकेँ सार बुझबे ने नदानी भेल।"

अपन नदानीपर नजैर पड़िते रतनेसर कक्काक मन आगू बढ़लैन कि बुझि पड़लैन जे अपनेटामे नदानी अछि आकि आरो सभमे छइ? सभ बुझै छी जे जिनगीक अन्तिम अवस्था वृद्धावस्था भेल। जहिना जनमौटी बच्चाक सेवा माता-पिता नहि करता तँ ओ बच्चा दुनियाँमे नहि रहि सकैए। मुदा वृद्धावस्था तँ से नहि छी, अपन पूर्ण जिनगीक एक समत्वरूप छी जे अनेको जीवनकेँ देखियो कऽ आ अपन जीवनकेँ बनाइयो कऽ अनुभव प्राप्त केने छैथ। तहूमे जीवनक संग रोगो-वियाधि आ आफदो-असमानी सबहक समस्या छीहे, तैठाम ओहन समस्याक भयसँ जीवनक विचारधारासँ विमुख भऽ जाइ सेहो तँ पुरुषपन जीवन नहियेँ भेल। एकाएक रतनेसर कक्काक मन ठमकलैन। ठमकल मनमे उठलैन तखन? तखन तँ यएह ने नीक हएत जे अखन तक जे मने-मन गुम रहि, माने चुप रहि अपन विचारकेँ दबने रहलौं, तेकरा निकालि किए ने जुगुतलालक सोझामे रखि दिऐ...। सचेत पिता जकाँ रतरेसर काका बजला- "बौआ, परिवारकेँ कोन नजैरिये देखि रहल छह, तेकरा अपने आँकि कऽ बाजह ते?"

चोटाएल गहुमन साँप जेना फुफकार कटैए तहिना फुफकारि जुगुतलाल बाजल- "की ओहिना कौलेज खाली डिग्री दऽ देलक

आकि जीवनक संग आरो किछु देलक?"

कोनो विचारकेँ डारि-पात मोड़ि बाजल जाइए आ कोनो विचारकेँ ठाँहि-पठाँहि बाजल जाइए, मुदा रतनेसर काका एते सचेत रहला जे ऐठाम पिता-पुत्रक प्रश्न अछि। ओना, एहेन प्रश्न दुनियोँक संग उठि सकैए मुदा ओकर रस्ता किछु भिन्न हएत। फेर अपने मन कहलकैन जे अंगक धर्मक पालन जरूर करब मुदा सिर गाड़िकऽ नहि तानिकऽ, आखिर पिता किछु होथि मुदा ओ साधारण जन्मदाते टा नहि छैथ, दुनियाँक प्रथम गुरुक संग बच्चाक भाग्य-विधाता सेहो छैथ। मुदा तँए कि पिताकेँ एतबो अधिकार नहि छैन जे बेटाकेँ जीवन निर्माणक बात पुछैथ। विचारक प्रवाहमे प्रवाहित होइत रतनेसर काका बजला- "बौआ, एना नइ बुझक जे हम तोरा ई कहै छिअ जे तूँ सर्टिफिकेट कीन अनलह आकि कौलेजक पढ़ाइक समय शिक्षकक अभावमे तूँ सिनेमा देखै छेलह। हम तोरा ई पुछै छिअ जे पढ़ला-लिखला पछाइत अपन केहेन जीवन निरमाबए चाहै छह।"

अखन तक जे समाजक विचारधाराक मत रहल जे मनुक्खक भाग्य-विधाता अपनासँ इतर अछि, माने भाग्य विधाता कियो छैथ, यएह विचारक संस्कार मनुक्खक चेतनक्रियाक दिवार[6] बनि जड़िकेँ नष्ट केबो केने अछि आ कइयो रहल अछि। मुदा से जुगुतलाल किए बुझत, आखिर डिग्रीयोक तँ अपन मर्यादा अछिए। आत्मबलक सृजनकर्ता छीहे। सृजनकर्ताक रूपमे जुगुतलाल बाजल- "दुनियाँक जे परिवेश अछि तइ अनुकूल जँ अपनाकेँ बना नहि चलब तँ एको दिन जीब सकै छी।"

जुगुतलालक विचार सुनि रतनेसर काका मने-मन विचारलैन जे जुगुतलाल पानिक तरक भुन्ना तँ छी नहि, छी तँ घाट परक

---

[6] *माने एक तरहक कीड़ा, जे माटिमे रहि सभ किछुकेँ मटियबैत रहैए*

चेलबा, तँए किए ने ओहने सूतक जाल फेकी। रतनेसर काका बजला-

“बौआ, घरक आमद-खर्च की छह से बुझि रहलह अछि? अहीपर घरक उत्थान-पतनक जीवन-मरण अछि।”

सीनपर पकड़ल चोर जहिना अपन बुइधिक अन्तिम सूत्र दाउपर लगा बँचए चाहैए तहिना जुगुतलाल बाजल-

“अहाँ तँ अपने गारजनीक लोभसँ अपना हाथ-मुट्ठीमे सभकिछु रखने छी। बड़ माश्चर्य हमरापर रहैत तँ कहितौं ने जे बौआ सन्दूकक कुँजी लएह।”

जुगुतलालक विचार सुनि रतनेसर काका दिग्भ्रमित नहि भेला, विचारकेँ ढंगसँ पकैड़ तहियबैत बजला-

“बौआ, पिता-पुत्रक बीच ऑफिसक हाकिम वा आने-आन स्टाफ जकाँ एक-सँ-दोसर हाथ कुंजीक आदान-प्रदान नहि करैए, ओ परिवारक गति-विधिमे अपनाकेँ सन्निहित करैत अपने कुंजी अपना हाथमे लऽ लइए। तइले तोरा मनमे एते दुख किए छह। मुदा कुंजियोक तँ अपन-अपन जगह अछि। एके कुंजीसँ ने सभ ताला खुजैए आ ने सभ तालाक कुंजीए सभकेँ रहिते छइ।”

अधमरू साँपकेँ जहिना कखनो फुफकार कटैक वायु जगै छै आ लगले चोटसँ चोटाएल दर्दसँ कराहि सेहो उठै छै तहिना जुगुतलालक मनमे सेहो उठए लगल। आजुक जे परिवेश बनि रहल अछि ओ दिशाहीन बनि रहल अछि, तेकर कारण सभसँ पैघ अछि जे मनुक्खमे मनुक्खपनक कमी जे दिनानुदिन बढ़ि रहल अछि। मतिछिन्नू जकाँ जेना-जेना जिनगीमे सुविधा आबि रहल अछि तेना-तेना भोगक भूख बढ़ि रहल अछि। सोभाविको अछि। मुदा तेकरा जीवनसँ हटि जँ आँकल जाए तखन आक्रोश जगिते अछि। अखन

तक जहिना जीवनक जड़ि तक पकैड़ नेने अछि जे मशीने जकाँ लोकक बुधियो तेज होइ, मुदा मनुक्खक संग मनुक्खक संसार जुड़ल अछि, तेकरो ने देखब अछि। भरि रौतुका सपनामे सात सीमा मशीनक निर्माणमे टपि जेबइ, मुदा मनुक्खक जे जाल अछि, ओकरो ने नजैरमे रखैत देखबै। ईहो ने देखबै जे मनुक्खकेँ अपन स्वतंत्र देशक स्वतंत्र विचारो आ बेवहारो कोन सीमा धरि पहुँचल अछि। जीवन-मरणक, जीवन-मरणक माने ऐठाम अछि अधमरू जीवनसँ, बीच पड़ल जुगुतलालक अक-बक बन्न भऽ गेल। मुदा विचारोक तँ अपन प्रवाह छै, जइमे सइयो कि हजारो छिन्ना अछिए। छिन्ना कटैत मतिसून जकाँ जुगुतलाल अपन पिताकेँ कहलक-

"अहाँ हमर की केलौं अछि।"

जुगुतलालक रोड़ भेल, जहिना कोनो दालि रोड़सँ भूजि बनौल जाइए, होइए, तहिना रतनेसर कक्काक मनमे उठलैन मुदा लगले अपने विचार रोकलकैन। रोकैत विचार देलकैन जे हर मनुक्खक अपन-अपन सीमा अछि, धरतीपर जन्म लेला पछाइत लोक दुनियाँ अपन अनुकूल अपना अपन दुनियाँ गढ़ैए। तइमे जे जेहेन कलाकार रहल ओकर दुनियाँ ओहन कलाकारीसँ सजल होइए, जइले अनेरे अपन जीवन रोकि जंजालमे पड़बो उचित नहियेँ अछि। मुदा अपने मन माने रतनेसर काकाकेँ दोसर मन चेतबैत कहलकैन, किए ने जुगुतलालकेँ अपने दुनियाँसँ परिचय करा दिऐ। यएह सोचि रतनेसर काका बजला-

"बौआ, पढ़ल-लिखल नवजुवक छह, समाजमे केकरो नीक कएल नइ हुअए तँ अधलो नहियेँ करिऐ। ओना, जेहेन ओकाइत रहए तइ अनुकूल नीक जरूर करैत चली। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे कहह जे घरक खर्च बेकतीगत तोरापर केते अछि, आ

जेकरा तूँ परिवार बुझै छह तइमे केते खर्च छह। ई केतएसँ औत? तोहीं कहह।”

आजुक जेहेन सामाजिक परिवेश बनि रहल अछि ओ संक्रमणक स्थितिमे अछि। मुदा तइमे बहुत बेसी दूरीक सीमा बनि रहल अछि। माने ई भेल जे कोनो इलाका हुअए आकि कोनो गाम, ओकर अपन जे जीवन-शैली छै, ओइमे अपन क्रमिक विकासक परिवेश आ आजुक जे गामसँ लऽ कऽ साधारण कसबाक संग मध्यम बजार होइत, पैघ-पैघ महानगरक संग आनो-आनो देशक बीच लोकक बास भइये रहल अछि, तैठामक जे परिवेशक दिशा हएत ओ तँ नव सिरासँ मोड़ लेबे करत। तही अनुकूल जुगुतलाल बाजल-

“सभ अपन भाग-तकदीर लऽ कऽ जन्म लइए आ जीवन बितबैए।”

जुगुतलालक विचार सुनि रतनेसर कक्काक अपने मनमे उठलैन जे समाजक बीच परिवारक विचार एते कुत्सिततासँ भरि गेल अछि जे समसँ बिल्कुल विषम भऽ गेल अछि। मुदा रहबोक तँ अही समाजमे अछि। ओना, जुगुतलालक बात सुनि रतनेसर कक्काक मन भीतरे-भीतर हँसि रहल छेलैन जे वाह रे आजुक नव शक्ति.! रतनेसर काका बजला-

“बौआ, तोरा देखि दुख एकेटा अछि जे जहिना तोरा लोक बैसल देखि हँसैत हेतह तहिना ने हमरो दोखी बनबैत हएत।”

महींसक आगू जहिना बौसली बजौने खुशी होइए तहिना जुगुतलालकेँ सेहो भेल। करूआएल शब्दमे बाजल-

“कियो अपन करनीक फल पबैए।”

जुगुतलालक विचार सुनि रतनेसर कक्काक मन जहिना

हलसलैन तहिना तलसबो केलैन। हलसलैन ई जे अपने केलहा सभ तँ पबिते अछि मुदा तलसलैन ई जे अपनो काज तँ रंग-बिरंगक अछिए। सभ रंगक काजक फल एकेरंग हएत आकि सभरंग। मुदा बजला किछु नहि।

चुप-चाप अपन चुप्पी साधि रतनेसर काका अपन जीवन शक्तिमे उत्साह भरए लगला।

❑

शब्द संख्या : 3731, तिथि : 19 दिसम्बर 2020

समाजक भागे

कर्मदा नदीक घाटपर सभ साल कृत्तिका नक्षत्रक पहिल दिन मेलो लगैए आ नदीमे स्नान करैत कर्मफल बाबाक मन्दिरमे जलढार सेहो होइए। ओना, अपने अखन तक सुनितेटा छेलौं, गेल कहियो ने छेलौं तँए मनमे जिज्ञासा छेलएहे। तहूमे गामक केतेको गोरे गेलो छेलाहे। जे नीक-बेजाक चर्चा करिते छला। हुनके सभक मुहेँ जे सुनैत आबि रहल छेलौं तइसँ मनमे आरो खोद-वेद लगले छल।

ओना, जइ रूपेँ पहिलुका मेला सुनै छेलौं, माने आन सालक मेला, तइ रूपेँ ऐ सालक मेला झुझुआन छल मुदा मेला तँ छेलैहे। हँ तखन सुनलक हिसाबसँ झुझुआन छल मुदा देखलक हिसाबसँ पूर्ण छेलैहे। माने, छोट होइ वा नमहर मुदा सीमा अपन सभक अछिए। जखने कियो अपन सीमा पकैड़ ठाढ़ भऽ जाइए तखने ने ओकरा मनमे दुनियाँक झलक झलकए लगै छइ।

भोरुका बससँ जहाँ उतरलौं कि मनमे जिज्ञासा भेल जे एतेकाल ने कर्मदा नदीक रस्तामे छेलौं तँए मन ओमहर छल मुदा आब तँ गाम एलौं, तखन मन एमहर हेबे करत किने। जखने कियो गौंआँ भेटता कि गामक हाल-चाल बुझि लेब। संजोग बनल ओही बसकेँ पकड़ैले गिरिधारी भाय पहुँचल छला। गिरिधारी भायकेँ देखिते बजलौं-

"भाय, गामक की हाल-चाल अछि?"

ओना, बस पकड़ै दुआरे गिरिधारियो भाय अगुताएले रहैथ,

किए तँ बुझल छैन्हे जे लोकक तेते बढ़बारि भऽ गेल अछि जे बसमे जगहो भेटब कठिन होइते अछि। तहूमे नवका तूरक छोड़ा सबहक बस होइ कि ट्रेन, स्कूल होइ कि कौलेज, सभठामक रूतबे बदैल गेल अछि। अगुताएले मने गिरिधारी भाय बजला- "एक्केटा नवका समाचार मनानन्द कक्काक छैन।"

कहि गिरिधारी भाय बसक गेटमे घोंसिएला। मनानन्द कक्काक नाओं सुनि मन झनैक गेल। झनकैक कारण भेल जे गाममे हजारो लोक छैथ मुदा मुँह खोलि जेना मनानन्द कक्काक संग गप-सप्प होइए तेना दोसरक संग नहि होइए। दोसर गोरेक आशा ताकए लगलौं जे गामक जँ दोसर कियो भेटता तँ आगूक समाचार नीक जकाँ बुझब। ओना, मनमे ईहो होइत रहए जे केतबो लगक सम्बन्ध किए ने हुअए मुदा देहक दुख जे अछि ओ कियो केकरो बाँटि नहियेँ सकैए मुदा एते तँ बाँटिये सकैए जे लगमे बैस समयानुसार दबाइ-दारू आ पथ्य-परहेजक संग मनकेँ बहलबैत-फुसियबैत रोगक दर्दसँ हटा सकिते अछि। ओना, मनमे ईहो भेल जे जाबे गाममे नहि छेलौं ताबेक दोखियो तँ नहियेँ बनि सकै छी। फेर अपने मन कहलक जे दोखी-निरदोखी देखबैक दृश्य भेल, आन्तरिक तँ से नहि छी, तइमे तँ ओ सूत्रवत अछिए। तइ बीच अपनो बैग नेने गामक रस्ता पकड़ैक कोशिश करए लगलौं। तीनियेँ किलोमीटरपर गाम अछि, भेल तँ बीस-पच्चीस मिनटमे पएरो चलि जाएब। जखने गामक सीमामे पएर देब कि अनेरे ने कियो-ने-कियो भेटबे करत। गामक सभ समाचार बुझि लेब। तइले अनेरे मनकेँ हतोत्साहो करब अगुताइ हएत, भेल तँ बीस-पच्चीस मिनट। तहूमे कियो रस्तेमे भेट जाएत तँ आरो कम।

भिनसुरका समैयक बसक यात्रा तँए मन ठण्ढा गेले छल। तैपर बसक हवा लगलासँ देहो पसीज गेल छल, तँए चाह पीबैक इच्छा आरो बेसी भेल। चाहक दोकानपर गेलौं कि गामेक

मुंगालालकेँ देखलौं। मुंगालाल महींस पोसने अछि, जे चाहक दोकानदारे हाथे दूध बेचैए। मुंगालालकेँ पुछलिऐ-

“मुंगा भाय, गामक की हाल-चाल अछि, तीन दिनक पछाइत तीर्थसँ घुमलौं हेन। रस्तेमे छी।”

ओना, मुंगालाल अपन जवाब नहि दऽ प्रश्ने पुछि देलक-

“कोन तीर्थ गेल छेलौं?”

मुंगालालक प्रश्न सुनि मन दुविधामे पड़ि गेल जे पहिने ओकर प्रश्नक जवाब दिऐ आकि अपने प्रश्न दोहराबी। विचारकेँ समटैत बजलौं-

“कर्मदा स्नान करए गेल छेलौं।”

संजोग नीक बैसल, जहिना अपने बजलौं तहिना मुंगालालो अपन जवाब दैत बाजल-

“गामक सभ ठीके अछि मुदा एकेटा गड़बड़ अछि।”

झाँपल-तोपल विचार मुंगालालक छल तँए जिज्ञासा आरो उग्र भेल। बजलौं-

“की गड़बड़, मुंगा भाय?”

मुंगालाल बाजल-

“मनानन्द काका अपने मरैले तैयार छैथ।”

मुंगालाल भाइक विचारक कोनो भाँजे ने लगल। चारिमो दिन दुनू बापूत–मनानन्द काका आ अपने–एकठाम बैस एक-डेढ़ घन्टा गप-सप्प केने छेलौं, कहाँ कोनो भनक बुझि पड़ल। आन जकाँ मनानन्द काका थोड़े छैथ, ओ तँ नीक जकाँ बुझै छैथ जे सभ बेकती सुख-चैनसँ जीबैक इच्छा रखैए मुदा भेटै छै केते गोरेकेँ। जँ से भेटैत रहितै तँ अखुनका जकाँ अहिना सदिकाल कुकुर-कटौज होइत

रहैत। ओ तँ भेटै छै मनक खुशीसँ जे कर्मक संग जुड़ल धारा-प्रवाह दौड़ैत चलैए। जइसँ मनानन्द काका तेहेन प्रकृतक छैथ जे ग्रह-नक्षत्र जकाँ रसे-रसे मौसमक अनुकूल अपन जीवनक गति-विधि बनौनहि छैथ, तखन एते धड़फड़ा कऽ मरैक विचार केना कऽ लेता.?

ओना, मुंगालाल बाजल छल जे 'मनानन्द काका अपने मरैले तैयार छैथ' जे सुनि अपन मन तेना हलचला गेल जे विचार करैक ढंगे बदैल गेल। मुदा अपने यादास्त उग्र भेल जइसँ विचारमे सुधार भेल। चाह पीब दोकानपर सँ विदा होइत दोकानदारकेँ पाइ दिअ लगलिऐ कि मुंगालाल भाय बाजल- "बौआ जियालाल, ई अप्पन चाहक दोकान छी, पिसियौत भाए करैए। गरीब अछि। ओना, गरीबोक सीमा छै तइमे गामसँ भागल जाइत रहए ते कहलिऐ- बौआ रौ, अपन हाथ-पएर लाड़। अपन हाथ-पएर लाड़ि खाइक ई दुनियाँ छी। सालो भरि दूध देब गछि लेलिऐ, दोकान बनबैले एक हजार रुपैओ देलिऐ, अखन कहुना-कहुना तँ पाँच परानी नीक जकाँ गुजर करैए।"

मुंगालाल भाइक विचार सुनि अपनो मनमे विचार उठल जे किए ने एकटा गोटी अपनो लाल कऽ ली। बजलौं- "मुंगालाल भाय, अपन दोकान एकदिना कि सबदिना।"

मुंगालाल भाय बाजल- "भाय, सम्बन्धो एक दिना कि सबदिना होइए, ओ तँ सदा-सदासँ सदा-सदा धरि चलैत रहैए।"

ओना, गामक अधखिज्जू समाचारक संग चाहो मनकेँ ठण्ढैबते छल तैपर सँ मुंगालाल 'अपन दोकान' कहि अपन परिचय जे देलक ओ विचार[7]क भूमिकेँ तेना छुबि लेलक जे आरो मन ठण्ढा

[7] *मनक विचार*

गेल। ओना, अपन मन पानो खाइक छल, मुदा पानबला तखने आबि दोकान खोलि धूप-दीप करए लगल तँए अँटकैक मन रहबे करए। बजलौं-

“आब तँ दोकान नीक जकाँ चलै छै, दूधक दामो लइ छहक?”

चौक-चौराहापर बइसैबला मुंगालाल, बाजल-

“ई घर उ घरमे कोनो अन्तर अछि। ईहो कि कोनो आन छी। दुनू परिवार चलैत रहह। हमरा सबहक जीवने केतेटा अछि।”

तैबीच पानबला सेहो धूप-दीप करैत अपन आसनपर बैस सड़क दिस ताकए लगल। पान खा जखन अपन गामक रस्ता धेलौं कि पुन: मनानन्द काका मनमे नाचि उठला। मोन पड़ि गेल चारिम दिनक गप-सप्प। एक तँ अपनो इच्छा बहुत दिनसँ छल जे कर्मदा स्नान करी, तैपर चारिम दिनक मनानन्द कक्काक विचार मनकेँ आरो उत्प्रेरित कऽ देलक तँए मेलो देखए आ स्नानो करए गेल छेलौं। काका कहने छला जे अपना ऐठाम सेहो एकटा कर्मनासा नदी छल, ओ भरिसक भथान भऽ गेल, किए तँ आब रेडियो-अखबारमे नहि अबैए। फेर अपने मन कहलक जे मिथिला तँ मिथिला छी, ऐठाम तेते धार-धूर अछि जे एकाएकी गनैयोमे आधा घन्टा समय लगि जाएत, आब लोककेँ ओते पलखैत छै जे धार-धूर गनै पाछू लगल रहत। आब तँ धारोक गिनती समूहेँमे हुअ लगल अछि तँए भरिसक कर्मनासा धारक गिनती कोसी-समूहमे भऽ गेल अछि कि अधवारा समूहमे से भाँजपर चढ़िये ने रहल अछि।

आधा किलोमीटर आगू बढ़लौं कि पुरनी भौजीकेँ हाटपर जाइत देखलयैन। मनानन्द कक्काक समाचार मनकेँ हलचलैबते छल, बजलौं- “भौजी, अखन अहाँक यात्रापहर छी तँए खोंटका नहि

बुझब। मनानन्द कक्काक की समाचार छैन?”

ओना, पुरनी भौजी सोझमतिया लोक छैथ। साठि बर्खक उमेर छैन मुदा अखनो बुढ़-पुरान स्त्रीगणो लग आ मर्द लग तँ सहजे मुँह झाँपिये कऽ केकरो संग गप-सप्प करै छैथ। पुरनी भौजी मुँह झँपनहि बजली-

“मनानन्द काका अपने मरैले तैयार छैथ, दस गोरे घेरि कऽ बैसल छैन जे जमदूतकेँ अबै ने देब।”

पुरनी भौजीक गप सुनि हँसी लगि गेल जे पुरनी भौजी सन लोक गाममे अखनो छथिए। मनमे उठल जे पुरनी भौजीकेँ कोन रूपेँ कहल जाए। ओ थोड़े बुझती जे मरण-जीअन मनुक्खक अपन हाथक सोल्होअना नहि तँ बारह-चौदहअना छीहे। तैठाम यमदूत की? एक तँ अपन मनक जिज्ञासा सेहो अगुतबै छल तैपर पुरनी भौजीक बात आरो मनकेँ हलचला देलक। पुछलयैन-

“हाटपर जाइ छी?”

ले बलैया.! हाटक नाओं सुनिते पुरनी भौजी भूत जकाँ बकए लगली-

“आब कि कोनो हाट-बजार खगल लोकक रहल, आब तँ ओ पाइबलाक हाट भऽ गेल। ने तँ जइ सीम-भट्टाकेँ कौआ-कुकुर नइ पुछै छल से केतौ साठि रुपैये बिकाए.!”

रच्छ रहल जे बकैत भौजी आगू दिस डेग उठौली। अपनो घरमुँह विदा भेलौं। चारि डेग आगू बढ़लौं कि धक-दे मनमे उठल जे एहनो सम्भव ऐ दुनियाँमे अछिए जे कियो अपने मरैले तैयार हएत.? सभ जीबए चाहैए। आरामसँ गीत-नाद सुनए चाहैए, सएह ने भेल सुखक जिनगी। मुदा गीत-नाद सुनैत-सुनैत तँ आब कान बहीर भऽ गेल, रातिमे सुतब कठिन भऽ गेल अछि। चौबीसो घन्टा दस रंगक

गीत कानमे पड़िते रहैत अछि। हम ई नहि कहै छी जे लोकक मनकेँ तेना ध्वनि-प्रदूषणसँ उड़ौल जा रहल अछि जे सभ अपन-अपन टाँग मोड़ि अकासमे चिड़ै-पक्षी जकाँ उड़ए चाहैए। मुदा जखन रावणोकेँ सेहन्ता लगले रहि गेलैन जे धरतीसँ स्वर्गमे सीढ़ी लगैबतैथ। तखन कि केतेक हएत से तँ मने-मन ने सभ बुझब। आगू-पाछू किछु बुझिये ने पेब रहल छेलौं जे मनानन्द कक्काक सम्बन्धमे सभ एना किए बाजि रहल अछि। दू डेग आगू बढ़लौं कि मनानन्द कक्काक एकटा पुरनका बात, माने पहिलुका बात मोन पड़ल। मोन पड़ल ई जे एक दिन बाजल रहैथ- 'जीवन-मृत्युक बीचक सीमा ले सभ दिन दुनूक बीच मिलानो होइए आ झगड़ो-लड़ाइ होइते अछि, तेही बीचक रग्गड़मे ने जीवन सेहो अछि।'

ओना, जइ दिनमे ई विचार काका कहलैन तइ दिनमे हूँहकारी भरि अपनाकेँ बँचा लेने रही, माने जेना सोल्होअना बुझि गेलौं तहिना मुड़ी डोला मन भरि देने रहिऐन। मुदा जहिना हनुमान चालीसा सभ बच्चेमे सीख लइए आ बुढ़ो भेला तक ओकर रहस्य नहि बुझि पबैए तहिना अपनो भेल। कक्काक विचारक पाँती तँ रटि नेनहि छेलौं, मुदा सोल्होअना अर्थ अखनो धरि नीक जकाँ नहियेँ बुझि पेलौं अछि।

तैबीच गामक ओइठाँ पहुँच गेलौं जइठाँसँ अपन घर आ मनानन्द कक्काक घर दिसक रस्ता फुटैए। बीच रस्तापर मोड़ अछिए, ओही मोड़पर ठाढ़ भेल अँटकाव लगि गेल। अँटकाव ई लगल जे अपना ऐठाम पहिने जाइ आकि मनानन्द कक्काक ऐठाम जा पहिने देखिऐन?

मोड़पर ठाढ़ असगरेमे विचार करए लगलौं। हुनका घर दिससँ किनको अबितो ने देखिऐन जे टटका समाचार भेटैत। हुनका ऐठाम जेबाक कारण बनैत रहए जे रस्ते-रस्ते जे सुनलौं से तँ एते सत्

अछिए ने जे अखन तक मनानन्द काका जीवित छैथ। जखन गामक सीमामे पहुँच गेलौं आ तैबीच जँ मृत्यु भऽ जेतैन तखन तँ जीवितमे अन्तिम बात सुनैक समय तँ छुटिये जाएत किने। फेर लगले हुअए जे तीन दिनपर गाम एलौं हेन तँए पहिने परिवारकेँ देखिऐ, तइ संग ईहो शंका होइत रहए जे कर्मदा स्नानक सनेस संगेमे अछि जे ओ नेनहि जँ मनानन्द कक्काक ऐठाम जाइ आ तहीकाल प्राण छुटि जाइन तखन तँ जेते ओइ सीमामे रहत से सभ ने छुबा जाएत। सनेस जखने छुबाएत तखने ने ओकर सनसपन समाप्त भऽ जाएत। फेर हुअए जे आब लोक छूत-अछुतक विचार थोड़े करैए, जहिना गहनदान माँगबक विचारक उठाब भऽ गेल तहिना ने ग्रहन लगला पछाइत नहेबाक उठाब सेहो भइये गेल। तँए कहब जे ग्रहन लागबे बन्न भऽ गेल से तँ नहियेँ भेल अछि।

मोड़पर ठाढ़ भेल करीब आधा घन्टा समय बीत गेल मुदा जखन ओमहरसँ, माने मनानन्द कक्काक घर दिससँ, किनको अबैत नहि देखलौं तखन अपने मने-मन विचारए लगलौं तँ बुझि पड़ल जे अपने ऐठाम जाएब पहिने नीक हएत। ओना, आँखि-कान्ह उठा-उठा अकाइनतो रहलौं आ तकतिहान सेहो करिते रहलौं। अकानए लगलौं जे जँ मनानन्द काका अन्तिम क्षणमे रहितैथ तँ गौंआँ-घरूआ ने मृत्युक पछाइत कनैए मुदा परिवारो आ परिवारसँ पहिने तँ बेटी-जाति कनिते अछि। सेहो ने सुनि रहल छी। फेर अपने मन कहलक जे अखन तक जेते सुनने छेलौं, माने मनानन्द कक्काक सम्बन्धमे, तेकरा अनठा देब जे किछु सुनबे ने केलौं। गाम-समाजमे होइतो अहिना ने अछि जे सुनला पछातियो लोक कहैए जे नहि सुनलौं। ओना, मन कने धकमकाएल, धकमकाएल ई जे आन तँ आन भेल, मुदा अपने तँ अपन भेलौं, तैठाम जँ झूठ बाजब सेहो तँ गड़बड़ अछिए। घड़ी दिस जखन नजैर देलौं तखन बुझि पड़ल जे आधा

घन्टासँ बेसी गामक सीमामे प्रवेश केना भऽ गेल आ अखन तक ईहो ने विचारि पेलौं हेन जे पहिने केतए जाएब। अपनेपर ग्लानि हुअ लगल जे समैयक मूल्यकेँ अखनो धरि नहि चीन्हि पेलौं हेन। बिना मतलबक विषयमे पड़ि दिनक-दिन समय बहि रहल अछि आ अपने घाटपर ठाढ़ भेल मुँह तकै छी। मनक वेग जगल। घर दिस विदा भेलौं।

पत्नीकेँ जेना पहिनहि भनक लागि गेल छेलैन तहिना मनमे खुशी छेलैन्हे। भनक लगल छेलैन जे आधा घन्टा पहिनहि ने गाममे प्रवेश कऽ चुकल छेलौं। घरपर पहुँचते पत्नी बिहुसैत बजली-

“अपना सभक परिवारमे जँ कियो तीर्थस्थानसँ अबै छैथ, हुनका ले बरीक ओरियान होइ छैन। ओना, बरी बना कऽ हमहूँ रखने छी मुदा बुझल तँ नहि छल जे अहाँ कहिया तक घुमब तँए जलौल नहि अछि।”

ओना, बाहरसँ तीन दिनपर एने कनी-मनी गामोसँ आ परिवारोसँ अनभुआर जकाँ भइये गेल रही तँए पहिने मुँह-मिलान करब जरूरी छेलएहे। ओना, मन एते पत्नीपर लहैरिये गेल छल जे जइ मनुक्खकेँ अखन तक एतबो ने बुझल छै जे बरी तँ तेबखा दालि नइ छी जे लगले अँठि जाएत। बरी जेते बसियाइए तेते कोमलो आ सुअदगरो बनिते अछि। मुदा से बजैसँ परहेज करैत अनठेकान झटहा जकाँ अपनो विचारक झटहा फेकलौं-

“जे मनमे फुरए सएह करू। हमरा दिससँ कोनो आपत्ति नहि।”

जहिना अपने खोंचगरे झटहा फेकने छेलौं तहिना पत्नियोँ बिनु छीलले झटहा फेकली-

“पहिने चाह पीब आकि किछु खा कऽ पानि पीब?”

अखन तकक जे रस्ताक झमार मनमे छल ओ धीरे-धीरे उतरए लगल। जइसँ कर्मदा स्नानक विचार असथिर होइत-होइत मनमे निच्चाँ-मुहेँ बैस रहल छल आ परिवार-गामक विचार तरसँ ऊपर आबि रहल छल। बजलौं-

"मनानन्द कक्काक की समाचार छैन?"

अखुनका जे वाता-वरणीक परिवेश बनि गेल अछि ओ देखितो आ सुनितो छीहे जे एक दिस दर्जनो लॉडस्पीकरसँ सीता विवाहक सोहर मिथिलाक होइए तँ दोसर दिस कबीर बाबाक निर्गुणक उदासी सेहो होइते अछि। लोक की सुनैए आ की विचारैए से तँ लोके ने बुझत।

तैबीच पत्नी चाह नेने एली। ओना, अपन मन टाँगल छल मनानन्द काकापर, तँए पत्नीसँ किछु गप-सप्प नहि करए चाहै छेलौं। मुदा आएल तँ छेलौं तीर्थसँ तँए तीथंकर बनि मुँह मोड़ि चुप रही सेहो तँ उचित नहियेँ भेल। आधा गिलास चाह पीला पछाइत मनमे उठल- जहिना अपन परिवारक दर्शन सभ दिन करै छी तहिना ओ–दर्शन–कर्मदा नदीमे स्नान केलाक पछाइत आरो पवित्र बनिते अछि, से बात पत्नीकेँ बुझा दिऐन। मुदा लगले मन कहलक जे पत्नियोँ तँ पत्नियेँ छैथ, नानीसँ जे सात-आठटा गीत सीखलैन, तेतबे अखनो अबै छैन। फगुओमे सोहरे गबै छैथ आ फागुनमे ते सहजे गबिते छैथ। ओ की बुझती जे काजक परिमरजन करैत चलब जिनगीक कर्मदा नदीक स्नान छी।

चाह पीबैत-पीबैत मन हल्लुक भेने आँखिक पीपनियोँ झलफलए लगल। एक तँ तीन दिनक यात्राक झमारल देह छल जे थकानसँ चुरम-चूर छेलएहे, तैपर मन सेहो असकताइत रहए। बजलौं- "जलखै-तलखैक ओरियान छोड़ू, भानसे करू। नहा कऽ

खाएब आ अराम करब।”

तीर्थक प्रभावे आकि अपन पत्नीत्वक विचारक प्रभावे पत्नी बजली-

“देहमे दमे ने अछि। ने तँ तेल लगा देहकेँ तेना खुनि दइतौं जे सब थकान खुनिते-खुनिते मेटा जाइत।”

पत्नी ठीके बाजल छेली। देहक वजन 26 किलो मात्र छैन, मुदा विचारक प्रवाह मनकेँ सिक्त बना देलक। हूबा करैत बजलौं-

“अखन देहक खुन-खान करबै-जोकर थोड़े भेलौं अछि। समयानुसार चलैक संगी बनल रहू।”

संजोग नीक भेल। पत्नी बातकेँ बतंगर बनाएब छोड़ि अपन ओरियानमे लगि गेली।

जहिना उत्साहित विचारक देह आगू बढ़ैले तनफन करैए तहिना डराएल-थकाएल सेहो हतोत्साहित भऽ पाछू हटैले तैयार नहि होइए सेहो बात नहियेँ अछि। सेहो होइते अछि, नहि तँ जे भँट्टा[8] एकठाम परहेज होइए ओ दोसरठाम किए ने होइए? मन अपने बिनु तेलक गाड़ी जकाँ एकाएक अँटैक कऽ रूकि गेल। एक तँ ओहुना मनानन्द काकासँ भेँट करब बोझ जकाँ माथपर छेलएहे, तैपर यात्राक थाकैन सेहो आँखिकेँ दबनहि छल, मन आरो असकता गेल। भाय एक गरुकेँ बहत्तैर आशा होइए। ऐठाम गरु माने गर लगौनिहार नहि बुझब। अपने मनमे मनानन्द कक्काक पैछला विचार, माने पूर्वमे कहलाहा विचार धाँइ-दे जगि गेल। विचार मोन पड़ल- मनानन्द काका केता दिन बाजलो छला आ अखनो बजै छैथ जे एक दिनक थाकैन एक घन्टा आरामक बरबैर होइए। तैठाम अपन तीन

---

[8] *उजरा भँट्टा*

दिनक थाकैन अछि तँए तीन घन्टा आराम करैक अपनो गर अछिए। विचार उठिते मनमे जेना चैन आएल। विचारे ने विचारसँ ऊपर उठि विचारकेँ विचारैक विचारो दइए आ शान्तियो तँ दइते अछि।

पत्नीकेँ तगेदा करैत बजलौं-

“दस मिनटमे हम तैयार भऽ जाइ छी, माने स्नान तक करि कऽ, अहूँक समय बनहा गेल। खाएब आ भरि मन पहिने सुतब पछाइत जे हएत से बुझल जाएत।”

जहिना अपने बजलौं तहिना पत्नियोँ लगले सूरे उत्तर देली-

“एतबो ने धीरज अछि अल्लू कि कोनो भाँटा छी जे एके भापमे सीझ जाएत। तहिना केरौक दालि छी, कोनो कि कुरथी-तेबखाक दालि छी जे घोटिते-घोटिते सीझ जाएत। जखन खेबेक अछि तखन एते अगुताइये किए अछि।”

पत्नीक बातक उत्तर मनमे अनेको उठल मुदा काजक बेर लोक किरानियोँकेँ थानाक बड़ाबाबू जकाँ ‘सर-सर’ नहि कहैए सेहो तँ कहिते अछि। चुपचाप मन मारि शान्त भऽ गेलौं।

तीन बजेमे नीन टुटल। अपन सभ बुझलाहा, माने एक दिनक थकान एक घन्टाक आरामक बरबैर, सुतले-सुतल चलि गेल। मुदा जे गेल से गेल, आब जे बँचल अछि तेकरो तँ समहारी। ओछाइनपर सँ उठि कलपर गेलौं। रस्ते-रस्ते पत्नीकेँ कहलयैन-

“मनानन्द काका ऐठाम जाएब अछि, तँए कनी जल्दी चाह बनाउ।”

अपनो चाहक बेर भऽ गेल छेलैन कि की, जहिना बजलौं तहिना पत्नी चाह बनबए लगली। कलपर सँ आबि लूँगी बदैल जाबे धोती पहिरलौं कि ताबे पत्नियोँ चाह नेने पहुँच गेली। हुनका बुझले छैन जे मनानन्द कक्काक विचारक वनमे जखन फँसि जेता तखन

दिन-रातिक कोनो होश रहतैन। तँए बजली- “बेसी अबेर नइ करब।”

ओना, पत्नीक विचारपर मन तरेंग गेल। तङ्गक कारण भेल जे जखन देश-दुनियाँक गप-सप्प नइ करब तखन जिनगीए की भेल। अनेरे तखन बीचमे पत्नी किए समयपर चोट करै छैथ। मुदा अपन एकमुँह विचार दिस अपनाकेँ मोड़ि जल्दी-जल्दी चाह पीलौं। चाह पीब बिना पूब-पच्छिम तकनहि मनानन्द काका ऐठाम विदा भेलौं। घरसँ निकैलते मनानन्द काकापर नजैर पहुँच गेल। अलबेला लोक समाजमे अखनो मनानन्द काका छैथ। समाजक बुनियादकेँ नजैरमे रखि, मनुक्खक बुनियादक विचार सदिकाल कहबो करै छैथ आ करबो तँ करिते छैथ। नहि तँ समाजोक आ परिवारोक जे परिवेश बनि गेल अछि, माने बिल्कुल विपरीत, जे जैठाम बेटीक बिआह समाजक काज मानल जाइ छल, तैठाम माल-जाल सदृश बिकरी-बट्टा हुअ लगल अछि। जे विचार समाजमे कहियो सिरचढ़ छल आइ ओ पएरोक निच्चाँ उतैर रहल अछि। लोक लाज सहजे मजाक लाज बनियेँ गेल अछि। तैठाम मनानन्दे काकाकेँ बलिहारी दिऐन जे अपन विचारपर घरक बरेड़ीक खुट्टा जकाँ ठाढ़ छैथ। अखन तक जे रस्ते-रस्ते सुनने छेलौं ओ धीरे-धीरे मनसँ अन्धविश्वास जकाँ प्रत्यक्ष होइत मेटाए लगल।

दरबज्जापर मनानन्द काका बैसल छला। चारू कात पान-सात आदमी घेरि कऽ सेहो बैसल छेलैन। ओना, सभ बुझितो छथिए जे मनानन्द कक्काक खाँटी विचारक जियालाल छी, तँए पहुँचिते एकाएक सभ उठए लगला। ओना, कनी फरिक्केमे रही तखन सुनैत रही जे मनानन्द काका हुनका सभकेँ बुझा रहल छैथ जे बौआ अपना सभ पचहत्तैर बर्ख पूर्व स्वतंत्र भेलौं। अखन तेसर पीढ़ी चलि रहल अछि। स्वतंत्र जीवनक केते दूर तक एलौं हेन से तँ अपन-

अपन सभ अपने ने विचारो करब आ एक-दोसरसँ विमर्शो करब। ओना, हमरा लगमे पहुँचैत देखि मनानन्द काका सेहो अपन मुँह थोड़ेक दाबि लेलैन आ अपनो अपन दुनू कान खुलल रहितो बन्न केने रहलौं, जेना किछु सुनबे ने केलौं। ओना, ई किए कही जे तइसँ पहिने ईहो बात बजले हेता जे अपन बाबाक समैयक परिवार आ अखुनका अपन परिवारकेँ जँ ढंगसँ मिला देखब तँ सभ किछु सोझामे आबिये जाएत। मुदा से अखन नहि। अखन एतबे जे जखन मनानन्द कक्काक चेहरा आँखिक सोझमे पड़ल, तखन अपन पैछला सभ सुनल अन्धविश्वासे जकाँ झूठ बुझि पड़ल। मुदा पुरनी भौजीक बात 'यमराजसँ बँचबैक लेल, से सत् बुझि पड़ल। किए तँ लगमे पान-सात आदमी बैसल रहबे करैन। पुरान विचारक लोक पुरनी भौजी छैथ, वेचारी किए बुझती जे कोनो विचारमे तखन प्रवाह अबैए जखन ओकर समाजीकरण होइए। समाजीकरण होइते प्रवाहित होइए, किए तँ ओइ नव-नव गति-विधिमे शक्ति संचार करैत रहैत अछि।

लगमे पहुँचते बजलौं- "काका.! गोड़ लगै छी, नीक यात्रा रहल।"

अपन विचारक प्रवाहमे मनानन्द काका एकसिरा भँसिया गेला। एक सिरा ई भँसिऐला जे असीरवाद देब पाछू पड़ि गेलैन आ कर्मदा नदीक प्रवाह दिस बहि गेला। कर्मदा नदी आ नारायणी नदी एक्केठाम कनी हटल-हटल अछि। अनभुआर लोक कखनो-काल धोखामे पड़िये जाइ छैथ जे कर्मदा नारायणीए छी आ नारायणियो कर्मदे छी। ओना, अपना बुझल अछिए जे जखन मनानन्द काका कोनो प्रवाहमे भँसियाइ छैथ तँ चौरीक केशौर जकाँ ओकर पन्ना पकैड़ खुनैत-खुनैत केशोरो ताकि लेबे करै छैथ।

साँस भरि बजला पछाइत मनानन्द काका निसाँस छोड़ि

बजला- “जीयालाल, गामक लोकक जे चालि-ढालि देखै छी तइसँ लाजे होइए जे मरि जाइ।”

मनानन्द कक्काक विचार सुनि बुझि पड़ल जे कोनो विचारक कचोट मनमे लगल छैन। ठेलागाड़ी जकाँ पाछूसँ ठेलियबैत बजलौं-

“चालि बिगड़ल अछि गामक लोकक आ मरि जाएब अहाँ। जेहो लोक सुनत से की कहत।”

मनानन्द कक्काक मनक विचार तेना भीष्म पितामह जकाँ वाणसँ बेधाएल बुझि पड़ि रहल छेलैन जेना चारू दिस अराजक-राज पसैर रहल हुअए। मनानन्द काका अपन भार फेकैत बजला-

“जीयालाल, जे लोक-लाजकेँ ग्लानि बुझि विचारक पक्ष लेता सएह ने हमर विचारो ग्रहण करैत गहनदान बँटता। मुदा से सुननिहार अछि केते।”

सह दैत बजलौं- “सैहटा किए सुनता, जे नहियोँ सुनए चाहता सेहो नइ सुननिहार बनैले सुनबे करता किने।”

ओना, आँखि उठा मनानन्द काका चेहरापर जरूर देलैन, मुदा बजला किछु नहि। मनानन्द कक्काक विचार सुनि मन तेना कलैस गेल छल जे अपने मुँह फुटि पड़ल- “काका, समाजक भागे अहाँ जीब रहल छी। भलेँ ओ जइ नजैरिये देखए।”

मनानन्द काका निरुत्तर भेला कि नहि भेला मुदा विचारक जड़ि दिस नहि बढ़ला सेहो बात नहियेँ अछि, से बढ़बे केलाह। मुदा बाजबपर रोक तँ लगले छैन।

❑

शब्द संख्या : 3338, तिथि : 25 दिसम्बर 2020

बाबा हाथक कोदारि हल्लुक

मनमथपुर एकटा गाम जइमे आने गाम जकाँ भिन्नता अछि। माने आन गाममे जहिना आपसी भिन्नता रहैए तहिना मनमथपुरोमे अछिए। तँए ई कहब जे कोनो गाममे एकरूपता नहि अछि आकि मनमथेपुरमे नहि अछि सेहो बात नहियेँ कहल जाएत, सेहो अछिए। ओना प्राकृतिक बनाबटिसँ आन गामक अपेक्षा मनमथपुरमे किछु भिन्नता दोसरो रंगक अछि। ओ अछि जे आन-आन कोनो गाम एहेन अछि जे सोल्होअना उपराड़िये अछि। उपराड़ि भेल, ओहन गाम जइमे ने चौर-चाँचर अछि आ ने धार-धुर रहने जलकर बेसी अछि। तहिना कोनो गाम एहनो तँ अछिए जे सोल्होअना चौरे-चाँचर, जलकरे आ धारे-धुरसँ भरल अछि। मुदा मनमथपुर गामक अपन अलग गढ़ैन अछि। गढ़ैन ई अछि जे सौंसे गाम उपराड़िये अछि जइसँ ने कोसिकन्हा जकाँ अछि आ ने पनिगर गाम जकाँ अछि। आन गाम एहनो अछि जइमे कोनो गाममे सघन आबादी अछि आ कोनो-कोनो गाम कम आबादीबला सेहो अछिए। मुदा से मनमथपुरमे नहि अछि। ने कोसिकन्हा जकाँ पतराएल जनसंख्याबला गाम अछि आ ने उपराड़ि आन गाम जकाँ सघन अछि। खाएर जे अछि मुदा एते तँ मनमथपुरमे अछिए जेते लोककेँ बास चाही। जँ से नहि अछि तँ गामसँ फाजिल केते लोक कोनो गाममे रहैए आकि मनमथपुरेमे अछि।

पाँच साएसँ ऊपर परिवारक गाम मनमथपुर अछि, जइमे पचपनटा दियादी-परिवार रामलाल बाबाक सेहो छैन। सोहन आ

रोहन नामक दूटा बेटो छैन।

आन गामक अपेक्षा मनमथपुरमे डिग्रीधारी–पढ़ल-लिखल–लोक कम छैथ, मुदा बहुतो गामक हिसाबसँ कम नहियेँ छैथ। आन गाम जकाँ सेहो मनमथपुर नहियेँ अछि, किए तँ कोनो गाममे, जे गाम शिक्षामे अगुआ गेल अछि, प्रोफेसर बेसी अछि तँ कोनो गाममे डॉक्टर बेसी अछि, मुदा जे गाम ओइसँ पछुआएल अछि तइमे कोनो गाममे लोअर प्राइमरी स्कूलक शिक्षक बेसी अछि तँ कोनो गाममे किरानी बेसी अछि। मुदा से मनमथपुरमे नहि अछि। जे प्रतिशत पढ़ल-लिखलक सरकारी रेट अछि ओइ अनुकूल पढ़ल-लिखलक कंट्रोल मनमथपुरमे सेहो अछि। ओना, आन-आन गाम एहनो अछि जइ गाममे गर्ल्स स्कूल माने बालिका विद्यालय अछि, तइ गाम सभमे पढ़ल-लिखल महिलाक संख्याक प्रतिशत बेसी अछि आ जइ गाममे बालिका विद्यालय नहि अछि तइ गाममे पढ़ल-लिखल पुरुखक संख्या बेसी अछि। मुदा से मनमथपुरमे नहि अछि। मनमथपुर अपन तरीकाक गाम अछि आ ओ तरीका धरौलैन जिनगीलाल बाबा। ओ तरीका छी जे जहिना गाममे हाइ-स्कूल तक विद्यालय अछि, तहिना दुनू रंगक विद्यालय सेहो अछि। माने जहिना एकटा हाइस्कूल लड़काक अछि तहिना एकटा हाइ स्कूल लड़कियोक अछि। रहबो उचित, जनसंख्याक हिसाबसँ जहिना मिड्ल स्कूल लड़काक अछि तहिना लड़कीक लेल सेहो अछि। तैसंग एकटा विशेषता आन गामक स्कूलसँ सेहो अलग अछिए जे आन गामक अपेक्षा बेवहारिकता बेसी अछि। खाएर जे अछि, ओहन शिक्षण संस्थानक एते तँ गुण अछिए जे लड़का-लड़कीक अलग-अलग विद्यालय रहने ओहन विद्या मनमथपुरक बेवहारमे नहि आएल अछि जेना आन गामक स्कूल-कौलेजमे लड़का-लड़कीक आपसी विवाहक चलैत गाम-समाजमे एकटा नव समस्या उपस्थित

भऽ गेल अछि।

मनमथपुरक अपन इतिहास छइ। 1945 ई.सँ पूर्व एक्को गोरे सरकारी सेवामे नहि छला माने सरकारी नोकरी नहि करै छला, असहयोग आन्दोलनमे रेल-विभागक सहयोग देशक अग्रणीमे नीक रहल। बहुतो गोरे अपन सेवा छोड़ि, माने नोकरी छोड़ि देशक असहयोग आन्दोलनमे जुड़ि गेला। जुड़बे नहि केलाह बल्कि तेना रमि गेला जे दोहरा कऽ कियो नोकरी करए नहि गेला। वातावरण स्थिर भेला पछाइत नव वहाली रेल विभागमे भेल जइमे मनमथपुरक बिनु पढ़ल-लिखल सुमरितलाल नामक बेकतीकेँ जमालपुरमे दरमानीक पदपर वहाली भेलैन। सुमरितलाल लगसँ सरकारी नोकरीक शुरूआत मनमथपुरमे भेल। ओना, सरकारी सेवामे रहितो गाम-परदेश करैत-करैत सुमरितलालक परिवार बिनु ठेकानक बनियेँ गेल अछि, मुदा जे अछि गामक इतिहासमे तँ सुमरितेलालक नाम ने सेवाक पहिल पुरुखमे औत। ओना, अखन गामक स्थिति एहेन बनियेँ गेल अछि जे समतुल्य जकाँ बुझिमे आबि रहल अछि। समतुल्यक माने भेल औसतनक एकरूपता। आन-आन गाममे से नहि अछि। कोनो गाम एहेन अछि जइ गाममे सरकारी सेवाक (नोकरीक) प्रमुखता अछि तँ कोनो गाम एहेन अछि जइमे समाजसेवाकेँ प्रमुख बुझैए। सेवाक मजूरी लेलौं आ नहि लेलौं, दुनूक अपन-अपन महत तँ अछिए। ओना, एकरूपताक दोसरो कारण मनमथपुरमे अछि। दोसर कारण ई अछि जे जेना आन-आन गाममे किछु जाति विशेष एहेन छैथ जे धनसंग्रहक पाछू, माने जमा करिकऽ राखैक पाछू, लागल रहै छैथ। किए तँ हुनका सभसँ बेसी चिन्ता छैन जे हमर एगारहम पोता माने एगारहम पीढ़ीक पोता, केना चैनसँ सुख-भोग करत। ओना, बीचमे एकटा प्रश्न अछिए जे एगारहम पोता केना भेल? पोताक माने तँ बेटाक बेटा भेल, मुदा

सैहटा नहि, आगूक पीढ़ी सभ भेल। जहिना आगूक सभ पोताक श्रेणीमे औत तहिना पाछूक बाबासँ ऊपरक सभ बाबेक श्रेणीमे एबे करै छैथ।

मनमथपुरक समाजपर चाणक्य बाबाक प्रभाव बेसी अछि। जहिना चाणक्य बाबा कहलैन जे पुत्र कुपुत्र तँ किए धन संची आ पुत्र सुपुत्र तँ किए धन संची। ओ स्पष्ट बुझै छला जे हम संग्रह कइये कऽ रखि देब आ बेटा शराबी-जुआरी भऽ जाएत तखन ओ केते दिन ओइ जमाकेँ जिगिर बनल रहए देत। तहिना जँ बेटा सुपात्र भेल तँ कि ओ बापे भरोसे जन्म लेलक आकि अपना भरोसे। तखन पिताक संग्रहक की खगता अछि। तखन तँ भेल जे सभ अपन-अपन कालखण्ड-बीचक अधिकारी छी, अपन नैतिकताकेँ आगूमे राखि डेग बढ़बैत चलू।

मनमथपुर गाममे सभसँ नमहर परिवार रामलाल बाबाक छैन। रामलाल बाबाक परिवारकेँ ऐ दुआरे नमहर मानल जाइ छैन जे सात भाँइक भैयारीमे रामलाल बाबा सभसँ जेठो छथि आ अपन वंशगत पचास-पचपन परिवारक दियादी सेहो छैन्हे। जइ परिवारकेँ अपन परिवार रामलाल बाबा मानै छैथ। पचासो-पचपन परिवार अपन दियादीक अंग छिऐन। तइमे सात पीढ़ी ऊपर तकक सम्बन्ध जुड़ल छैन मुदा तीन पीढ़ीक खाढ़ी स्पष्ट बनल छैन। सात पीढ़ीक जे परिवार छैन ओ तीन भैयारीमे बँटल छैन, ओना वैचारिक आ वांशिक रूपमे बँटल जरूर छैन मुदा बेवहारिक रूपमे एकरूपते छैन। एके विधिसँ पाबैनियोँ-तिहार आ बिआहो-दानक चलैन सभ परिवारमे छैन्हे। चारिम पीढ़ी तक अबैत-अबैत आठ-दस टुकड़ी माने आठ-दस भैयारीक वंशक रूपमे बनि गेल छैन।

जहिना मनुक्खक जीवनक मूलभूत आवश्यकता अछि तहिना

परिवारो समाजक अछिए। ओही आवश्यकतानुकूल समाजो आ परिवारोक निर्माण भेल आ आवश्यकतानुसार तइमे मार्जित-परिमार्जित सेहो होइत आबि रहल अछि। जेकरा सनातन सेहो कहै छिऐ। खाएर जे अछि, रामलाल बाबा अप्पन जेतेक जिम्मा बुझै छैथ तेतबेकेँ निमाहैक पाछू अपसियाँत रहै छैथ। अपसियाँतो केना ने रहता, कखनो दिन-बेरागनक झगड़ा तँ कखनो नोनगर-बिनु-नोनगरक झगड़ा, माने भेल जे जइ पाबैनिक विन्यास नोनोसँ बनल अछि ओहू पाबैनकेँ कहियो दिन रोकि दइए तँ कहियो पतरे अपन पेतरा देखा दइए जे अखन बिआहक लग्न नहि अछि। मुदा समाजमे होइतो तँ अछिए। जजात लगौल खेतमे जहिना बिनु जजातक माने खढ़क अक्कावोन बिनु बजौनौं खेतमे चलि अबैए तहिना समैयोक गति सुवन-कुवनकेँ नहि आनैए सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो अनिते अछि।

एते तँ समाजो आ परोपट्टोक लोक रामलाल बाबाक क्रिया-कलापक चर्च करिते छैथ जे रामलाल बाबा विचार आ कर्मकेँ संग नेने चलै छैथ। भक्त जकाँ अपन भक्ति करै छैथ। अभाव-कुभाव अपना जगहपर अछि। तँए रामलालो बाबा अपनाकेँ ओते धड़फड़ाएल नहियेँ बुझै छैथ जे लोक हमर खूब बड़ाइ करए। बड़ाइ-छोटाइ तँ रणभूमिक विषय छी। तेकरा अहाँ बिनु चर्चे दीक्षान्तक सर्टिफिकेट चाहै छिऐ से केते उचित हएत।

अपन पचासो-पचपन परिवारकेँ एकसूत्रमे तेना सेरियाकऽ रामलाल बाबा समेटने छैथ, जेकरा देखि आनो-आन परिवारक लोककेँ सिहिन्ता होइ छैन। ओना, रामलाल बाबाकेँ अपन परिवारक लोकक बीच काजो आ बेवहारोमे अन्तर रहने विचारमे अन्तर होइते छैन। मुदा तेकरा ओ परिवारक सूत्रानुसार तेना निपटा लइ छैथ, जे आजुक दिनक ओ मिसियो भरि बाधा बनि आगूमे ठाढ़ नहि होइ

छैन।

रामलाल बाबार्कें सोचै-विचारैक अपन दिशा छैन, ओ ‘दर्शन’ कें सिर्फ दर्शनेटा नहि बुझै छैथ, आत्म-दर्शन सेहो बुझिते छैथ। कोनो विचारक दर्शनकें नीक जकाँ आत्मदर्शन केलाक पछातिये अपन डेग उठबै छैथ।

रामलाल बाबार्कें तीन दिनसँ खसल मन देखि सुनैना दादी मने-मन विचार केली जे आइ जरूर पुछबैन- ‘मन किए खसल अछि?’ तीन दिन रूकल रहबाक कारण सुनैना दादीक छेलैन जे पहिल दिन जखन पतिक मन खसल देखली तँ मने-मन विचारि लेली जे किसानी जीवनसँ जुड़ल परिवार अछिए तँए कखन बिढ़नी काटत कि मधुमाछी काटत आकि मच्छरे-माछी काटत तेकर कोनो ठीक अछि, तहूसँ तँ मुँह-कान चढ़िते-उतैरते अछि। मुदा दोसर दिन माने काल्हि, जखन देखली जे पतिक मन आइयो खसले छैन, तखन शंकाक बढ़ोत्तरी भेलैन। जइसँ बिढ़नी-मधुमाछीसँ नजैर आगू बढ़ि परिवारपर एलैन। परिवारजनक बीच जँ कोनो तेहेन बात भेल रहैत तँ अपने किए ने बुझितौं। परिवार कि कोनो बाँटल अछि। तहूमे भरि दिन अँगने-दलानक बीच रहै छी। जँ किछु भेल रहैत तँ कहा-कही वा रग्गड़-झग्गड़ सेहो भेल रहैत, सेहो ने देखै छी, तखन.?

लगले सुनैना दादीक मन बदललैन जे कोनो नीकक लक्षण रहैत तखन ने पुछबो नीक होइत। से तँ अछि नहि, तखन पुछबो केहेन हएत। अपने मन तेना सुनैना दादीक घिच्चा-घिच्चीमे पड़ि गेलैन जइसँ काल्हि तहीमे बीत गेलैन।

तेसर दिन सुनैना दादी रामलाल बाबार्कें पुछलैन- “तीन दिनसँ मन खसल देखै छी से किछु भेल हेन?”

सुनैना दादीक विचारकें रामलाल बाबा ओही कसौटीपर

तौलब उचित बुझलैन जइ अनुकूल हुनक जीवन-क्रिया छैन। ‘किछु भेल अछि?’ साधारण प्रश्न थोड़े छी। मुदा प्रश्नक अनुकूल पुछनिहारि जेहेन छैथ, तही अनुकूल जखन उत्तर भेटतैन तखने ने ओ सन्तुष्ट हेती। जँ साधारण ढंगसँ जवाब देबैन तँ पति-पत्नीक बीचक जे हृदय होइए से बुझि लेती। जँ गम्भीर विचारसँ कहबैन तँ बिनु बुझल जकाँ अनेरे काँइ-काँइ करए लगती। सेहो नीक नहियेँ हएत। मुदा विचारो तँ मनमे एहेन घाव केनहि अछि जे जीवन-मृत्युक बीचक सीमापर ठाढ़ छी। अखन तक अपन जीवनकेँ समाजक जीवन बुझै छेलौं मुदा परिवारमे एहेन विध्वंसक आगमन भऽ गेल अछि जे समाज कि जे परिवारोमे एकरूपता नहि रहत.! जहिना पूर्व-पुरुष कहने छैथ ‘मुन्डे-मुन्डे मति भिन्ना’ तइमे मिसियो भरि कमी नहि रहत। तही चिन्तासँ रामलाल बाबाक मन दबाएल रहैन जेकरा खसल बुझि सुनैना दादी बाजल छेली।

विचारसँ सुनैना दादीकेँ आकर्षित करैत रामलाल बाबा बजला-

“जखन नमहर परिवारमे छी तखन किछु-ने-किछु दब-उनार बीचमे होइते रहत, तइले जँ कनी मन ओछे भऽ गेल ते की हेतइ।”

पतिक विचार सुनि सुनैना दादीक मन जेना तृप्ति भऽ गेलैन। बजली-

“जखन चलै-फिड़ैबला देहो अछि आ धरतीसँ अकास धरि पसरलो छीहे, तखन तँ कखनो काँटो-कुश गड़बे करत आ कखनो पानियोँ-पाथरक झाँट लगबे करत किने।”

पत्नीक विचारमे सह दैत सहिआरि कऽ रामलाल बाबा बजला-

“मनुक्खक देह तँ ओ रत्न छी जेकरा पबैले देवतो सभ

ललाइत रहला अछि। केत्ता बेर समुद्रो मथन करबो केलैन आ कइयो रहले छैथ। तेहेन रत्न जखन अपने अछि तखन जे अनेरे चिन्ता करब तँ बिनु चिन्ताक लोके केते बँचत। मुदा अखन ई सभ छोड़ू, अहूँ अपन जीवनक वनकेँ देखू गे आ हमहूँ अपन देखब।"

जहिना रामलाल बाबा बजला तहिना सुनैना दादी मानि गेली। पति लगसँ ससैर सुनैना दादी अपन काज दिस बढ़ि गेली। एकान्त भेला पछाइत रामलाल बाबा अपन दुनू बेटो आ दुनूक बालो-बच्चापर नजैर देलैन। एक परिवारमे रहितो बच्चामे एतेक दूरी केना बनि रहल अछि, बच्चेकेँ किए कहबै जे सियानो चेतनमे बनि रहल अछि.! बाबाक अमलदारीमे जेहेन परिवारक ढर्रा छल, माने देशक स्वतंत्रतासँ पूर्वक समयमे, जखन राजशाही शासनक बीच समाज छल। बीचक समय जे पिताजीक अमलदारीक छेलैन ओ तँ देशक आन्दोलनक बीचक छेलैन। जे आन्दोलन एक पीढ़ीक नहि, कइयो पीढ़ी चलबे कएल। एक पीढ़ीक माने भेल बीस-पचीस बर्ख। तँए अपन एक पीढ़ी ओइमे चलि गेल। मुदा तेकर पछाति तँ अपना ऊपरमे भार आएल। जेकरा अपन इमनदारीसँ निमाहैत अखन तक पचास-पचपन परिवारकेँ एक विचार आ एक रस्तापर रखने आबि रहल छी जे आब टुटैक कगारपर पहुँच गेल अछि.!

रामलाल बाबाक मन जीवनक बीच दहलेलैन। दहलेलैन ई जे मनुक्खक जे सम्बन्ध-सूत्र अछि तइमे अनेको विरोधाभास सेहो अछिए, जेकरा पटने बिना चलब कठिन अछिए। मुदा पाटबो तँ असान नहियेँ अछि।

रामलाल बाबाक मन आगू बढ़लैन कि देखलैन जे देव-दानवक जे वृतान्त रहल ओ जहिना एक दोसरसँ विरोधाभासी रहल तहिना जाति-सम्प्रदाय सेहो रहबे कएल। माने ई जे जहिना देव केतौ दानव बनि छल करै छला तहिना दानवो देव बनि छल नहि करै छला

सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो करिते छला। देव-दानव सदृश जे देव-दानव लोक अछि ओ मानवसँ इतर लेब-आनब अछिए, तँए अखन ओकरा छोड़ू। मानव छी, मानवक जे परिवार अछि अखन तइमे विचार करू। समाजमे देखिते छी जे जातीय बन्धन एतेक सक्कत अछि जे मनुक्खक जीवनकेँ बान्हि कऽ रखने अछि। मुदा तोहूमे देवे-दानव जकाँ घुसका-घुसकी की नहि होइए, सेहो होइते अछि। एक दिस जँ जातीय बन्धनकेँ मैनजन-देवानक माध्यमसँ सक्कत बान्ह बान्हल जाइए तँ दोसर दिस जाति-सम्प्रदायक कारखाना ओकर विपरीत नहि चलि रहल अछि सेहो बात नहियेँ अछि, सेहो तँ चलिये रहल अछि आ तही बीचमे ने अपन परिवारो-समाज चलि रहल अछि...।

तरे-तर रामलाल बाबाक मनक विचार घोर-मट्ठा भऽ गेलैन। घोर-मट्ठा ई भेलैन जे मट्ठा केना घोर भऽ गेल आ घोरेमे सँ मक्खन निकैल केना घी बनि गेल? पानि भलेँ बुझह जे हमहूँ दूधे रंगमे रंगि किए ने गेल छी मुदा दूध थोड़े बनि जाएब जे ओइसँ मक्खन आकि घी बनब।

थाकल-ठेहियाएल बटोही जकाँ रामलाल बाबाक मनमे जेना ठेह धेलकैन। ठेह धरिते विचार उठलैन जे परिवार तँ बहुत पैघ संस्था मनुक्खक जीवनक लेल अछि। जीवन चलैक जे रास्ता अछि तइमे परिवार तँ सहजे परिवार भेल। जहिना मुसरी, धानक बोझक काँड़ लग अबिते धान देखि काँड़मे तर-ऊपर करैत खेलेबो करैए, खेबो करैए आ असगरक परवाह केने बिना रहबो तँ करिते अछि। मुदा मनुक्ख तँ से नहि छी। ओ तँ असगरोमे परिवार बनाइये कऽ रहैए। माने ई जे मनुक्खक जीवन जे अछि ओ आन-आन जीवसँ माने पशु-पक्षी सभसँ भिन्न अछिए।

परिवारक बीच जखन रामलाल बाबाक मन एलैन तखन

परिवारक गठन आ संचालनक बीच की-की बाधा अबैए जे जीवनकेँ आगू मुहेँ ससरैमे चारू दिससँ पाछू मुहेँ ससारैक बाधा ठाढ़ करैए, तैपर नजैर पड़लैन। बाधापर नजैर पड़िते रामलाल बाबाक मन अपन परिवार देखि औनाए लगलैन। एक दिस परिवार जोड़ैक अनेको कारण देखै छला तँ दोसर दिस टुटैक सेहो कारण देखिते छला। तोड़-जोड़ दुनू अपन-अपन शक्तिक अनुकूल करिते अछि। अही द्वन्द्वक बीच जीवन सेहो अछि। माने खसैत-उठैत, उठैत-खसैत ठाढ़ रहि आगू दिन ले सेहो बढ़ैक अछिए। रामलाल बाबाक मन पुन: अपन परिवार आ दुनू बेटा–सोहन आ रोहन–पर घुमैत-घामैत पहुँचलैन। ओना सोहन शीलवान बेटा छैन, मुदा तैठाम विचार नहि अँटैक रोहन लग आबि अँटैक गेलैन। माने भेल सरपट जीवन चलनिहार सरपट चलि लइए मुदा आगूक मुराम वा टुटान-जुटान लग आबि अँटैक जाइए। अपन मुँह फुटलैन-

“जो रे अभागा, जोग जीवन छोड़ि भोग-भागक तेहेन भाँजमे पड़लेँ जे कुल-खुटकेँ सात तल पतालमे दऽ एबही।”

बजैक क्रममे रामलाल बाबा बाजि गेला मुदा लगले अपने मन डाँटलकैन जे जहिना देव-दानवक लीला, जाति-सम्प्रदायक लीला अछि तइसँ की कम जोग-भोगक लीला अछि। अहीक चलैत ने परिवारमे रंग-बिरंगक बिखण्डण होइए। जीवनसँ हटि जखने जीवन चलत तखने ओ श्रमशीलसँ श्रमहीनक दिशा पकैड़ लेत आ जखन श्रमहीनक बाट पकैड़ लेत तखन जीवनक गाड़ी ढलाने-ढलान दिस ढलबे करत किने। तहूमे कोन ढलानपर किमहर मुहेँ ढलकत तेकर कोनो ठेकान रहतै...। संजोग बनल, अपने रामलाले बाबाक दरबज्जाक अगुऐतक रस्ता धेने कमरसाइर जाइत रही कि दरबज्जाक चौकीपर रामलाल बाबाकेँ बैसल देखलयैन। आगू सिरामे जखन पड़ि गेला तखन जँ मुँह चोरा कऽ काते-कात चलि जइतौं,

सेहो केहेन होइत। कहब जे घरवारीकेँ बिनु कहने दरबज्जापर जाएबो तँ नीक नहियेँ हएत? मुदा उमेर आ खाड़ीक बिनु विचार केने एहेन प्रश्नो करब उचित नहियेँ छी। खाएर जे जेतए हुअए से तेतए होउ। अपने ससैर कऽ रामलाल बाबा लग पहुँचैसँ पहिने बजलौं-

“बाबा, गोड़ लगै छी।”

ओना रामलाल बाबाक चेहरा देखि पकड़ब कठिन अछिए किए तँ जहिना अनाड़ी माने बिनु बुझलक चेहराक रूप मलिन जकाँ देखि पड़ैए तहिना जीवनीक सेहो ने बुझैक क्रमने ओहने भऽ जाइए। तँए रामलाल बाबाकेँ चेहरा देखि नहि बुझि पेलौं जे अखन कबीर बाबा जकाँ कोन धुनक धुनियाँ बनल छैथ। आँखि मूनि रामलाल बाबाक मन केतौ दौड़ रहल छेलैन, गोड़ लागब सुनि भक् तँ खुजलैन मुदा आँखि नहि खुजने चीन्हि नइ सकता जे के छी। मुहसँ निकैल गेलैन-

“आबह, आबह..।” मतिछिन्नू जकाँ बजला-

“तेहेन-तेहेन करांकुल सभ परिवारमे जन्म लऽ रहल अछि जे जेना लोक सभ जे बजैए- ‘ककोरबा बिआन ककोरबे खाए’, भरिसक तेहने सन अपनो भेल जाइए।”

रामलाल बाबाक बात तँ सुनलौं मुदा की बजला आ की मनमे छैन से बुझबे ने केलौं। भाय, मनक बात जखन शब्द-शब्द चित्र खिंचत तखन ने ओ नीक जकाँ बुझिमे औत। सुहरदे मुहेँ केना कहितिऐन जे बाबा जखन बाते ने बुझलौं तखन विचार की करब। जँ बजबो करितौं तँ बाबा तेहेन मुँहछुटू लोक छैथ जे धाँइ-दे कहि बसितैथ जे कानमे ठेकी लागल छह। ओना, ठेकी दुनू हिसाबसँ लगैए। पहिल बजनिहारक शब्दसँ आ दोसर सुननिहारक सोहसँ। एते दिन लोक करूतेल-मटियातेलक शीशी-बोतलमे कोढ़िला आकि

मकैक ठठेरक ठेकी लगबै छला आब तँ ठेकीक जगह मुन्ना लोक लगबैए। तत्-मत् करैत विचारलौं जे अखन रामलाल बाबा ढेनुआर गाए जकाँ दूधसँ तर-तर कऽ रहला अछि, तँए किए ने धारक मुहेँकेँ मोड़ि दिऐन। बजलौं-

“बाबा, आब तँ अपने हमरे सभक भागे जीब रहलौं अछि।”

बजैक क्रममे ई सोचि बजलौं जे साठि बर्खक अनुभवीक आगूमे ठाढ़ छी तँए एक-एक शब्द आ शब्दक क्रियाक नजैरसँ देखए पड़ैए। मुदा जे बजलौं तेकर दोसरो अर्थ तँ होइते अछि जे अपन जे पारिवारिक वा सामाजिक जीवनक कालखण्ड अछि तइ बीच ने अपने जीबै छी। मुदा भेल से नहि, जेना रामलाल बाबाक अपने मन विचारसँ हौंड़ैत रहैन तहिना हमरा विचारकेँ ऊपरे-झापड़े लैत बजला-

“बौआ सिंहेसर, एतेकाल तोरा नीक जकाँ नहि चीन्हिने छेलियह, किए तँ अपन परिवारक भौकमे भकुआएल छेलौं। आबह बैसह।”

अपन काज देखबैत बजलौं- “बाबा, अहाँ सन लोक लग बैस गप-सप्प करैक जे समय अछि सएह ने भेल सतसंग। मुदा परिवारक तेहेन हर बहैए जे एको क्षण भगवानक नाम लेब सेहो कि कखनो पलखैत होइए।”

रामलाल बाबा बजला-

“हँ, से तोरे कि कहबह, सबहक एक्के गति अछि। कहैले एक परिवारमे छी आ समांगसँ गप-सप्प होइए तीन मासपर।”

रच्छ रहल जे रामलाल बाबा ऐ विचारपर धियान नहि देलैन जे ओहन हर आएल केतए-सँ जे एकटा साधारण पाँच गोरेक परिवारोक बीच एक दोसरमे तेना दूरी बना रहल अछि जे बेठेकान

भइये रहल छी। बजलौं-

“बाबा, की कहब! भरि दिन परेशान रहै छी तैयो साँझमे जखन परिवार लग जाइ छी तँ मुजरिमे बनि रहए पड़ैए। माने पत्नीसँ लऽ कऽ धिया-पुताक तेतेक फरमाइस रहैए जे आधासँ बेसी झूठेक आश्वासन दैत जान बँचबै छी।”

रामलाल बाबा बजला-

“गप-सप्प पाछू करब, पहिने ई कहह जे जइ काजे जा रहल छह ओ बेसी हलतलबी छह आकि असथिरसँ चलैबला छह।”

ओना, अपनो भीतरिया इच्छा छल जे एकाध घन्टा कोनो विषयक चर्चा उठा बाबाक संग गप-सप्प करी। तैपर बाबाक बात सुनि आरो मन फुहराम भेल, बजलौं-

“बाबा, हमर जीवने केतेटा अछि जे दिन-राति परेशान रहब, तैयो तीनटा बिल[9] सदिकाल फुटले रहैए। मुदा परिवार छोड़ि कऽ जँ केतौ चलियो जाएब तैयो तँ अपने परिवार जकाँ जैठाम जीबैक गर देखब तेतइ ने रहब। तहूठाम ते एहने साढ़े तीन हाथक मनुक्खसँ भेँट हएत। जेकरा पैरक कोनो हिसाबे ने छै। जखन पएरेक हिसाब नहि, तखन धरती आ धरतीक गतिक हिसाब की लागत। तँए बेसीकाल असथिरे रहै छी।”

हमर विचार जेना रामलाल बाबाकेँ नीक लगलैन तहिना चौअनिआँ मुस्की देलैन। जहिना फुलक गाछ लग जा अधखिल्लू फुलो आ कलियो पकैड़ माली अपन हृदयसँ सिंचन करैए तहिना सिंचन करैत रामलाल बाबा बजला- “चाह बनबाबै छिअह?”

‘चाह’ सुनि केना बजितौं जे बाबा अखन चाह-ताह नहि पीब।

---

[9] *परिवारक समस्या*

मुँहछोहैनो तँ एक तरहक सन्तुष्टि छीहे। मुदा जगहोक तँ अपन मोल छै, अगर जँ बाबाकेँ अपने इच्छा चाह पीबाक रहल होनि, तखन हमर नकारब बुड़िपना हएत की नहि। तैबीच मनक भाव सेहो बदलल। कहब जे एतबे कालमे मन केना बदैल गेल? मन तँ चौबीस घन्टाक दिन-रातिमे साठि हजार बेर कुदैए, तैठाम हमर जे कुदबे कएल तँ की भेल। बजलौं-

"बाबा, परिवार सभसँ पैघ जंजाल छी। लोक कहैए जे 'जोरू जमीन जोर-के नहि तँ केकरो और-के' मुदा ओहू जोरसँ बेसी जोर करै छी तैयो कि परिवारक जंजालकेँ बुनि-गुनि पबै छी। मुदा एकटा तँ गुण अछिए जे क्षणे-क्षण जे दुनियाँमे अनेको रंगक अपराध-वृत्ति भऽ रहल अछि तइसँ नीके ने छी जे अपन परिवारमे मड़ुआ रोटी आ गेनहारी सागक संग जितिया सन पाबैन करैत तृप्ति होइ छी।"

तैबीच चाहो आबि गेल। दुनू गोरे एक दोसरक मुहोँ दिस देखी। किए तँ अपने डायविटीज भेने चीनीबला चाह नहि पीबै छी, तैपर चीनीबला चाह अछि। मुदा मनमे ईहो धाक हुअए जे जँ बाजब जे 'बाबा चीनीबला चाह नइ पीबै छी तँ ओ धाँइ-दे बाजिये देता जे दुनियाँ भोगैबला छी आकि छोड़ैबला थोड़े छी जे तूँ चीनी छोड़ि देलह। दोसर धाक ईहो होइत रहए जे एक तँ निरलज्ज जकाँ बाबा लग बैस चाह पीबै छी आ तैपर जँ बाजी जे चाहे चीनियाह अछि, सेहो केहेन हएत। मने-मन मनकेँ मारि मुँह बन्न केने रहलौं।

ओना, रामलाल बाबाक मनमे समुद्र जकाँ लहैर उठैत रहैन। मुदा समुद्रो तँ समुद्रे छी, जहिना अपन लहैरकेँ उठबैए तहिना अपना पेटेमे समेटियो लइते अछि। समुद्रेक लहैर जकाँ रामलाल बाबाक मनमे अपन बनौल-बनाएल, बनौल तँ नहि मुदा ओकर परिमार्जित बनाएल, अपन कालखण्डकेँ समतल धारामे परिवारकेँ नेने आबि रहल छला तइमे अपने बेटो आ पोतो आड़ा हाथमे नेने आगूमे छैन।

रामलाल बाबाकेँ दूटा बेटा- सोहन आ रोहन। दुनू भाँइकेँ सखा-सन्तान सेहो भइये गेल छैन। मध्यवर्गक किसान परिवारक जे सामाजिक परिवेश बनि गेल अछि, तइ अनुकूल दुनू भाँइक जीवन सेहो छैन्हे। जैठाम सोहन मेहनती साहसी किसानक जीवन धारण केने छैथ तैठाम रोहन परिवेशक अनुकूल, माने ठीकेदारी-दलाली इत्यादि, जीवन धारण केनहि छैथ। काजक बढ़ौत्तरी भेने आकि अर्थक आर्थिक करामातक चलैत रोहनक सम्बन्ध पितो आ भाइयोसँ दूर होइत गेल अछि। अपन पचास-पचपन परिवारकेँ एकसूत्रमे बान्हि रामलाल बाबा जे अनने छला ओ बेटाक चलैत माने रोहनक चलैत नष्ट होइक कगारपर, माने टुटैक स्थितिमे पहुँच गेल अछि।

रामलाल बाबा बजला-

"बौआ, तोरासँ किछु राय-विचार करैक अछि।"

राय-विचार तँ अनेको रंगक होइए। चौक परक तरकारीक भाव तँ बालो-बोध आब बुझए लगल अछि, ओइठाम तँ ओही बच्चासँ ने विमर्श करब नीक हएत। तैठाम तँ अपने कहुना भेलौं तँ जवान भेबे केलौं। अपनो उमेरक लाज-धाक अपने नइ करब तँ कि ओहो अनके सिरे राखब। बजलौं-

"बाबा, अहाँ राइये-विचारटा-क बात किए करै छी, ऐ शरीरोक जँ काज पड़त सेहो दइले तैयार छी।"

अपना जनैत रामलाल बाबाकेँ अपन सोल्होअना शक्ति दैत बाजल छेलौं, मुदा रामलाल बाबाक मन अपन परिवारक कलेससँ तेना कलैस रहल छैन जे अपन सभ कएल-धएल बेटा-पोताक मुँह चढ़ि गेल छैन।

रामलाल बाबा बजला- "बौआ, परिवारमे विघटनक बाट जे

पकड़लक अछि ओ सुघटनेक वयना पकैड़। भरिसक ओही बहुरूपिया चालिक जालमे अपनो समांग सभ फँसि गेल अछि।”

ओना, रामलाल बाबाक भीतरिया विचार नीक जकाँ नहि बुझलौं, मुदा सोझामे से केना कहितिऐन जे बाबा अहाँक विचारे ने बुझलौं। अपन नीक देखि बजलौं-

“बाबा, अहाँक विचार एकदम साधल अछि।”

विचारक समर्थन रामलाल बाबाक मनमे आरो ओज जगा देलकैन। बजला-

“बौआ सिंहेसर, जहिना तोहर नाम छह ‘सिंह’ तहिना बरद जकाँ सदिकाल सिंह तानि चली।”

बाबाक विचार सुनि अपनो मन धकधकाए लगल। धकधकाए ई लगल जे आजुक तँ परिवेश बनि रहल अछि जइमे अपनो धिया-पुता कहैए- ‘चुन-तमाकुलक नोसि बना सुरैक लेबह.!’ तखन आन तँ सहजे आने-बीरान भेल। मुदा रामलाल बाबाक सोझामे छी, भेखो देखि भीख देबोक चाही आ मंगबोक चाही। बजलौं-

“बाबा! नामे की हुअए, होइए कामे। मनुक्खे छी आ लूरिये कम अछि, तखन तँ लोको छीपगर नहियेँ ने भेलौं, मुदा जएह अछि तहीमे अपन अँटावेश तँ कइये लइ छी। तइसँ एते तँ सोझमे लाभ भेबे कएल अछि जे अनकर आशापर अपन काज नहि मारल जाइए।”

हमर बात सुनि रामलाल बाबा उत्साहित भऽ बजला- “बौआ सिंहेसर, यएह भेलह नाम गुण काम। ई नहि ने जे लगले परब्रह्म परमेसर कृष्ण बनि जाइ आ लगले भदवरिया लफुआ कृष्ण।”

ओना, रामलाल बाबाक विचारक नमहर भूमि देखि मन चौंकल मुदा अपने दोसर मन कहलक जे बाबा बहला रहल छैथ, तँए

किए ने ‘राय-विचार’क बात जे कहने छला तइ दिस खींच अनिऐन। बजलौं-

“बाबा, की राय-विचार कहने छेलौं।”

अपन मनमे साहस जुटा लेलौं जे अखन बाबा परिवारक दबाबमे विचलित भऽ रहला अछि, तँए हिनकर विचार सुनि विचारमे बल भरैक अछि, जइसँ विचारधारा बनि प्रवाहित होइत रहतैन। मने-मन विचारि लेलौं जे जे विचार जरूरतसँ बेसी बुझाएत तैठाम अपनो बल अछिए किने, बुझल जाएत। हुनकर परिवारक अपन खास बात छिऐन। किनको परिवारमे धाँइ-दे किछु बाजबो तँ उचित नहियेँ छी। सभ परिवारमे अपन-अपन समस्यो अछि आ समाधानक रास्ता सेहो अपन-अपन अछिए।

रामलाल बाबा बजला-

“विचित्र संकटमे पड़ि गेल छी सिंहेसर। दुनू बेटा दू तरहक जीवनक रास्ता पकैड़ लेलक अछि, बीचमे अपने छी, जँ केकरो गड़बड़ भेल आ करैबलाकेँ किछु कहबै तँ अनेरे ने गामक लोक धौ-चाल करए लागत जे फल्लाँ एकटा बेटाकेँ मानै छथिन आ दोसरकेँ मानिते ने छथिन। जँ मुँह बन्न केने रहब तँ अपन परिवार टुटि रहल अछि आ जँ खोलब तखन तँ.! यएह संकट अछि, तँए किछु फुरिये ने रहल अछि।”

रामलाल बाबाक अन्तिम बात ‘किछु फुरिये ने रहल अछि’ सुनि मन चकोना भेल। चकोना ई भेल जे साठि बर्खक जीवन, जिनकर पारिवारिक रूपमे समाजमे छैन, तैठाम पाइक भीतरिया लेन-देन माने नोकरीक नामपर, कारोबारक नामपर, अनेको परिवारमे माने अपन पचास-पचपन परिवारसँ लऽ कऽ समाज धरिमे रोहन टालि-गुल्ली खेल रहल अछि। पाइक स्थिति की अछि से सभ

जनै छी। भर्लें किछु अधमड़ू रास्ता चलनिहार ले पाइक मोल किछु ने किए ने हौ, मुदा अधिकतर लोक तँ अभावमे छथिए। एहेन प्रश्नक बीच अपना की फुरत। बजलौं-

"बाबा, अपन की विचार अछि?"

मने-मन ई सोचि बजलौं जे बाबा जे बजता तइमे अपनो हस्ताक्षर कऽ देब। किए अनेरे अधखिज्जू विचार केतौ बाजब। रामलाल बाबा बजला-

"बौआ, परिवारक लोक परिवारकेँ ठट्ठा बुझि रहल अछि। ई नइ बुझैए जे अहीपर देश-दुनियाँ ठाढ़ अछि। 'बाबा हाथक कोदारि हल्लुक' से ओहिना बुझि पड़ै छै। बाबाक जीवन-यात्रा ओइ भीतरमे सामाजिक, आर्थिक रूपमे नुकाएल अछि से बुझिये ने रहल अछि।"

बिच्चेमे बजलौं-

"हँ, से तँ अछिए।"

रामलाल बाबाक मन अपने विहुसि गेलैन। बजला-

"बौआ, कियो अपन कर्मक भागी अपने ने छी, जेहेन करत तेहेन पौत। मुदा छी तँ मनुक्ख। प्रह्लाद आ ध्रुवकेँ जहिना बच्चामे ज्ञान भेलैन तहिना सुखदेवकेँ तँ पेटेमे भऽ गेल छेलैन। तँए कि घृष्टराष्ट्रकेँ बुढ़ाड़ीमे नहि भेलैन सेहो बात नहियेँ अछि।"

ओना, शास्त्र-पुराणक नीक जकाँ कोनो बात नहियेँ बुझल अछि मुदा तैयो बजलौं-

"हँ, से तँ भेबे केलैन।"

ओना, रामलाल बाबाक अपन भीतरिया मन रहैन जे परिवेश बदलने अधिकतर लोकक मन पाइ दिस बढ़िये गेल अछि तँए कहब जे पाइक मूल्यकेँ जीवनक मूल्यसँ कम अँकनिहार नहि छैथ सेहो

बात नहियेँ अछि। नीक हएत जे परिवारकेँ माने पचासो-पचपन परिवारकेँ एक विचारमे आनि सामूहिक रूपसँ आगूक मौका पुन: रोहनकेँ देब।

अपन विचारमे सह पेब आकि की, रामलाल बाबाक अपन मन भरि गेलैन। मुदा बजला किछु ने।

❑

शब्द संख्या : 4091, तिथि : 02 जनवरी 2021

परिवारक विघटन

चारि बजे भोरेमे कीर्तिदेव काका, ओछाइनपर ऐ-कर–सँ–ओइ-कर कछमछ करैत पड़ले-पड़ल विचारि लेलैन जे आइ ओ मंगलदेवसँ जेना-तेना भेँट करबे करता। भेँट करैक असल कारण छैन जे अपनाकेँ कीर्तिदेव काका सामाजिक लोक बुझै छैथ मुदा गाममे आइ चारि दिन मंगलदेवक माइक श्राद्ध-कर्म भेला भऽ गेल अखन तक नीक जकाँ हिसाब-किताब बुझि नहि सकला। कीर्तिदेव काकाकेँ अपनापर ग्लानियोँ उठलैन जे आजुक परिवेशमे अमेरिकाक समाचार, कोनो घटना भेलाक पाँचे मिनटमे दुनियाँ भरिक लोक बुझि जाइए आ अपने गामक समाचार चारि दिन बितलोपर नहि बुझि पेलौं हेन। जँ समयक संग नहि चलब तँ सामाजिक लोक केते दिन बनि रहब। आब कि समाजमे ओ धारणा रहल जे देशक उन्नति जनक उन्नति आ जनक उन्नति देशक उन्नति हएत।

जहिना कीर्तिदेव काका लोकक धारणा देखि विचारए लगला कि अपनो धारणा अपन सामाजिक जीवनमे देखलैन। जखन देशमे भुखमरी छल, मोटा-मोटी 1974 इस्वीक पूर्व तक जे अन्नक अभाव छल, तखन ऐठामक किसान खेतक आड़ि पकैड़ ओते श्रमो आ साधनो लगौलैन जइसँ खेतीमे उन्नति भेल आ देश अन्नक मामलामे आत्म-निर्भर भऽ गेल। मुदा ओइ आत्मनिर्भरताक भविष्य की भेल से तँ भोगिये रहल छी। की देशक जे उपजाऊ भूमि अछि ओइमे

समुचित उपज भऽ रहल अछि। जखन समुचित पैदावार नहि हएत तखन खेतक आशापर जीनिहार लोकक समुचित विकास केना हएत। की एकरा मानि लेल जाए जे खेतक जे पैदावार अछि ओ सभसँ बेसी अपना देशक अछि? ऐ सँ बेसी उपज दैक शक्ति खेतमे अछिए नहि।

पड़ले-पड़ल कीर्तिदेव कक्काक नजैर पुन: अपन जीवन दिस घुमलैन। घुमिते अपन सामाजिक जीवन आड़ि पकड़लकैन। भेल तँ खाली सामाजिके जीवनटा मे आड़ि पकड़ब भेल से बात नहि अछि। जीवनक जे क्षेत्र हुअए, आ ओ जँ मनलग्गू हुअए तँ आँखि मुनि ओइ क्षेत्रकेँ पकैड़ अड़ियबैत अपन जीवनक आड़ि बान्ही। जखन देह बन्हा जाए, जेना झाड़-फूँक केनिहार; झाड़-फूँक करैसँ पहिने अपन देह बन्हैत मंत्र पढ़ै छैथ- 'जल बान्हू, थल बान्हू, बान्हू अपन काया, सबा हाथ धरती बान्हू, नरसिंहनाथक दया।' कहू जे एते बन्हा गेला पछाइत कोन खेतक आड़ि कमजोर रहत जेकरा कोसी-कमलाक पलाड़ी तोड़ि देत..? मने-मन कीर्तिदेव काका विचारिये रहल छला कि बाँसक बीटमे सँ घुटकी चिड़ैक घुटकी आवाज कानमे पड़लैन। घुटकी कानमे पड़िते मन फुड़फुड़ाइत कहलकैन-

"भोर भऽ गेल। ओछाइन पकड़ने जीवन थोड़े चलैए ओ तँ बाधित होइए।"

नीन टुटला पछाइत जे संकल्प कीर्तिदेव कक्काक मनमे उठल छेलैन ओ पुन: जागि कहलकैन-

"आइ मंगलदेवसँ भेँट करबे करब।" जखने मंगलदेवक भेँट कक्काक मनमे एलैन तखने पुन: अपने मन कहलकैन- "पहिने अपन घरक गोसाईं पूजि लेब तखन ने दुनियाँक पुजेगरी बनि पुजबैत रहब। ई नहि ने जे मोलबी साहैब जकाँ आफन तोड़ि बाजए पड़ए जे 'संगेमे बैद मियाँ मरता है।"

दुनियाँ दिस ताकब तँ देखि पड़त जे अपना लगसँ लऽ कऽ सौंसे दुनियेँ गुरुवन पसरल अछि। मुदा तइमे अपन गुरुवन केहेन बनाएब तइले तँ अपने ने कारीगिरी सीखि कऽ करए पड़त। ओछाइन छोड़िते काजक महत्व माने संकल्पित क्रियाक महत्व, जेना पुन: कीर्तिदेव काकाकेँ सिरचढ़ भऽ गेलैन। अपन सभ क्रिया जेना मनसँ हटए लगलैन माने मंगलदेवसँ भेँट करैक प्रबल इच्छा, एक नम्बर काजक सूचीमे एने अपन नित्य-कर्मक सूची दू नम्बरमे आबि गेलैन, जइसँ बेहोशीक स्थिति बनियेँ गेलैन मुदा अपनाकेँ सचेत करैत चेतलैन जे भेल तँ मंगलदेवसँ भेँट करि कऽ मातारामक श्राद्ध-कर्मक हिसाब-किताब बुझैक अछि। क्षणमे क्षणाक होइबला कोनो तेहेन नहियेँ अछि तखन अपने उताहुलो हएब नीक नहियेँ हएत। जहिना सभ दिन अपना संग अप्पन बासभूमिकेँ क्रियान्वित करैत निकलै छी तहिना निकलब। चौक-चौराहाक लोक मंगलदेव छीहे जँ चौकपर भेटत तँ नीक जकाँ सभ गपो-सप्प हएत आ कर्मक समीक्षा सेहो संगे-संग चलबे करत। चौक-चौराहाक गप-सप्पक अपन महत्वो अछिए। तहिना काजोक तँ अपन महत्व अछिए। भलेँ लोक काजक दौड़मे अकानि किए ने बाजैथ जे आब युगे बदैल गेल। श्राद्धकर्ममे पुरुखक निमित्ते दियादोवाद सभ नह-केश कटबै छला, आब देखै छी जे एक दियाद अमेरिकामे तँ दोसर चीनमे रहए, तैठाम नह-केश कटबए कर्ममे दियादवाद केतएसँ औता। मुदा से नहि, एक-एक क्रियामे, केतए-केतए केते विघटन भेल आ केतए-केतए सुघटन भेल, तइले तँ अपन होश राखैये पड़त किने।

संजोग बनल मंगलदेव चौकेपर, पहिलुके जकाँ माने माइक मृत्युसँ पहिने जेना रहै छल, तहिना बीचमे बैसल। जखने दस गोरे गोलिया कऽ बैसब कि सभकेँ सभ बिच्चेमे बैसब भेल। कीर्तिदेव काका सेहो बीचमे बैसते अकानि कऽ सुनलैन जे मंगलदेवेक माइक

श्राद्ध-कर्मक गप-सप्प चलि रहल अछि। बिना किछु बजने कीर्तिदेव काका मंगलदेवपर नजैर गाड़लैन। जे मंगलदेवकेँ अपन माइक श्राद्ध-कर्मक विषयमे अप्पन मन की कहि रहल छइ। हारल सन छै आकि जीतन सन। माने जखने कोनो यज्ञ कर्म विधि-विधान पूर्वक सफल होइए तँ ओ सफल भेबे कएल, जँ से नहि भेल तँ केतौ-ने-केतौ ओ कमी, कम रहबे करत। ओना, सामाजिक स्तरपर समाजकेँ बीचमे रखि देखबो नीक होइते अछि। किए तँ कबीर बाबा कहबे केने छैथ- दो पाटन के बीचमे बाँकी बचा ने कोई। सभ ओइ पाटनक बीच छीहे, तँए अपन-अपन पाटनक पट करबाक ओरियान अपने ने करैत चलब।

अखन तक जेते कीर्तिदेव काका सुनलैन तइमे कनी-मनी तुष्टियो भेलैन आ कने-मने नहियोँ भेलैन। मुदा सभ गप तँ सुनने नहि छला तँए बिनु सुनल बात रहिये गेलैन। तैबीच गप-सप्पक एक पराग्राफ सेहो सम्पन्न भेल। चारू कात कीर्तिदेव काका हिया कऽ देखला जे कियो किछु बाजि तँ ने रहल अछि। मुदा कीर्तिदेवे काकाकेँ बजै दुआरे सभ चुप छला आकि अपन-अपन मनक बातकेँ विरामसँ मुराम जगह पकड़ा लेलैन से तँ वएह सभ जनता। सभकेँ चुप देखि कीर्तिदेव काका बजला- “मंगल केहेन रहल?”

ओना, कीर्तिदेव कक्काक अपन आत्मचेतन मानि लेलकैन जे मंगलदेव जहिना भीतर अछि तहिना ऊपरो तँ अछिए। माने जेहेन विचार तेहने मन बना काजो करैत अछि। ओना, एहनो विचारक दू-दिशिया बाट अछिए। नीकोमे नीक आ अधलोमे अधला, मुदा से ऐठाम नहि अछि। मंगलदेव नीकमे नीक अछि। मंगलदेवक विचार सुनि कीर्तिदेव काकाकेँ गणेशजी मोन पड़लखिन। जहिना गणेशजी एक संगे लिखब बुझब दुनू जनै छला तेना तँ कीर्तिदेव काकाकेँ नहि भेलैन, मुदा विचारमे धक्का जकाँ जरूर लगलैन।

धक्का लगिते कीर्तिदेव कक्काक मन मंगलदेवक बचपनपर पहुँचलैन। माने जखन बच्चा स्कूलमे पढ़ै छल। मंगलदेव दसमा क्लासक विद्यार्थी, उम्र- पनरह बर्ख रहइ, पटना हाइ स्कूलक छात्र छल, तखन परिवारक बीच एहेन तनाव उत्पन्न भेल जे मतिछिन्नू जकाँ मंगलदेवकेँ बना वौड़ा देलक। से एक दिन, दू दिन वौड़ल नहि रहल, पाँच बर्ख धरि वौड़ल रहल।

संयोग बनल, एक दिन गामेमे, अपन गाममे, चारि-पाँचटा गुदरिया बबाजी, माने सारंगी लऽ कऽ अखनो अँगने-अँगने गोरखबाबाक गीत सभ गबिते छैथ, सबेर-सकाल गाम पहुँचल। ओही बीच मंगलदेव सेहो सारंगी नेने, एकरंगा पहिरने छल। पाँच बर्ख पूर्वक चेहरा मंगलदेवक लोकक बीच आबए लगल। मुदा मंगलदेवक बचपनक जीवनकेँ विचार तेना बदैल चुकल छल जे ने मंगलदेवकेँ अपन कोनो चीन्ह-पहचिन्ह रहल आ ने समाज वा परिवारजनक प्रति मिसियो भरि सिनेह।

बच्चाक नाओं सुनि (माने बीस बर्खक मंगलदेवक) एक्के-दुइये गामक लोकक भीड़ लागि गेल। एक दिस गुदरिया बबाजी अपन रोजगारमे घटा देखि मंगलदेवकेँ छोड़ैले नहि तैयार तँ दोसर दिस गामोक लोक अपन गामक बच्चाक रक्षा लेल तैयार भेला जे ई हम्मर बच्चा छी। बीस बर्खक मंगलदेव होशविहीन, बेहोशीक अवस्थामे छल।

स्त्रीगणक बीच दू दल बनि गेल। माने विचारक दू दल। किछु गोरे बाजैथ जे ई बच्चा फल्लाँगामवाली काकीक छिऐन तँ किछु गोरे बाजैथ जे बच्चा गुदरिया बबाजीक छिऐ। तइ संग किछु गोरे ईहो बाजैथ जे जखन गुदरिया बेना[10] धारण कऽ लेलक तखन ओ गुदरिये

---

[10] *गोरखपंथ*

भेल किने। ओना, किछु गोरे ईहो कहैत जे जँ केकरो घरसँ बच्चा लऽ जा कऽ गुदरिया बना लेने हुअए तखन? कोनो कि सियानमे गेल। आब मोछक पम्ह एलैए, आबक बाद जँ जाएत तखन ने हएत जे बालिग भेला पछाइत गेल। सेहो तँ नहियेँ अछि। मुदा ई सभ विचार स्त्रीगणक बीच चलि रहल छल। पुरुखा-पुरुखीक विचार सोल्होअना दृढ़ छल जे बच्चा समाजक छी, समाजमे रहत, तइले जे हुअए।

ओना, जाबे पुरुख सभ गोलिएला माने दस गोरे जमा भेला, तइसँ पहिने मंगलदेवक माइयो आ परिवारक आनो-आन स्त्रीगण सभ आबि बच्चाकेँ देखि सामूहिक स्वरे बजली- 'मंगल नामक ई बच्चा हमर छी।'

अन्तोअन्त यएह विचार भेल जइसँ मंगलदेव पुन: परिवारमे घुमि कऽ आबि गेल। आबि तँ गेल मंगलदेव मुदा विकृत चेतनाक संग आएल। जहिना समजमे एक रहितो पशु वाणी विहीन रहने, एक-दोसराक बीच सिनेह नहि पेबैए तहिना मंगलदेवोक संग भेल। समज माने पशुक जेर। धीरे-धीरे मंगलदेवक चेतन-शक्ति पुन: जागृत हुअ लगल। जइसँ धीरे-धीरे मिडिल स्कूलक प्रध्यानाध्यापकक जेठ सन्तानक रूपमे पुन: जागृत भेल। वएह छी मंगलदेव।

ओना, मने-मन कीर्तिदेव काका ऐठाम आबि अँटैक गेला जे जइ बच्चाकेँ बालपने अन्हरा गेल माने कालासागरमे डुमि गेल ओ जँ मंगलदेव सन जवान बनि समाजमे परिवारक संग ठाढ़ अछि तँ की मंगलदेव वीर पुरुख नहि भेल? जँ नहि भेल तँ की कहल जाए..? कीर्तिदेव कक्काक मन भीतरे-भीतर तृप्ति भऽ गेलैन मुदा तेकरा मनेमे दाबि रखि किछु ने बजला। ओना कीर्तिदेव कक्काक मुँहक बकार बन्न रहैन मुदा नजैरिक पानि मेघौन रहबे करैन। मंगलदेवक

रूपक रंग देखए लगला।

तइ बिच्चेमे मंगलदेव बाजल- "चाचाजी की कहब, परिवारक विघटन भऽ गेल।"

बाल-बोधक प्रश्नमे बेसी काटो-खोंट नीक नहियेँ होइए, जँ केतौ काट-खोंटक खगता बुझि पड़ैए तँ ओइ बच्चाक ऐगला वक्ता, माने जेकरा मुहसँ ओ सुनलक तेकरा दिस बढ़क चाही। जँ अपन चेतना रहितै तँ ओ दोसराकेँ बिना कहने अपने ओइ काजक पाछू लगि जाइत। परिवारक विघटन भऽ गेल? की विघटन भेल? विघटनक हजारो कारण अछिए। मुदा परिवार तँ एक सीमाक भीतर होइए तँए विघटनक कारणोक अपन सीमा हेबे करत। मंगलदेवक परिवारपर जखन कीर्तिदेव कक्काक नजैर अँटैक गेलैन तखन मास्सैबक माने मंगलदेवक पिताक दृश्य देखलैन।

मंगलदेवकेँ वौड़ला पछाइत जखनसँ मास्सैवक कानमे पड़लैन तखनेसँ ओ कान ठाढ़ कए तक्का-हेरी शुरू केलाह। सैंकड़ो कबुला-पातीक संग सइयो स्थानक भ्रमण केलाह। मंगलदेवक ताका-हेरी कऽ मास्सैव सात दिनपर गाम आएले रहैथ, माने एकठामक पता लगलैन, तैठामसँ। घुमि कऽ आएल छला, जहिना देहक थकान तहिना टुटल मनक थकान सेहो रहैन। बेहोशीक अवस्थामे पहुँचले रहैथ, असाध्य बेथा मनमे रहबे करैन, गुम-सुम भेल अवस्था, रातिमे मरि गेला। तैबीच मंगलदेव वौड़ले छल। संजोग बनल, कीर्तिदेव काका पुन: बिना किछु बजने मंगलदेवपर नजैर देलैन कि मंगलदेव बाजल- "चाचाजी, सभ तरहेँ परिवारक विघटन भऽ गेल।"

मंगलदेवक विचार सुनि कीर्तिदेव कक्काक मनमे अनेको प्रश्न एकसंग चिड़ैक झुण्ड जकाँ धरतीपर एक्केबेर खसलैन। चारि भाँइक भैयारीमे सभसँ जेठ मास्सैव, बाँकी तीन भाँइक परिवारक जे गति-

विधि रहलैन तइ अनुकूल मास्सैवक परिवारमे विघटन भेबे केलैन। शिक्षाक दौड़मे शेष तीनू भाँइक परिवार जेते आगू बढ़ि गेलैन तइ अनुकूल विघटन भेबे केलैन। तीन भाँइक भैयारीमे मंगलदेव जेठ भाय छैथ, परिवारक आर्थिक उपार्जनक साधन किछु जमीन छैन। ओना, गाममे एहनो किछु परिवार अछिए जे जमीन-जत्था रहला पछातियो अपने खेती नहि करै छैथ, दोसर तरहक जीवन बनौने छैथ। जेना पढ़ल-लिखल आ कमो-सम्म पढ़ल-लिखल आन-आन बेवसायसँ जुड़ल रहने अपन खेत-पथार बटाइ लगा लइ छैथ। तेहने परिवार मंगलदेवक, तँए खेतीक लूरिसँ सोल्होअना अनाड़ी।

जहिना मंगलदेवकेँ समुचित शिक्षा नहि भेट सकल तहिना उजरल-उपटल परिवार रहने, छोट दुनू भाँइकेँ सेहो नहि भेट सकल। परिवारक ओहन बेवहार बनल अछिए जे श्रमजीवीसँ, ऐठाम श्रमजीवीक माने शारीरिक श्रमसँ अछि, वुद्धिजीवीक सीमा पकैड़ नेने अछि जइसँ शारीरिक शक्ति दबले-दबाएल रहि गेल। जी खोलि कियो खेतमे मेहनत करैले तैयार नहि। एक तँ बहुत बेसी खेतो-पथार नहियेँ छैन, तैपर बटेदारक हाथे खेती भेने अपन सम्पत्तिक उचितो अंशमे कमी होइते छैन।

मंगलदेवक माए- वसुन्धरा, छियासीम बर्ख टपि सतासीम बर्खमे मरलखिन अछि। अपन सैंतीस बर्खक वैधव्य जीवनक पछाइत वसुन्धरा मरली अछि। तैसंग अपन जेठ बेटा माने मंगलदेवकेँ हेरेबाक सन्ताप सेहो भोगिये चुकल छेली। मुदा भाय मिथिला छी किने! ऐठाम एकसँ एक कीर्तिमान महिला स्थापित केनहि छैथ। गरीबीक अवस्थामे भूखकेँ केते पचा जीवन–प्राण–केँ बँचा सकै छी ओ ऐठाम माने मिथिलानी बखूबी जनै छैथ जइसँ जीवनक ओहन आशा बनले रहै छैन, जेहेन जीवनक बीच गुदस कऽ रहली अछि।

वसुन्धरा पूर्ण आशाक संग जीवनक हारि-जीतकेँ देखैत अपन छियासी बर्खक पूर्ण अवस्था बितौलैन। परिवारमे जेठ पुतोहुक नाते वसुन्धरा देखि चुकली जे केना-केना परिवारक गति रहल। मुदा किए केकरो कोनो अपन सोग-सन्ताप कहथिन। अकलेलो-बकलेल जँ तीनटा बेटा अछि तँ कियो आँगुर देखा 'निपुत्री' तँ नहि कहत। जँ कहत तँ ओकर पाँचो आँगुर नइ काटि लेबइ। उगैत-डुमैत अपन जुड़ल-टुटल परिवारक घावकेँ वसुन्धरा मने-मन भरि लेलैन। जइसँ पुरना माने पहिलुका सभ घाव पचि गेलैन। जहिना एक दिस अपन बिलटैत परिवारक घाव मनमे रहैन तहिना दोसर दिस अपन मिडिल स्कूलक प्रध्यानाध्यापकक पत्नीक गौरव सेहो रहैन। बीचक एक पीढ़ीक जीवनक खाधि बनियेँ गेलैन मुदा ऐगला पीढ़ी, माने मंगलदेवक भैयारीक पीढ़ी, तीनू परिवारमे माने तीनू भाँइक बेटामे इंजीनियर बनि ठाढ़ भइये गेल अछि।

चौक-चौराहाक गप-सप्प भेने बीचमे केते आरो गप-सप्प चलबे कएल। मुदा मंगलदेव ले धनिसन। अपने परिवारसँ वौड़ेलौं तँ वौड़ेलौं मुदा डुमकियो काटि परिवारक विघटनकेँ तँ बँचेबे केलौं। दोसर बात मंगलदेवक मनमे ईहो उठै छल जे गाममे जेमहर-जेमहर घुमै छी तेमहर-तेमहर लोक श्रवणे कुमार कहैए। श्रवण कुमारक पाछू मंगलदेवक काज नुकाएल छल। तीन बर्ख धरि, जखन माए, वसुन्धरा, ओछाइन पकैड़ लेलखिन, तेकर निमरजना मंगलदेव जहिना विचारसँ तहिना बेवहारसँ नीक जकाँ पार-घाट लगौलकैन। तँए आन जे बुझह मुदा अपन मन तँ सदिकाल कहबे करत जे हमरो सन बकलेल-ढहलेल बेटा माता-पिताक पार-घाट लगा सकैए। तइ बीच श्राद्धक भोजक चर्च उठबैत श्यामलाल बाजल-

"भोजमे बारीक रही, गामक हँसारथक प्रश्नक भार तँ ऊपरमे छेलएहे, मुदा लोकक (पंचक) जे छुताएब देखलौं से किछु ने

फुरल।”

सोझमतिया मंगलदेव माफ करैत बाजल-

“जाए दियौ! कोनो अनगौंआँकेँ बजैक मुँह तँ नहि ने रहए देलिऐ। दू साँझ भोज केलौं। छप्पनो प्रकार तँ खुएबे केलिऐन।”

बीचमे कीर्तिदेव काका टोकलखिन-

“अपना गाममे तँ एकसंझू भोज सेहो होइए।”

मंगलदेव बजला-

“हमरा सभमे, सौजनी प्रथा अछि। जइमे हमसभ पनरह गाम छी। ओना, कोनो-कोनो गाममे एकघरो-दू-घरो छी, आ कोनोमे बेसियो छीहे।”

“केते पंच भेल छेला?”

“दुनू साँझ मिला एक हजार बहरवैया आ डेढ़ हजार अप्पन गौंआँ-समाज छेला।”

कीर्तिदेव काका बजला-

“चलू, निचेन भेलौं।”

मंगलदेव बाजल-

“निचेन की हएब कपार, ऐठामक सभ परिवारक भार अनेरे ऊपरमे आबि गेल अछि।”

❑

शब्द संख्या : 2143, तिथि : 07 जनवरी 2021

हारल विचार

अपन भागिनक बेटाक मूड़नमे मोतीलाल कमलपुर एला। काल्हि सबेरे आठ बजे बच्चाक मूड़न छी, एक दिन पहिनहि माने मूड़नसँ, मोतीलाल कमलपुर आबि गेल छला तेकर कारण छेलैन बहिनक विशेष आग्रह जे मोतीलाल भैया कुटुम-परिवारमे सभसँ बेसी पढ़ल-लिखल छैथ, हम सभ मूर्ख भेलौं तँए हुनका रहने यज्ञक[11] सभ भर रहत। ओना, बहिनक विचारक नीक-बेजाए मोतीलाल नहि बुझि सकला, मुदा बहिनक सिनेहसँ सिनेहासिक्त भऽ गछि लेलखिन जे आएब। तँए दिनक करीब दू बजे, बेरुका उखड़ाहामे मोतीलाल सबेर-सकाल कमलपुर आबि गेला। ओना, दरबज्जा कुटुम-परिवार सभ-ले रहै-जोकर घरवारी बनाइये नेने छला किए तँ सभकेँ बुझल छैन्हे जे आब कि कोनो पैछला जमाना रहल जे नौआकेँ बजा बच्चाक केश कटा देलिऐ, सबा सेर चाउर सिदहा दऽ देलिऐ जे दुनू परानी-जोकर भइये गेल, बस काज सम्पन्न भऽ गेल। आब तँ लोक पाँच लाख, दस लाख मूड़नोमे खर्च करैये लगल अछि। मोतीलालक मनमे अपन इंजीनियरक विचार रहबे करैन। माने ई जे नमहर भोज-काज हएत, तइ हिसाब-बाड़ी करैले हमरा सनक लोकक खगता अछिए। मुदा ई बात नहि बुझैत जे कोनो गामक पारिवारिक यज्ञ ओइ गाम-समाजक हिसाबे चलैए जेकर कर्ता-धर्ता समाजक बीचक लोक रहै छैथ।

---

[11] *काजक*

असगरे दरबज्जापर बैसल मोतीलालक मन उबिया लगलैन जे किम्हरो टहैल गप-सप्प करी। अपना मनमे कनी-मनी ग्लानियोँ होनि जे कहू जे काजक घर छी आ हमरा सन लोक ले कोनो काजे ने अछि। मोतीलाल ई बुझिये ने पेब रहल छला जे बिआह-दानक काजमे बरियातीक महत्व होइए, तइमे डॉक्टर-इंजीनियर थोड़े देखल जाइए आकि समाजक बरियातीकेँ देखै छैथ। तहिना मुड़नमे भोज खेनिहार देखल जाइ छैथ आकि कुटुम-परिवार।

मन उबियाइते मोतीलाल दरबज्जापर सँ उठि विदा भऽ गेला। मन तेतेक उदिग्न भऽ गेलैन जे केतए जाएब तेकरो होश ने रहलैन। जइसँ बैसलमे किछु विचारि लइतैथ। दरबज्जासँ निकलला पछाइत मोतीलालकेँ होश जगलैन जे केतौ जे जाएब से तँ एकटा निश्चित जगहपर ने जाएब जैठाम गप-सप्प करैत बीचक समैयो कटि जाएत आ समयपर पुन: दरबज्जापर पहुँच जाएब। यएह सोचि मोतीलाल मनपर जोर देलैन कि मोन पड़लैन धियानचन भाय।

ओना, धियानचन काकासँ मोतीलालक अन्तिम भेँट बीस बर्ख पूर्वे भेल छेलैन, मुदा भेँट तँ कहियो जीवनमे भइये चुकल छैन। मोतीलाल आ धियानचन कक्काक पहिल भेँट आइसँ पचास बर्ख पूर्व भेल छेलैन।

धियानचन कमलपुरक आ मोतीलाल चम्पापुरक छैथ। कमलपुर आ चम्पापुर दुनू अगले-बगलक गाम छी, मुदा दुनू दू परगन्नामे रहने किछु बेवहारिक दूरी तँ दुनूमे अछिए।

मोतीलाल धियानचन काका ऐठाम विदा भेला। धियानचन काकाकेँ अपना काजमे फेड़-फाड़ भऽ गेल रहैन तँए दरबज्जापर नहि रहैथ। खाली दरबज्जा देखि मोतीलालक मन हहियेबे केलैन जे सभ दरबज्जाक एक्के गति अछि। मोतीलालक मनमे एहेन विचार

उठबे ने करैन जे जखने लोक कामकाजी बनत तखने गप-सप्पक जे समय अछि ओ बन्हाएत। अपने निचेन छी तँ गप-सप्प करैक मन अछि मुदा जिनकासँ गप-सप्प करब ओ जँ कोनो काजमे होथि। भरि दिन लोकक समय गप-सप्पमे बीत जाइए मुदा भेटैए की?

ओना, मोतीलालकेँ पहुँचला पछाइत पीठेपर धियानचन काका सेहो दरबज्जापर पहुँचला मुदा तइसँ पहिने मोतीलालक हेहियाएल मनमे विचार उठि चुकल छेलैन। ओना, जीवनमे एहनो होइते अछि जे जँ कियो किनकोसँ भेँट करए जाइ छैथ तइसँ पहिने भेँट करैक एकटा चित्र मनमे बनबे करैए, ओही चित्रानुकूल जँ भेँट भेनिहार भेँट भेला तँ अनुकूल भेँट होइए आ जँ ओइ चित्रक प्रतिकूल भेँट होइए, माने विचारक प्रतिकूल तखन किछु-ने-किछु काठ जकाँ सक्कत कठाइन हेबे करैए। सएह भेलैन मोतीलालकेँ, अपन बहिनक दरबज्जा जकाँ जे धियानचन कक्काक दरबज्जा देखलैन तइसँ मनक चित्र विचित्र भइये गेलैन, किए तँ जखन एक दरबज्जा, माने बहिनक दरबज्जा, सँ निकैल धियानचन कक्काक दरबज्जापर एबाक विचार मन मानि लेलकैन जे फल्लाँठाम गेला पछाइत जखन घरवारी भेँट हेता तखन गप-सप्प करैत आनन्दसँ समय बीता लेब। मुदा दरबज्जा खाली देखि मोतीलालक मन झुझुआ गेबे केलैन जे की सोचि आएल छेलौं आ की भेल.! ऐठाम ई नहि बुझब जे कुमारि गाइक गोबरसँ ठाँउ केलौं मुदा केलौं मनक अधला विचारसँ तँए केतबो देखौआ लाम-झाम किए ने करब, फल अधला छोड़ि नीक थोड़े हएत। तैबीच पाछूएसँ धियानचन काका आबि बजला- “के अहाँ?”

आवाज सुनि मोतीलाल चौंकला, मुदा पाछू उनैट तकलापर धियानचन काकाकेँ देखिते बजला- “हम, मोतीलाल।”

मोतीलाल नाओं सुनि धियानचन कक्काक मनमे साँप-

छुछुनैरिक गति भऽ गेलैन। जँ छोड़ब तँ आन्हर हएब, खाएब तँ मरब.! माने ई जे मोतीलालक अखन तकक जे जीवन रहलैन, माने आइ धरिक जीवनक तीन-चौंथाइ, ओ स्वतंत्र इंसानक रूपमे रहलैन, मुदा जिनगीक चारिम अवस्थामे एला पछाइत मोतीलाल एतेक झुकि कऽ टुटि गेला जे ओहन लोककेँ मनसँ हटाइये कऽ राखब बेसी नीक। मुदा किछु छी तँ मिथिलाक दरबज्जा छी किने, अपन बेकतीगत जीवनक विचारसँ समाजक विचार ऊपर भेबे कएल किने। जे जेहेन करत से तेहेन पौत, मुदा..।

'मुदा' तक अबैत-अबैत अपनाकेँ अनचिन्ह बनबैत धियानचन काका बजला-

"के मोतीलाल?"

ओना, धियानचन काकाकेँ जानकारी भेट चुकल छेलैन जे मोतीलाल पहुँच गेल छैथ। तँए मन मानितो ऊपरसँ अनभुआर जकाँ बाजल छला।

अपनाकेँ अपरिचित बुझि मोतीलाल बजला-

"चम्पापुरक मोतीलाल।"

धियानचन काका बजला-

"अहाँक तँ चेहरे बदैल गेल.! केते सुन्नर सोंटल-साँटल देह छल, एतेटा धोधि केतएसँ लऽ अनलौं? माथक केशो सोन जकाँ उज्जर धप-धप भऽ गेल, की रंगाइ-पोताइ नइ करै छी। देखै छिऐ जे अपन चेहराक रंगाइ-पोताइमे भरि-भरि दिन लोक लागल रहैए आ अहाँ जे एहेन केश माथमे रखने छी से अपना नीक लगैए।"

जिनगी बदलने मोतीलाल किछु बात बिसैरियो गेल छला आ किछु जानि कऽ बिसरौ चाहै छला, मुदा मनुक्खोक तँ अपन गति-विधि अछिए। माने ई जे जँ कियो बीस वा पच्चीस बर्ख पहिने

जिनगीक किछु समय संगे बितौलैन ओ बीचक अन्तरालकेँ एक्के बेर कुदि आइमे पहुँचिये जाइ छैथ। ..अपनाकेँ नुकबैत मोतीलाल बजला-

“आब अपना सबहक उमेरो भेल किने.!”

मोतीलालक विचार सुनि धियानचन कक्काक मनमे उठलैन जे अनेरे भूत-भविसक खेलमे की पड़ब, से नहि तँ मोतीलालोकेँ अपन वर्तमाने मानि गप-सप्प किए ने करी। धियानचन काका बजला-

“अखन की कऽ रहल छी?”

मोतीलाल बजला-

“ऐगला मासमे बीस बर्ख पूरि जाएत। एन.एच. 57 जखन बनए लगल कि इंजीनियरक खगता भेल। ओही खालीक पूर्ति हेतु बहाली भेल हमहूँ बहाल भऽ गेलौं।”

मोतीलालक बात सुनि धियानचन कक्काक मनमे उठलैन जे यएह छी जीवन.! कियो अपन संकल्प-विकल्पकेँ फुलवाड़ी जकाँ सजबैत चलैए आ कियो मेटिया-मेट करैत अपनो मटिया-मेट होइक बाट धड़ैए। आइये नहि, अदौसँ एहेन रहल जे एक समाजमे एक गोटा नीच-सँ-नीच कर्म जिनगीमे उतारि जीवन भरि, ऐठाम जीवनक माने शरीरसँ अछि, करै छैथ, मुदा तँए कहब जे ओहो तँ जीवने भेल? कहैले ते भेबे कएल। मुदा विचारोक तँ अपन दुनियाँ अछिए, जइमे नीको अछि आ नीकोमे नीक सेहो अछि। जँ से नहि अछि तखन किए अखनो आ पूर्वजो ओहन जीवनकेँ पकैड़ कठिन-सँ-कठिन यातना सहला पछाइत अपन विचारो आ विचारक जीवनोकेँ सुरक्षित रखलैन आ अखनो रखिते छैथ। ..जेते देहधारी जीव अछि सबहक मनमे खुशीसँ, आनन्दसँ, जीबैक लालसा अछिए। तहूमे

मनुक्खक शरीर सभसँ अगुआएल अछिए। किए तँ ओकरामे क्रियाशक्ति छै जे आन देहधारी जीवमे नहि अछि। तेतबे नहि, मनुक्खमे क्रियाशक्तिक संग विचारशक्ति सेहो छैन्हे। तँए ओ अपन जीवनकेँ अधिक-सँ-अधिक परिमार्जन करैत ओइ सीढ़ीपर पहुँचए चाहिते छैथ जैठाम आनन्दसँ सदिकाल जीवन लबालब भरल रहए।..एकाएक धियानचन कक्काक नजैर तीस बर्ख पूर्व जे मोतीलालसँ भेँट भेल छेलैन तैठाम पहुँच गेलैन।

धियानचन काका जही जातिक छैथ तही जातिक परिवारमे मोतीलालक जन्म सेहो भेल अछि। सामाजिक परिवेश एहेन बनले अछि जे राजनीति हुअए कि समाजनीति, जातिक बन्धनमे सभ बान्हले छी। धियानचन काका परिवारमे रहि अपन कौलेज तकक शिक्षा प्राप्त केलैन माने बी.ए. पास केलैन। मोतीलाल बंगालसँ माने कलकत्तासँ इंजीनियरिंगक डिग्री पेब दूटा ट्रेक्टर नेने गाम आबि गेल छला।

जहिना अपन-अपन जातिक बीच अधिकांश लोक मनक विचारकेँ गामे-गाम घुमबैत एते तँ हिसाब रखबे करै छैथ जे अपना जातिक बीच केते गोरे कोन श्रेणीक पढ़ल-लिखल अपना गामक अगलो-बगलक गाममे अछि, से प्राय: सभ पढ़ल-लिखल रखिते छैथ। अखन रखैक कारण दोसर नहि, अखन एतबे जे विचारक हर क्षेत्रमे समाजकेँ विभाजित कइये देने अछि।

..धियानचन काकाकेँ शुरूहेसँ माने कौलेजेक अवस्थासँ अपन चौबगली गामसँ सम्बन्ध रहने पढ़ल-लिखल लोकक जानकारी रहबे करैन। चौबगली गामक जातिसँ सम्बन्धक दोसरो कारण छेलैन, ओ छेलैन जे अपन जे अगल-बगलक पनरहटा गाम अछि ओइ गामक जाति-बेरादर पंच बनि, भोजक पंच, एक पाँतमे बैस खेबो करै छैथ आ बेटा-बेटीक बिआहो-दान करिते छैथ। धियानचन कक्काक मनमे

जेना एकटा नव शक्तिक संचार भेलैन। ओ भेलैन भविष्यक दिशामे। अपन टहलैक समयकेँ काज दिस परनत करैत कौल्हुका समय मोतीलालक घरपर जा मोतीलालसँ गप-सप्प करैक मनमे ठानि लेलैन। जहिना मनमे संकल्प जगलैन तहिना ओकरा पुरबैक रास्ता सेहो ठनलैन। दोसर दिन अपन निर्धारित समयपर परिवारसँ निकैल मोतीलाल ऐठाम धियानचन काका विदा भेला। विदा होइते मनमे उठलैन जे जे कियो चम्पापुरक भेटता तँ हुनका सभसँ मोतीलालक विषयमे पुछैत आगू बढ़ब। जइसँ किछु जानकारी भेटने गप-सप्प करैमे नीक लागत। मुदा से भेलैन नहि। एक-दू गोरे जे भेटबो केलैन ओ मोतीलालक विषयमे किछु जनबे ने करै छला।

साधारण घर मोतीलालक, दरबज्जो नहि। घरक भाँज लगबैत धियानचन काका मोतीलालक खोज केलैन। मोतीलाल घरपर नहि, दुनू ट्रेक्टरक संग आठटा मजदूरक पाछू माटिक काजमे गेल छला। धियानचन काका पुछलैन-

“मोतीलालसँ केना भेँट हएत?”

आँगनसँ भाँज लगलैन जे आब अबैक बेर भऽ गेलैन, तखन तँ गामक गेल आ नीनक सुतलक कोन भरोस।

धियानचन काका मने-मन विचार केलाह जे एक घन्टा जे समय मोतीलालसँ गप-सप्प करैक बनौने छी तेतेक समय तँ मोतीलालक भेबे कएल, तँए ओतेक समय तक बाट देखले जा सकैए। मने-मन धियानचन काका विचारिये रहल छला कि ट्रेक्टरक आवाज कानमे पड़लैन जइसँ अपने मन कहलकैन जे मोतीलाल आबि रहल छैथ। जहिना गाममे डॉक्टर साहैबकेँ गाड़ी भेने सभ बच्चा बुझए लगैए जे डॉक्टर साहैबक गाड़ी आबि रहल अछि। तहिना चम्पापुरमे ट्रेक्टरक आवाज भेल। मोतीलाल पहिल पुरुख

गाममे भेला जे चारि चक्काक गाड़ी अनलैन। जखन गाममे दोसर गाड़ी नहि अछि तखन दोसर आवाज केना औत।

घरक आगूमे गाड़ी लगिते, मोतीलाल आठो मजूरकेँ मजूरी दैत, कौल्हुका काजक भाँज धड़बैत सभकेँ विदा करैत नमहर साँस छोड़लैन। पुन: अपन जेबीसँ दिन भरिक आमदनीक हिसाब जोड़ि मोतीलाल आगू बढ़ला। अपना ऐठाम रहितो मोतीलाल धियानचन काकाकेँ नहि टोकलकैन। अपना गाम-समाजमे अछिए जे दरबज्जाक आगू लगो-पासक लोकसँ टोक-टाक होइए मुदा बाजारीकरण[12] भेने बाजारमे से नहि अछि। एक मकानक बीच, अगल-बगल कोठरीबलामे सेहो टोक-टाक नहियेँ होइए। मोतीलाल बंगालक कलकत्तासँ, माने शहरसँ आएल छला तँए ओ प्रभाव रहबे करैन। माने विचारक दौड़मे मोतीलाल शहरी विचार सेहो नेने आएल छला। जे बात धियानचन काकाकेँ अपन मन कहि देलकैन। तँए विचारमे कोनो तरहक कुवाथ काकाकेँ नहियेँ रहलैन। बजला-

“मोतीलाल अहीं छी?”

मोतीलाल-

“हँ।”

अपन परिचय दैत धियानचन काका बाजल छला-

“हम कमलपुर रहै छी, धियानचन नाम छी।”

जहिना सरकारी कार्यालयमे पुछल जाइए जे की काज अछि, तहिना मोतीलाल सेहो कहने रहैन-

“की काज?”

ओना, मोतियोलालक आ धियानचन काकाकेँ सेहो अपन-

---

[12] *बाजारवाद*

अपन शिकार फँसले छेलैन तँए दुनूक मन एक-दोसरकेँ आकर्षित करैक दिशामे आगू बढ़िये रहल छेलैन। ओना, मोतीलालक मनमे बजरूआ विचार रहबे करैन जे जँ अपन कारोबारक चलती आनैक हुअए तँ जातिक एजेंसी सेहो बनिते अछि। मुदा मनमे ईहो उठलैन जे जैठाम ट्रेक्टरक काज अछि तहीठाम ने अपन काज चलत। आकि चम्पापुरमे दूटा गाड़ी अनलौं, गाममे ट्रेक्टरक कोनो काजे ने अछि आ आन गामक लोकसँ परिचये ने रहत तखन कारोबार केना बढ़त। तहूमे लोको तँ लोक छीहे, जेकरा गबदी मारैक अभ्यास अछिए। केतौ नीकक बेरमे गबदी मारि देत तँ केतौ अधला बेरमे। खाएर तइ सभसँ मोतीलालकेँ कोन मतलब छैन। पढ़ल-लिखल इंजीनियर छथिए, अपन गाड़ी छैन्हे जइसँ अपन कारोबार करता आ अपनो मशीनक ज्ञान रहने मिस्त्रिआइ सेहो करबे करता।

धियानचन काका मने-मन विचारैथ जे मोतीलालकेँ एने कमसँ कम एते गौरव तँ गामोक आ आनो गामक भेबे कएल जे इंजीनियर सन लोक इलाकामे एला। पढ़ल-लिखल लोकक एकटा विचार गोष्ठी बना सभ कियो एकठाम बैस समाज आ सामाजिक जीवनकेँ नजैरमे राखि जँ गप-सप्प करब तखन ने गाम-समाज आगू-मुहेँ देखत जे हमर भविस कोन-मुहेँ बढ़त जे ऐगलो पीढ़ी नीकसँ नीकतमक चोटीपर पहुँचए। ओना, जहिना पहाड़ होउ कि पठार, निच्चाँ-ऊपर होइमे ढलानसँ उठान धरि चलए पड़ैए तहिना ने जीवनोमे होइते अछि।

धियानचन काका बाजल छला- “कोनो खास काजे तँ नहि आएल छी। अहींक नाओं सुनलौं, देखैक जिज्ञासा मनमे भेल तँए एलौं हेन।”

मोतीलाल कहलकैन- “अपना तँ अखन दरबज्जो ने अछि जे बैसबोले कहब, तैसंग अखने काजसँ एलौं अछि, थाकल छीहे।

धड़फड़मे कहै छी- बच्चेसँ हम सभ दिन कलकत्तेमे रहि पढ़लौं-लिखलौं। इंजीनियरिंग केला पछाइत नोकरी तँ सरकार नहि दऽ सकल मुदा दूटा ट्रेक्टर बैंकसँ लोनक रूपमे देलक।"

'बच्चेसँ कलकत्तामे रहि पढ़लौं-लिखलौं' सुनि धियानचन कक्काक मनमे विचार उठलैन जे मोतीलालक परिवारक भाँज लगने बिना मोतीलालकेँ नीक जकाँ, माने सोल्होअना नहि जानल जा सकैए। फेर अपने मनमे ईहो होनि जे नवउमेरिया लोक मोतीलाल छैथ, परिवारक चर्च सुनि कहीं तौहीन बुझि क्रोधमे ने आबि कहि दैथ जे हमरा परिवारक हुलिया लइक कोन जरूरी अहाँकेँ अछि। फेर धियानचन काकाकेँ अपने मनमे उठलैन जे जँ कोनो तेहेन उटपटांग बात बाजब तखन ने मोतीलालकेँ क्रोध उठत। भेल तँ एतबे परहेज करैक अछि जे कर्कश आ मर्कश शब्दक प्रयोग नहि करब आ परिवारक जे भीतुरका मार्मिक गति-विधि अछि तेकरो चर्च नहि करब। जँ सामान्य शब्दसँ, माने सामान्य भाषामे परिवारक सामान्य विचार राखब तँ क्रोध किए औतैन। धियानचन काका बाजल छला-

"अपन जाइतिक केते परिवार गाममे माने चम्पापुरमे छी?"

मोतीलाल-

"ओना, गनिकऽ कहैमे कनी समय लागत मुदा अन्दाज बीस-पच्चीस परिवार गाममे हएब।"

धियानचन काका-

"बीसो-पच्चीस घर एके टोलमे छी?"

मोतीलाल-

"नहि, ऐठाम पनरह घर[13] छी बाँकी परिवार दोसरठाम

---

[13] *परिवार*

अछि।”

मोतीलालक सुढ़ियाएल विचार सुनि धियानचन काका पुछलखिन-

“गाममे जेते परिवार छी तैबीच सामाजिक विचार-बेवहार केहेन अछि?”

मोतीलाल गामक नव उमेरक लोक तँए ऐ प्रश्नकेँ नीक जकाँ नहि बुझि आकि की, कहने रहैन-

“मासे दिन गाम एला भेल हेन तँए गामक सभ बात बुझितो ने छी।”

मोतीलालक बात सुनि धियानचन कक्काक अपनो मन कबुल कऽ लेलकैन जे मोतीलाल ठीके कहै छैथ। ओना, मोतीलालकेँ काजसँ एलाक कारणे थकानो छैन्हे, जइसँ गप-सप्प करैक मन नहियेँ छेलैन मुदा धियानचनो कक्काक मन कहबे करैन जे जाबे पेटक गप-सप्प नहि हएत ताबे सम्बन्धक जड़ि केना रोपाएत। कोनो बेकती आकि परिवारक सम्बन्धक जड़ि तखने ने रोपाइए जखन विचारक संग बेवहारोमे एकरंगता रहैए। ओना, विचारो आ बेवहारोक अनेक रंग अछिए। जहिना नीक विचारो आ नीक बेवहारो गाम-समाजमे अखनो जीवित अछि तहिना अधलो तँ अछिए। जहिना नीकसँ नीकतर विचार आ नीक बेवहारसँ नीकतर बेवहार भेटलासँ मनमे खुशी होइए तहिना नीक-अधलाक भेँट भेने सुखो-दुखो तँ होइते अछि। ओना, सोलहअना नीक आकि सोलहअना अधला सेहो गाम-समाजमे नहियेँ अछि। तखन तँ भेल जे जइ परिवारमे नीकक औसत बेसी रहैए ओ नीक भेल आ जइमे अधलाक औसत बेसी रहैए ओ अधला भेल। ओना, विचारो आ बेवहारो क्रियागत छी, तँए विचारो आ किरियो जहिना नीक आरो

नीक बनैक चेष्टा करैत सचेष्ट बनैए तहिना नीक-अधलाक बीच सेहो अचेष्टो अछिए। अधलो नीक बनैए आ नीको अधला बनिते अछि।

धियानचन काका बजला-

“बच्चेसँ कलकत्तामे केना रहए लगलौं?”

धियानचन कक्काक विचार मोतीलालकेँ ओहिना नीक लगलैन जहिना प्रभावशाली विचारक प्रभाव केतौ होइत देखि मनुक्खकेँ होइए। मोतीलालक मन जेना गप-सप्पमे आगू बढ़ै दिस झुकलैन। बजला-

“ठाढ़े-ठाढ़, खड़े-खड़ा गप-सप्प करब नीक नहि। अहाँ एतै रहू, हम आँगनसँ बैसकी नेने अबै छी।”

मोतीलाल आँगन जा दूटा कुरसी, अखुनका जकाँ प्लास्टिकक नहि, लकड़ीबला, बेरा-बेरी आनि रस्ताक पजरा दबा लगौलैन। तैसंग पत्नीकेँ चाह बनबए सेहो अँगनेमे कहि देने छेलखिन। अपने अपन देहक वस्त्र माने काज करैबला वस्त्र, बदैल चापाकलपर मुँह-हाथ धोइ धियानचन काका लग आबि बैसैत बजला-

“पहिने चाह पीब लिअ, पछाइत गप-सप्प हेतइ।”

मोतीलालक बात सुनि धियानचन काका हँ, हूँ किछु ने बजला। बजबो केना करितैथ। अप्पन कि अपना परिवारक आकि अपना समाजकेँ अपने ने स्थापित करब। मोतीलाल चाह आनए आँगन गेला। धियानचन काका मने-मन मोतीलालक शरीरक बनावटपर नजैर देलैन। मध्यम कदक मोतीलाल। मनुक्खो तँ मनुक्खे ने छिआ। जे सभ अपन-अपन किछु-ने-किछु भिन्नता रखिते छैथ। शरीरोक हिसाबसँ नमगर-छड़गरक संग जहिना मध्यम श्रेणीक सेहो होइ छैथ, तहिना भुट्ट सेहो होइते छैथ, से जहिना कदमे तहिना विचारो आ बेवहारोमे होइते अछि...। धियानचन कक्काक मन मानि

गेलैन जे मोतीलाल गाम-समाजक विचार-बेवहारसँ अखन दूर छैथ, मुदा जखन गाम आबि अपन कारोबार शुरू केलैन तखन ऐठामक बेवहार माने गामक बेवहारमे रमए पड़तैन। जेते बेसी रमता तेते अपने शुभ हेतैन। तइ बीच मोतीलाल आँगनसँ चाह नेने पहुँच गेला। धियानचन काकाकेँ हाथमे चाहक कप धड़बैत मोतीलाल बाजल-

"अपना ऐठाम, माने अपना गामसँ बेसी लोक बंगालमे चाह पीबै छैथ।"

लगले हाथ धियानचन काका बजला-

"शहरक लोक भलेँ किए ने बैसल-बैसल चाहे पीबैत होथि मुदा ओहूठाम गाम-घरक लोक, जिनकर बन्हौटा जीवन खेत-पथारक छैन ओहो अपने सभ जकाँ ने पीबैत हेता।"

ओना, धियानचन कक्काक मनमे ईहो उठि गेलैन जे चाहक खेतियो आ कारोबारो जेते बंगालमे अछि तेते अपना ऐठाम, तेते कि सोल्होअना नहियेँक बरबैर अछि, मुदा से बजला नहि। किए तँ विचारमे खोंच-खरोंच गढ़ब मतभेदक कारण सेहो छीहे। ओना, विचारमे जेते खोंच-खरोंच पहेटैत चिक्कन बनबैत चली तेते नीक हेबे करैए। विचारक धारमे सोनहाएल सुनहरा रंग घोड़ैत धियानचन काका बजला-

"असल एक नम्बर चाह तँ बंगालेक लोक पीबै छैथ। किए तँ जेते चाह कम्पनी अछि सभ बंगालीसँ हटलेक अछि किने.!"

धियानचन कक्काक भावपूर्ण विचार वेचारा मोतीलाल नहि बुझि सकला, बुझियो केना सकितैथ, लोहाक इंजिन बनौनिहारकेँ मनुक्खक इंजिन बनबैमे किछु समय तँ लगबे करतैन। ई नहि कहै छी जे ओ नहि बनि सकै छैथ। मोतीलाल बजला-

"शुद्ध दार्जिलिंगक ग्रीन-टी छी, एहेन चाहक चलैन अपना

ऐठाम नहि अछि।"

मोतीलालक बात सुनिते धियानचन काका नहलापर दलहा फेकैत बजला-

"नीक अछि जे अपना ऐठाम नहि अछि। जँ रहैत तँ ग्रीन-टी पीबैत, गिलौड़ी खिल्ली पान, पान साए नम्बर जर्दा दऽ कऽ मुँहमे गलौठैत तोसकपर चद्देर ओछा दिन-राति लोक चाहे ताश नहि तँ शतरंजक गोटी भँजैत रहितैथ। एकर माने ई नहि बुझब जे दुनूक किरदानीक संग बीचमे पाइयो नहि नचैए।"

ओना, मोतीलाल ताश-शतरंजक बीच पाइक नाच सेहो बुझै छैथ मुदा तइसँ अपनाकेँ परहेज रखने छैथ। अपन इमानकेँ अगुअबैत मोतीलाल बजला-

"हँ से तँ होइते अछि। दुनियाँमे की-की ने होइए। तइ भाँजमे पड़ैक रहैत तँ बीस बर्ख स्कूल-कौलेजमे समय किए बितेबतौं।"

मोतीलालक विचार सुनि धियानचन कक्काक मन पनिया कऽ फड़िछाएल पानि जकाँ भऽ गेलैन। बजला-

"मोती भाय, जहिना सितुआक मुँहमे एक्केटा मोती होइए तहिना ने मनुक्खोकेँ अछि। दुनियाँ तेतेक नम्हरो आ बोनगरो-झोंझगरो अछि जे थाह पेबइ। अनेरे ओइमे वौआइले की करए जाएब। तइसँ नीक जे अपन दुनियाँ अपने गढ़ि जहिना सुनै छिऐ जे आत्मा-परमात्माक मिलन होइए तहिना दुनियाँक संग मिलि जाएब तखने ने दुनियाँमे बासो भऽ सकैए आ दुनियाँक बासियो भऽ सकै छी।"

एहनो तँ होइते अछि जे बिनु बुझलो विचार वा बिनु बुझलो काजक चर्च सुनि मुड़ी डोला अपन अनुभवक परिचय लोक दइते अछि। मोतीलालक मनक इच्छा रहैन जे एकसँ अनेकक संग मिलि

चललेसँ नीक जीवन प्राप्त होइए। तँए सम्बन्धमे माने दोसराक बीच जेते प्रगाढ़ता औत तेते ने दोसराक संग सक्कत सम्बन्ध बनत। यएह सोचि मोतीलाल मुड़ी डोलबैत बजला- “बहुत बढ़ियाँ विचार अहाँक अछि भाय साहैब।”

मोतीलालक विचारक रस्सा पकैड़ धियानचन काका बजला-

“ऐठाम, माने मिथिलाक गाममे तँ लोककेँ साधारण कौलेजोक, माने बी.ए; एम.ए.क शिक्षा सेहो ने भेट पेब रहल अछि, तैठाम अहाँ इंजीनियर बनि गेलौं ई तँ समाजक गौरव बढ़ाएब भेल.!”

धियानचन कक्काक बात सुनि मोतीलाल मोहित होइत बजला- “गाम-समाजक तँ अहीं सभ रखबार छी, जेना जे जरूरत होइत रहत ओ चलैत रहत।”

अपन अन्तरभेदी वाण छोड़ैत धियानचन काका बजला-

“कलकत्तामे रहि जे अहाँ एते नमहर डिग्री हाँसिल केलौं, तइले खर्चक पूर्ति केना भेल?”

मिथिलांचलक पहिलुका इतिहास मोतीलालकेँ नहि बुझल छेलैन तँए केना ढाका, बंगाल, असाम आकि मोरंगक चर्च करितैथ, एतबे चर्च केलैन-

“हमर पिताजी, जे साल भरि पहिने मुइला अछि, ताबे हम इंजीनियर भऽ चुकल छेलौं, बैंकसँ ट्रेक्टरक आदेश सेहो भेट चुकल छल। पिताजी ड्यूटी करि कऽ एला, जहिना जीवनभरि बंगालक धरतीपर रहि अपन परिवारो आ अपनो जीवन चलौलैन तहिना बंगालेक धरतीपर जीवनक अन्तिम क्रिया-कर्म सेहो भेलैन।”

मोतीलालक विह्वलताकेँ आँकि धियानचन काका बजला- “केते उमेरमे पिताजी मुइला?”

मोतीलाल बजला-

“उमेर कोनो तेहेन मरैबला नहियेँ भेल छेलैन मुदा गेनिहारकेँ कियो रोकनिहारो तँ नहियेँ अछि।”

धियानचन काका बजला-

“पिताजी करै की छला?”

मोतीलाल बजला-

“सरकारी अन्नक गोदाममे मटियाक काज करैत रहैथ, बच्चेमे हमरा कलकत्ता लऽ गेला।”

ओना, ‘सरकारी गोदामक मटियाक काज’ सुनि धियानचन काका आँकि लेलैन जे कमाइसँ बेसी आमदनी जरूर देखलैन। मुदा मनमे ईहो कामना जगलैन जे बच्चाकेँ नीक जकाँ, नीक जकाँक माने भेल अपना पैरपर ठाढ़ होइक लूरि जोकर, जरूर पढ़ौलैन।

धियानचन काका बजला-

“जीवन भरि ओही गोदाममे काज करैत रहला?”

महसूस करैत मोतीलाल बजला-

“हँ। छअ बजेमे गोदामसँ काज करि कऽ एला आ हाथ-पएर धोइ जलखै केलैन, पानि पीब जहाँ चाह पीबैक ओरियान करैत रहैथ कि बिच्चेमे टगि गेला, प्राण छुटि गेलैन। तइ समय हम बजार गेल रही, मरैबेर किछु ने हमहीं कहि सकलयैन आ ने वएह कहलैन।”

मोतीलालक विचारक प्रवाह देखि धियानचन काका बुझि गेला जे मोतीलालक मन अतीतनुमा भेल जा रहल अछि, तँए जँ एकरा रोकब नहि तँ अपन वर्तमाने हेरा जाएत। मोतीलालक पिताक बारेमे सभ बात अनसुन करैत धियानचन काका बजला-

“अहाँ कलकत्ता सन शहरमे पालल-पोसल गेलौं, चम्पापुर

सन गाम, जइ गाममे चलैक रस्तो-पेरा ने अछि, तैठाम बास केना भऽ सकैए।”

अपन जे परिवेश मोतीलालक रहल ओ वैचारिक दौड़मे आगूक रहल, बंगाली-बन्धुक आत्मनिर्भरता मनमे प्रवल छेलैन्हे, बजला-

“नोकरीक जीवन तँ गुलामियोक जीवनसँ बदत्तर होइए, जखन स्वतंत्र जीवन जीबैक बाट भेट गेल तखन तँ गाम की आ शहर की, केतौ बसि सकै छी।”

गप-सप्पकेँ अध्यायक अन्तिम विचार मानि धियानचन काका बजला-

“कमलोपुरकेँ जनिते छिऐ, जखन टहलै-बुलैक मन हुअए आबि जाएब। पएरे-पएर टहलियो-बुलि लेब आ बीचमे किछु जीवनोक गप-सप्प होइत रहत।”

पाँच सालक पछाइत गाम जेना मोतीलालकेँ धाइर गेलैन तहिना कमाइक आमदनी सेहो हुअ लगलैन। चम्पापुर गाममे तीनठाम धराड़ी कहि सड़कक कातमे जमीन कीनलैन, स्थायी घर बनौनाइ छोड़ि तत्काल अँटावेश करै-जोकर घर सेहो बना लेलैन। गामसँ हटि तीन कोसपर, माने करीब दस किलोमीटरपर, बाजारमे सेहो दू कट्ठा जमीन कीनि एकटा खढ़क घर बना लेलैन। अपन डेरा-डन्टा ओतइ रखए लगला।

किछु दिनक पछाइत करीब पाँच बजे बेरुका समयमे धियानचन काका भेँट करए मोतीलाल ऐठाम गेला। बाजारक काजे गेल छला, मोतीलालसँ भेँट भेना बहुत दिन भऽ गेल छेलैन। एकटा अनठिया आदमीक संग मोतीलाल जमीनेक गप-सप्प करै छला। लगमे दोसर आदमीकेँ बैसल देखि धियानचन काका बजला- “जँ

जरूरी काजमे होइ तखन हम चलि जाएब, नहि जँ ओहिना गप-सप्पमे होइ तँ रूकब।”

तैपर मोतीलाल कहने रहैन-

“हँ अखन जरूरी काजमे छी।”

पाँच सालक पछाइत ट्रेक्टरो पुरान होइत गेल जइमे मरम्मैतिक काज मोतीलालकेँ दिनानुदिन बढ़ए लगलैन। तैसंग पाँच साल पहिने जकाँ कमाइमे कमी सेहो भइये गेलैन। दस सालक पछाइत, तइ बीच ने एकोठाम माने चारू जगहमे, मजगूत घर मोतीलाल बना सकला आ ने अपन इंजीनियरिंग शिक्षाक उपयोग कऽ सकला, धियानचन काकाकेँ रस्ते-रस्ते मोतीलालसँ भेँट भेलैन। दस सालक पछाइत बदलैत जीवनक थोड़-थाड़ अनुभव मोतीलालकेँ हुअ लगल छेलैन। पाँचटा बेटी सेहो परिवारमे आबि चुकल छेलैन। तेकर सेवा-टहलक संग पढ़ाइ-लिखाइक खर्च बढ़िये चुकल छेलैन। जइसँ आमदनी आ खर्चमे माइनस-प्लस हुअ लगलैन। धियानचन काकापर नजैर पड़िते मोतीलाल बजला-

“धियानचन भाय, तेहेन जंजालमे फँसि गेल छी जे एको क्षण छुट्टी नहि होइए जे हितो-अपेछित ऐठाम जा गप-सप्प करब।”

मोतीलालक परेशानीसँ धियानचन काका आँकि लेलैन जे मोतीलाल ढलानपर सँ ढलैक रहला अछि। मुदा अपनाकेँ संयमित करैत धियानचन काका बजला-

“यएह ने भेल जीवन जे दुनियाँकेँ बिसैर दुनियाँमे रमि जाइ।”

पनरह सालक पछाइत मोतीलाल अपन अर्जल तीनू ठामक जमीन बेचि तीनटा बेटीक बिआह तँ पार लगा लेलैन। मुदा शेष दूटा बेटी आ सभसँ छोट माने छठम सन्तान तीन सालक बेटा छैन। संयोग बनल, धियानचन काका बाजार गेल रहैथ, मोतीलाल सेहो

बाजारेमे रहैथ, धियानचन काकापर नजैर पड़िते मोतीलाल मुँह घुमा दोसर दिस देखए लगला। मुँह मोड़ैत मोतीलालकेँ देखि धियानचन काका सेहो चुपे-चाप आगू बढ़ि गेला।

❑

शब्द संख्या : 3657, तिथि : 14 जनवरी 2021

Notes